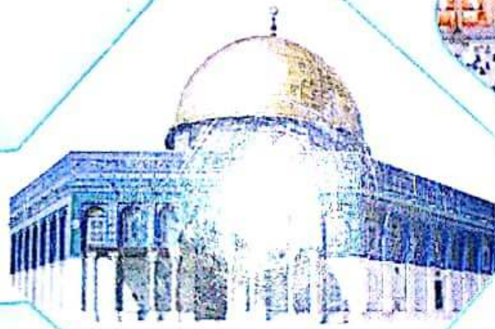
सच्ची हिकायात

हज़रत मौलाना अबुन्नूर मौहम्मद बशीर साहब









अदबी दुनिया

इल्तिज़ा है कि इस किताब को अपनी मोबाईल की मैमोरी में सेव करके ना रखे वल्कि आप से गुजारिश है कि इस किताब का मुताला कीजिये ये किताब बहुत शानदार है।

दुआ की गुजारिश
डॉ ज़ाहूर रज़वी
अल अश्हर अकडमी

दुआ की ग़ुज़ारिश
मोहम्मद अहतिराम क़ुरैशी

आप हज़रात से गुजारिश है कि इस किताब को आप अपना निम्ती वक़्त दे और इस किताब का मुताला करे और हम ना चीज़ को अपनी अपनी दुआओं में याद रखे

Scanned by CamScanner

नाम किताब	:	सच्ची हिकायात मुकम्मल
तालीफ़	:	मौलाना अबु अलनूर बशीर
सन इशाअत	:	2013
सफ़हात	:	936
मतबअ	:	नाहिद प्रेस, देहली
हदिया	:	
नाशिर	:	अदबी दुनिया, देहली

इस किताब में

कुतब अहादीस और दीगर मुसतनिद इस्लामी किताबों से दिलचस्प, मुफ़ीद और सबक़ आमोज़ हिकायात जमा कर दी गई हैं और हर हिकायत के बाद इससे जो सबक़ हासिल होता हैए लिख दिया गया है और हर हिकायत को असल किताब से देखकर दर्ज किया गया है और किताब का नाम, सफ़हा और जिल्द सब कुछ दिया गया है।

Publisher

ADABI DUNIYA

399, Matia mahal, jama masjid,
Delhi - 110006
Phone : 23250122

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिलकरीम

पहली नज़र

इस ज़माने में अफ़्साने, ड्रामे, किस्से और कहानियाँ बड़े शौक़ से पढ़ी जाती हैं और ये शौक़ बिलअमूम हर छोटे बड़े मर्द और औरत में पाया जाता है, आज कल हर वो तहरीर जिसमें अफ़्सानवी तर्ज़ और हिकायती रंग मौजूद हो, पसंदीदगी की नज़र से देखी जाती है, क़ौम का यही रूहजान तबअे इस अम्र का बाइस है के मुल्क के अक्सर रसायल व जरायद अपने अपने "कहानी नम्बर" और "अफ़्साना नम्बर" शाय करते हैं और अफ़्साना पसंद अफ़राद इन्हें हाथों हाथ लेते हैं।

ये अफ़्साने, ड्रामे और आज कल की हिकायात व कहानियाँ ज़्यादा तर दरोग़ व कज़िब और ग़ैर वाक़ेई बिना पर मुबनी होती हैं, उनकी कोई हक़ीक़त और असल नहीं होती और ऐसे अफ़्साना लिखने वाले उन वज़अई हिकायात को "तबै ज़ाद" और अपनी तख़लीक़ क़रार देकर अपने वज़अे व कज़िब को अपना एक शाहकार साबित करते हैं और अफ़्साना पसंद तबीअतें उन्हें उस कारनामे पर दादे तहसीन देती हैं और उसे तरक़्क़ी पसंद अदब के नाम से मोसूम करने लगती हैं।

क़िस्से और हिकायात ज़रूरी नहीं के झूट ही हों, इस आलम में क़िस्सों और सच्ची हिकायात का वजूद भी है, खुद क़ुरआने पाक और अहादीसे शरीफ़ा में भी हिकायात व क़सस मौजूद हैं और वो हिकायात व क़सस ऐसे हैं जिनमें सौ फ़ीसदी सदाक़त है और जो अपनी सदाक़त के बाइस मख़्लूक़ के लिए मौजिबे रूश्दो हिदायत और वजह दर्से इब्रत हैं। खुदा तआला ने अपनी सच्ची किताब मजीद में अम्बियाइक्राम अलेहिमअस्सलाम के ईमान अफ़्रोज़ क़िस्से और उमम साबिक़ा की सबक़ आमोज़ हिकायात बयान फ़रमाई हैं और रसूले खुदा सल-लल्लाहो-तआला-अलेह व सल्लम ने भी अपने इर्शादाते आलिया में पहली उम्मतों के इब्रत आमोज़ वाक़ेयात और सबक़ आमोज़ हिकायात सुनाई हैं और इसी तरह बुज़ुर्गाने दीन के इर्शादात और उनकी तालीफ़ात में भी इस क़िस्म की सच्ची हिकायत का वजूद पाया जाता है मगर मुश्किल ये है के ये सब पुरानी बातें हैं और इस नए दौर में उन परानी बातों की तरफ़ तवज्जह नहीं की जाती ऐ काश! मुसलमान आज

कल के लायानी अफ्सानों और वज़अई और झूटी हिकायात की बजाए अपने हक़ीक़ी अफ्सानों और सच्ची हिकायात को पढ़ते पढ़ाते तो दिलचस्पी के अलावा उन्हें दीनी और दुनयवी फ़वायद भी हासिल होते।

मुद्दत से मेर दिल में ये ख़याल था के कुरआन व हदीस और दीगर इस्लामी लिटरेचर से हक़ीक़ी क़िस्सों और सच्ची हिकायात को जमा करूं और उन्हें सादा और आम फ़हेमो तर्ज़ में क़लमबंद कर के मुसलमानों के लिए एक ऐसी किताब लिखूं जिसका मुतअल्ला उनके लिए दिलचस्पी भी पैदा करे और साथ साथ ही उनके लिए सबक़ व इब्रत पेश करके उनके दीन व दुनिया की इसलाह भी करे चुनाँचे इसी अपने इरादे के तहेत मैंने सच्ची हिकायात को जमा करना शुरू कर दिया और कुरआन व हदीस के अलावा और बहुत सी इस्लामी कुतुब का मुतअल्ला करने के बाद इस सबक़ आमोज़ सिसिले की इब्तिदा कर दी।

मेरे ज़हेन में ये सिलसिला बड़ा तवील है और इरादा है के मुबारक सिलसिला को दूर तक ले जाऊँ, मैंने इस तालीफ़ के लिए जो बाब तजवीज़ किए हैं वो हस्बे ज़ेल हैं:-

पहला बाब	तौहीदे बारी
दूसरा बाब	सय्यद-उल-अम्बिया हुज़ूर अहमद मुजतबा मोहम्मद मुसतफ़ा सल-लल्लाहो-अलेह व सल्लम
तीसरा बाब	अम्बियाऐक्राम अलेहिम-उल-सलाम
चौथा बाब	खुलफ़ाए राशिदीन रिज़वान-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन
पाँचवा बाब	सहाबाइक्राम रिज़वान-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन
छटा बाब	अहले बैत अेज़ाम रिज़वान-उल्लाह तआला अलेहिम अजमईन
सातवाँ बाब	आयम्माइक्राम रहमत-उल्लाही अलेहिम अजमईन
आठवाँ बाब	औलियाइक्राम रहमत-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन
नवाँ बाब	सलातीने इस्लाम
दसवाँ बाब	मुख्तलिफ़ हिकायात

चूँके ये सिलसिला बहुत तवील है इसलिए इस किताब को तीन हिस्सों पर तक़सीम कर दिया है इसका ये पहला हिस्सा जो आपके हाथ में है पहले चार अबवाब पर मुशतमिल है, इसमें पहला, दूसरा, तीसरा, और चौथा बाब है और बाक़ी दूसरे अबवाब इंशाअल्लाह दूसरे हिस्सों में आएँगे इस किताब के पहले बाब में ऐसी हिकायात का इन्तिख़ाब है जिनका ताल्लुक़ "तौहीदे बारी" से है और दूस. बाब में उन रिवायात व हिकायात का ज़िक्र है जिनका ताल्लुक़ हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ज़ातेग्रामी से है, उन सच्ची हिकायात व रिवायात से हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के मरातिब व मदारिज, आपके इख़्तियारात व कमालात और आपके उलूम का पता चलता है और ये बात साबित होती है के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम मालिक व मुख़्तार हैं और दानाऐ ग़यूब हैं और हर गिज़ हर गिज़ हमारी मिस्ल नहीं हैं, तीसरे बाब में अम्बियाऐक्राम अलेहिम-उल सलाम के मुतअल्लिक़ हिकायात दर्ज हैं जिनसे पता चलता है के अम्बियाऐक्राम की बहुत बड़ी शानें हैं और अल्लाह तआला ने उन्हें बड़े बड़े इख़्तियारात अता फ़रमाए हैं, चौथे बाब में ख़ुल्फ़ाऐ राशिदीन यानी हज़रत सिद्दिके अक्बर, हज़रते उमर फ़ारूक़ आज़म हज़रत उस्मान ज़ुलनोरैन और हज़रते मौला अली रिज़वानउल्लाही अलेहिम अजमईन के मुतअल्लिक़ हिकायात दर्ज हैं जिनसे इन चार याराने नबी के मरातिब व मदारिज ज़ाहिर होते हैं और पता चलता है के ये चारों ही अल्लाह के महबूब के महबूब हैं और उनकी मोहब्बत ऐन ईमान है और उनकी अदावत से ईमान जाता रहता है। इस हिस्से में ये चारों बाब हैं बाक़ी के छः अबवाब दूसरे और तीसरे हिस्से में हैं।

ज़रूरत है के आज वो मुसलमान जो क़िस्सों के शौक़ीन हैं वो झूटी हिकायात को छोड़ कर उन सच्ची हिकायात को पढ़ें ताके उन के लिए दीनी तरक़्क़ी का सबब हो और वो मुसलमान औरतें जो रातों में बच्चों को झूटी कहानियाँ सुनाया करती हैं इन सच्ची हिकायात को पढ़ें, याद करें और अपने बच्चों को ये सच्ची हिकायात सुनाएँ ताके बच्चों के दिल में भी दीन की रग़बत पैदा हो।

(अबु अलनूर मोहम्मद बशीर)

Scanned by CamScanner

अदब-उल-अरब

पाँचवाँ हिस्सा
ग्यारहवाँ बाब

Scanned by CamScanner

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिलकरीम

लकद काना फी क़सासीहिम इबरातुन लिऔलियल अलबाब

(बेशक उनके क़िस्सों में इबरत है समझदारों के लिए-पारा: 13, रूकू: 6)

मुसतनिद और सबक़ आमोज़

सच्ची हिकायात मुकम्मल

हिस्सा पाँचवाँ

पहली नज़र

"सच्ची हिकायत" के चारों हिस्सों को जो क़बूलियत ताम्मा हासिल हुई है। मज़हबी जमूद के इस दौर में इसकी मिसल नहीं मिलती। इस्लामी लिटरेचर से दिलचस्प और मुफीद हिकायात का इन्तिख़ाब इनकी तरतीब ला जवाब और फिर हर हिकायत के बाद उससे जो सबक़ हासिल होता है। उसका मौस्सर अंदाज़ में बयान एक ऐसी जिद्दत है जो हर पढ़ने वाले के लिए दिलकश साबित हुई। और जिसके बाइस हर खुर्दो कलाँ मर्द वं औरत और अपना व बैगाना इसका शैदाई व तालिब बन गया। मेरी ये कोशिश इस लिहाज़ से भी कामयाब है के हिकायत सुनाते हुए मैं मसलक अहले सुन्नत की हक़्क़ानियत को भी साबित करता चला गया हूँ। और ऐसे मौस्सर व ग़ैर दिल शिकन अंदाज़ में के साहबे अक़्ल सलीम को बजुज़ तसलीम के चारा नहीं।

चार हिस्से पढ़ लेने वालों का पैहम इसरार था के इस मुफीद सिलसिले को और आगे बढ़ाया जाए। और इसका पाँचवा हिस्सा भी लिखा जाए। अदीम-उल-फुर्सती के बाइस ये पाँचवा हिस्सा जल्द मुरत्तब ना हो सका।

अलहम्दूलिल्लाह

के आज मैं इस पाँचवें हिस्से को भी शाय करके हाज़िरे ख़िदमत कर रहा हूँ।

गर क़बूल अफ़्तज़र है इज़्ज़ोशराफ

अबु अलनूर मोहम्मद बशीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिलकरीम

सच्ची हिकायत के तीसरे और चौथे हिस्से में इस ईमान अफरोज़ सिलसिले का दसवाँ बाब गुज़र चुका है। अब हम अल्लाह का नाम लेकर इसका

ग्यारहवाँ बाब

शुरू करते हैं। मुख़्तलिफ हिकायत का सिलसिला चूंके बड़ा तवील है इसलिए इस बाब में भी मुख़्तलिफ हिकायात दर्ज हैं।

हिकायत नम्बर(786) तशरीफ़ आवरी

हुज़ूर(स०अ०स०) की जब विलादत शरीफा हुई उस वक़्त हुज़ूर के दादा जान हज़रत अब्दुल मुत्तलिब(र०अ०) कअबा शरीफ की दीवार की तामीर में मशग़ूल थे। अब्दुल मुत्तलिब फ़रमाते हैं के मैं कअबा शरीफ का तवाफ कर रहा था। के अचानक कअबा शरीफ चारों तरफ़ झुकता नज़र आया और फिर मुक़ामे इब्राहीम में सज्दे में गिर गया और उसमें से तक्बीर व तहलील की आवाज़ आने लगी। फिर वो सीधा खड़ा हो गया और उससे आवाज़ आई।

अलहम्दू लिल्लाहिल्लज़ी खस्सनी बिमोहम्मदा निलमुसतफा "सब तारीफ उस अल्लाह के लिए है जिस ने मुझे मोहम्मद मुसतफा(सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम) के साथ मख़सूस फ़रमाया।"

और फिर अरकाने कअबा आपस में एक दूसरे पर सलाम भेजने लगे। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब फ़रमाते हैं के मैं बाब सफा से बाहर निकला तो ज़मीन की हर चीज़ मुझे तक्बीरो तहलील में मशग़ूल नज़र आई और मैं उनकी आवाज़ सुन रहा था। फिर ये आवाज़ सुनी के *क़द जाआकुम रसूलुल्लाही सल-लल्लाहो अलेही व सल्लम*

यानी तुम्हारे पास रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम तशरीफ़ ले आए फिर मैंने बुतों को देखा। तो वो औंधे मुंह गिरे हुए नज़र आए मैं अपनी आँखें मलने लगा। के ये जो कछ मैं देख रहा हूँ। आलमे

बैदारी में या अलमे ग़ैब में देख रहा हूँ। फिर मैं जब घर पहुँचा तो घर के इर्दगिर्द अजीबो ग़रीब नूरानी परिंदे उड़ते देखे और घर से मुश्क व अंबर के हले उठते नज़र आए। मैंने दरवाज़ा खटखटाया तो आमना(रज़ी अल्लाहो अन्हा) खुद निकलीं और दरवाज़ा खोला। मैंने देखा के आमना के चहरे पर कोई ज़ौफ वग़ैरा का असर नहीं था। हाँ उसकी पैशानी पर जो नूर चमकता नज़र आया करता था वो नज़र ना आया। मैंने पूछा। आमना! पैशानी का वो नूर कहाँ है? तो बोलीं मेरे हाँ एक बच्चा पैदा हुआ है। जिसकी विलादत के बाद हातिफ से मुझे आवाज़ सुनाई दी है के उसका नाम मोहम्मद रखना। (सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम) इसलिए के :-

इसमुहू फिस्समाई महमूदुन व फित्तोराती मुवेदुन व फिज़्ज़बूरिल हादीयू व फिलइंजीली अहमदू व फिलक़ुरआनी ताहा व यासीन व मोहम्मदुन।

उसका आसमानों पर नाम मेहमूद है, और तौरात में "मवैद"। ज़बूर में "हादी"। इंजील में "अहमद"। और क़ुरआन में "ताहा, यासीन" और "मोहम्मद" है।

हज़रत अब्दुल मुत्तलिब फ़रमाते हैं के मैंने आमना से कहा। चलो मुझे मेरा प्यारा बच्चा दिखाओ। चुनाँचे जब मैं आगे बढ़ा तो एक अज़ीम शख़्स तलवार खींचे रास्ते में खड़ा नज़र आया। जिसने आगे बढ़ने से रोका। अब्दुल मुत्तलिब डर गए। और पूछा के तुम कौन हो। और क्यों रोकते हो। वो बोला। इस मौलूद की जब तक सारे फरिश्ते ज़ियारत ना कर लेंगे। किसी को आगे जाने की इजाज़त नहीं। मैं इसी काम के लिए यहाँ मामूर हूँ। (जामअे अलमौजज़ात, मतबूआ मिस्र, सफ़ा 76)

हमारे हुज़ूर (सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम) कअबे का भी कअबा हैं। और कअबा शरीफ की सारी इज़्ज़तें हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ही के सदक़े में हैं, और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की तशरीफ़ आवरी की खुशी सारी कायनात ने मनाई। किसी ने तक्बीर व तहलील के नारे बुलंद करके और किसी ने (बुतों ने) औंधे मुंह गिर कर और मुंह छुपाकर। और ये भी मालूम हुआ के बच्चा पैदा होने पर उसका नाम उसके माँ बाप रखते हैं। या बहन भाई और दीगर अक़्रबा मगर हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का नाम खुद खुदा तआला ने रखा है।

हिकायत नम्बर(787) रज़ाअत शरीफा

हज़रत हलीमा सादिया रज़ी अल्लाहो अन्हा फ़रमाती हैं के मैं जब मक्का मोअज़्ज़मा में पहुँची और हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के घर आई तो मैंने देखा के जिस कमरे में हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम तशरीफ़ फ़रमा थे वो कमरा सारा चमक रहा है। मैंने हज़रत आमना से पूछा क्या इस कमरे में बहुत से चिराग़ जला रखे हैं। आमना ने जवाब दिया। नहीं! बल्के ये सारी रोशनी मेरे प्यारे बच्चे के चेहरे की है। हलीमा फ़रमाती हैं। मैं अन्दर गई तो हुज़ूर को देखा के आप सीधे लेटे हुए सो रहे हैं। और अपनी मुबारक नन्ही उंगलियाँ चूस रहे हैं। मैं आपका हुस्नो जमाल देखकर फ़रीफ़्ता हो गई और हुज़ूर की मोहब्बत मेरे बाल बाल में रच गई। फिर मैं हुज़ूर के सर अनवर के पास बैठ गई। और हुज़ूर को उठा कर अपने सीने से लगाने के लिए हाथ बढ़ाया तो हुज़ूर ने अपनी चश्माने मुबारक खोलीं और मुझे देखकर मुस्कुराने लगे। अल्लाहू अक्बर! मैंने देखा के इस नूर भरे मुंह से एक ऐसा नूर निकला जो आसमान तक पहुँच गया। फिर मैंने हुज़ूर को उठा कर अपना दायाँ दूध आपके मुंह मुबारक में डाला तो आप नोश फ़रमाने लगे। बायाँ दूध मुंह मुबारक में डालना चाहा तो रूख पाक फैर लिया। और दूध ना पिया। क्योंके मेरा अपना एक बच्चा था। हुज़ूर ने इंसाफ फ़रमा कर दूध का ये हिस्सा अपने दूध शरीक के लिए रहने दिया। मैं फिर हुज़ूर को लेकर वापस चलने लगी तो हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने ज़ादे राह के लिए कुछ देना चाहा। तो मैंने कहा के मोहम्मद(सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम) को पा लेने के बाद अब मुझे किसी चीज़ की हाजत नहीं। हलीमा फ़रमाती हैं के जब मैं इस नअेमत अज़मा को गोद में लेकर बाहर निकली तो मुझे हर चीज़ से मुबारक बाद की आवाज़ आने लगी। के ऐ हलीमा रज़ाअत मोहम्मद (सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम) की तुझे मुबारब हो।

फिर मैं जब अपनी सवारी पर बैठी तो मेरी कमज़ोर सवारी में वो बिजली जैसी ताक़त पैदा हो गई के वो बड़ी बड़ी तवाना ऊँटनियों को पीछे छोड़ने लगी। सब हैरान रह गए के हलीमा की सवारी में यक दम ये ताक़त कैसे आ गई? तो मेरी सवारी खुद बोली:

अला ज़हरी सय्यद-उल-अव्वलीन वल आख़िरीना मेरी पुश्त पर अव्वलीन व आख़रीन के सरदार सवार हैं। इन्हीं की बर्कत से मेरी कमज़ोरी जाती रही और मेरा हाल अच्छा हो गया। (जामअे अलमोजज़ात, सफ़ा 86)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम नूर मुनव्वअे नूर और नूर अला नूर हैं। बातिनी भी और ज़ाहिरी भी। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम को बचपन शरीफ में भी ये इल्म था। के हलीमा मेरी दूध पिलाने वाली है। और मेरे दूध में दूसरा बच्चा भी शरीक है। फिर अगर कोई शख़्स हुज़ूर सल-लल्लहो अलेह व सल्लम के इल्म में कलाम करने लगे तो वो किस क़द्र जाहिल है। और ये भी मालूम हुआ के जिस उम्मत को ऐसा अज़ीम-उश-शान रसूल (सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम) मिला हो वो उम्मत बड़ी खुश क़िस्मत है। और ये भी मालूम हुआ के हम गुनहगार सही। मगर हुज़ूर की बदौलत जन्नत में जाते हुए हम तमाम उम्मतों से आगे होंगे।

हिकायत नम्बर(788) दीन व दुनिया

एक रोज़ हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के पास एक शख़्स आया। और अर्ज़ करने लगा। या रसूल अल्लाह! मैं दीन व दुनिया की बेहतरी के लिए आप से पूछना चाहता हूँ। हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फ़रमाया। पूछ लो जो पूछना है। उसने अर्ज़ किया। या रसूल अल्लाह!

मैं चाहता हूँ के मैं सबसे ज़्यादा जानने वाला हो जाऊँ। हुज़ूर ने फ़रमाया। अल्लाह से डरते रहो। सबसे ज़्यादा जानने वाले हो जाओगे।

उसने अर्ज़ की। हुज़ूर! मैं चाहता हूँ के मैं सबसे ज़्यादा ग़नी हो जाऊँ। फ़रमाया। क़नाअत इख़्तियार कर लो। सबसे ज़्यादा ग़नी हो जाओगे।

अर्ज़ की। मैं चाहता हूँ के मैं अच्छा बन जाऊँ। फ़रमाया। लोगों से अच्छाई करो। अच्छे बन जाओगे।

अर्ज़ की। मैं चाहता हूँ के मैं इंसाफ करने वाला बन जाऊँ। फ़रमाया। जो अपने लिए पसंद करते हो। दूसरों के लिए भी वही। पसंद करो। इंसाफ करने वाले बन जाओगे।

अर्ज़ की। मैं चाहता हूँ के मैं अल्लाह का ख़ास बन्दा हो जाऊँ। फ़रमाया अल्लाह की याद कसरत के साथ किया करो। उसके ख़ास बन्दे बन जाओगे।

अर्ज़ की। मैं चाहता हूँ के मेरा ईमान कामिल हो जाए। फ़रमाया। अपने अखलाक़ अच्छे कर लो। ईमान कामिल हो जाएगा।

अर्ज़ की। मैं चाहता हूँ के मैं अल्लाह के ताबैदारों में से हो जाऊँ। फ़रमाया। अल्लाह के फ़रायज़ अदा करते रहो। उसके ताबैदार बन जाओगे।

अर्ज़ की। मैं चाहता हूँ के क़यामत को मैं नूर में उठूँ। फ़रमाया। किसी

पर ज़ुल्म ना करो। क़यामत को नूर ही में उठोगे।

अर्ज़ की। मैं चाहता हूँ के अल्लाह मुझ पर रहम फ़रमाए। फ़रमाया। खुद अपनी जान पर और अलाह की मख़लूक़ पर रहम करो। अल्लाह तुम पर रहम फ़रमाएगा।

अर्ज़ की। मैं चाहता हूँ, मेरे गुनाह कम हो जाएँ। फ़रमाया। कसरत के साथ असतग़फार किया करो। गुनाह कम हो जाऐंगे।

अर्ज़ की। मैं चाहता हूँ के मेरे रिज़्क़ में वुसअत पैदा हो। फ़रमाया। हमेशा तहारत पर रहो। रिज़्क़ में वुसअत पैदा हो जाएगी।

अर्ज़ की मैं चाहता हूँ के अल्लाह और उसके रसूल के दोस्तों में से हो जाऊँ। फ़रमाया। जिससे अल्लाह और उसके रसूल को मोहब्बत है। उससे मोहब्बत रखो। और जिससे अल्लाह और उसके रसूल को दुश्मनी है। उससे दुश्मनी रखो। अल्लाह और उसके रसूल के दोस्तों में से हो जाओगे।

अर्ज़ की। मैं चाहता हूँ के अल्लाह के ग़ज़ब से बच जाऊँ। फ़रमाया। तुम किसी पर ग़ज़ब ना करो। अल्लाह के ग़ज़ब से बच जाओगे।

अर्ज़ की। मैं चाहता हूँ के अल्लाह मेरे अयूब को ढाँप दे। फ़रमाया। तुम अल्लाह की मख़लूक़ के अयूब ढाँपो। खुदा तुम्हारे अयूब ढाँप देगा।

अर्ज़ की। मेरे गुनाहों को धो देने वाली कौन सी चीज़ है। फ़रमाया। आँसू और खुज़ू और बीमारियाँ। अर्ज़ की। कौन सी नेकी अल्लाह को बड़ी पसंद है। फ़रमाया। अच्छा ख़ल्क़ और तवाज़ौ और मुसीबत के वक़्त सब्र और अल्लाह की मर्ज़ी पर राज़ी रहना। अर्ज़ की। और कौन सी बुराई अल्लाह को ना पसंद है। फ़रमाया। बुरा ख़ल्क़।

अर्ज़ की। अल्लाह के ग़ज़ब की आग को बुझाने वाली क्या चीज़ है। फ़रमाया। सदक़ा व खैरात और सिला रहमी।

अर्ज़ की। जहन्नुम की आग को बुझाने वाली क्या चीज़ है। फ़रमाया। रोज़ा (कुंज़ुल आमाल, जिल्द 6, सफ़ा 294। बरहाशिया मसनद अहमद)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम दीन व दुनिया की बेहतरी के लिए तशरीफ़ लाए हैं। और आप की तालीम दीन व दुनिया के हुस्न व खूबी की जामअे है। खुश नसीब हैं वो लोग जो हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की जामअे तालीम पर अमल पैरा होकर अपना दीन और अपनी दुनिया भी बना लेते हैं। और जो लोग हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के इर्शादात पर अमल पैरा नहीं हैं। वो *ख़सर-उद्दुनिया वलआख़िरत* के मिसदाक़ हैं। और उनके दोनों जहाँ ही खराब हैं।

हिकायत नम्बर (789) दाफ़अे-उल-बला

इब्ने तलक़ यमामी कहते हैं के हम एक वफ़्द की शक्ल में हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। तो हुज़ूर को देखा के आप अपने सर अनवर को धो रहे हैं। हुज़ूर ने मुझे देखकर फ़रमाया बैठ जाओ और तुम भी सर धो लो। इब्ने तलक़ फ़रमाते हैं के हुज़ूर के इर्शाद के मुताबिक़ मैंने आपके बचे हुए पानी से अपना सर धोया। और फिर हुज़ूर पर ईमान ले आया। और मुसलमान हो गया। मैंने फिर हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम से अर्ज़ की। या रसूल अल्लाह! मुझे अपनी क़मीस मुबारक का कोई टुकड़ा इनायत फ़रमा दीजिए। चुनाँचे हुज़ूर ने मुझे अपनी क़मीस मुबारक का एक टुकड़ा अता फ़रमा दिया। वो टुकड़ा इब्ने तलक़ यमामी रज़ी अल्लाहो अन्ह के पास रहा। जब भी कोई बीमार पड़ता तो वो इस टुकड़े के वसीले से शिफ़ा हासिल करने के लिए उसे पानी में डाल कर वो पानी उस बीमार को पिला देते। (हुज्जत-उल्लाह अलल आलमीन, सफ़ा 426)

सबक़:- मालूम हुआ के सहाबा इक्राम अलेहिम अर्रिज़वान को हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम से बड़ी मोहब्बत थी और वो हर उस चीज़ को जिस हुज़ूर की तरफ़ निसबत होती। दिलो जान से चाहते थे। और हुज़ूर पर नूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के जिस्म नूर से लग जाने वाले मुबारक कपड़े को भी वो दाफ़े-उल-बला जानते थे। फिर जो लोग खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम को ही दाफ़े-उल-बला मानना शिर्क बताते हों।

ग़ौर कर लीजिए के वो लोग सहाबा इक्राम के मसलक से किस क़द्र दूर हैं।

हिकायत नम्बर (790) अस्सलाम अलेक या रसूल अल्लाह

हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह फ़रमाते हैं के मैं एक मर्तबा हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के साथ मक्का मोअज़्ज़मा के मुज़ाफात में गया। तो मैंने देखा के रास्ते में हर दरख़्त पर ढैला व पत्थर और हर पहाड़ हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम को मुखातिब करके यूं अर्ज़ करता अस्सलाम अलेक या रसूल अल्लाह और उनकी ये आवाज़ मैं भी सुनता था। (हुज्जत-उल्लाह अलल आलमीन, सफ़ा 440)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की रिसालत को कायनात का हर ज़र्रा जानता है। और हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के "रसूल अल्लाह" होने का दरख़्तों और पत्थरों को भी इल्म

है। फिर जो लोग हुज़ूर की रिसालत पर ईमान ना लाए। वो पत्थरों से भी गए गुज़रे हुए या नहीं। और ये भी मालूम हुआ के अस्सलाम अलेक या रसूल अल्लाह का विर्द तो दरख़्तों पत्थरों और पहाड़ों की ज़बानों पर भी है। फिर जो लोग इस दुरूदे पाक के पढ़ने से रोकते हैं। उनसे तो नबातात व जमादात ही अच्छे रहे। और ये भी मालूम हुआ के जिस तरह पत्थर और दरख़्त ना बोलने वाली चीज़ें हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के लिए बोल उठें। और ये हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का मौजज़ा है। इसी तरह जो आवाज़ बहुत दूर से ना सुनी जा सकती हो। उस आवाज़ को दूर से सुन लेना ये भी हुज़ूर का मौजज़ा है। इसीलिए हमारा ईमान है के हम चाहे कहीं से भी, अस्सलाम अलेक या रसूल अल्लाह पढ़ें हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम अपने ऐजाज़ से हमारी आवाज़ सुन लेते हैं।

हिकायत नम्बर(791) गोह की गवाही

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ी अल्लाह अन्ह फ़रमाते हैं के एक मर्तबा हम हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर थे के एक आराबी आया। जिसके पास एक गोह थी वो कहने लगा। मुझे लात व उज़्ज़ा की क़सम!

ऐ मोहम्मद! मैं तुझ पर हर गिज़ ईमान ना लाऊँगा जब तक के ये गोह तुम्हारी सदाक़त की गवाही ना दे। हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फ़रमाया। अच्छा लो सुनो! फिर हुज़ूर अलेहिस्सलाम ने गोह से मुख़ातिब होकर फ़रमाया। ऐ गोह! बोल! गोह सुनते ही साफ अरबी ज़बान में बोल उठी। जिस सब हाज़रीन ने सुना *लब्बैक या रसूला रब्बिल आलमीना* हुज़ूर ने फ़रमाया। तुम किस की इबादत करती हो। गोह ने जवाब दिया।

अल्लज़ी फिस्समाई ऊरशुहू व फिल अर्ज़ी सुलतानुहू व फिलबहर सबीलुहू व फिलजन्नती रहमतुहू व फिन्नारी अज़ाबुहू

"उसकी इबादत करती हूँ, आसमान में जिसका अर्श है। और ज़मीन में जिसकी हकूमत है और दरया में जिसका रास्ता है और जन्नत में जिसकी रहमत है और दोज़ख में जिसका अज़ाब है।"

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फ़रमाया। मैं कौन हूँ। वो बोली।

अन्ता रसूलु रब्बिल आलमीना व ख़ातमुनन्नबियीना क़द अफलाहा मन सद्दाक़ा व क़द ख़ाबा मन कज़्ज़बाका

"आप रब्बुल आलमीन के रसूल हैं। और ख़ातमुनन्नबियीन हैं। जिसने आपको पहचान लिया वो निजात पा गया और जिसने आपको ना माना वो नुक़्सान पा गया।"

आराबी गोह की ये गवाही सुनकर फ़ौरन मुसलमान हो गया। (हुज्जत-उल्लाह, सफ़ा 465)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की सदाक़त व अज़मत का इक़रार और आपके ख़ातमुनन्नबिय्यीन होने का इल्म जानवरों को भी है। फिर जो शख़्स हुज़ूर की अज़मत और ख़त्म नबुव्वत में शक करे। वो जानवरों से भी बदत्तर हुआ या नहीं।

हिकायत नम्बर (792) मौजज़ा

एक मर्तबा हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम एक तालाब के किनारे तशरीफ़ फ़रमा थे के वहाँ अबु जहल का बेटा अक्रमा (रज़ी अल्लाहो अन्ह ये बाद में मुसलमान हो गए थे) आ गया। और कहने लगा। अगर आप सच्चे हैं तो वो जो तालाब के दूसरे किनारे पर पत्थर पड़ा है। उसे हुक्म दीजिए के वो पानी पर तेरता हुआ आपके पास पहुँच जाए। और डूबे नहीं। हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने उस पत्थर की तरफ़ इशारा फ़रमा कर फ़रमाया। के मेरे पास आओ। तो वो पत्थर उसी वक़्त अपनी जगह से उखड़ कर पानी में आ गया। और पानी के ऊपर तेरता हुआ हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हो गया। और बाआवाज़ बुलंद कलमा शरीफ पढ़ने लगा। हुज़ूर ने अक्रमा से फ़रमाया। बस या कुछ और है। अक्रमा ने कहा। अब इसे कहिये के ये फिर वापस अपने मुक़ाम पर चला जाए। चुनाँचे हुज़ूर ने फिर उसे इर्शाद फ़रमाया। तो वो वापस तेरता हुआ अपनी जगह चला गया। (तफसीर-उल-इमाम राज़ी, जिल्द 8, सफ़ा 499)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के बेशुमार मौजज़ात में से आपका ये भी मौजज़ा है के पत्थर को पानी पर तेरा दिया। हज़रत नूह अलेहिस्सलाम की बहुत बड़ी कश्ती का पानी पर तेरना भी हज़रत नूह अलेहिस्सलाम का मौजज़ा ही था। मगर उससे बढ़कर ये मौजज़ा है के पानी पर ना तेरने वाली चीज़ तेरे। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की नज़रे करम और आपकी शफाअत का इशारा हो गया। तो बड़े बड़े वज़नी गुनाह वालों को भी तेरा कर वा पार लगा देंगे।

हिकायत नम्बर(793) मुनाफिक़

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम एक दफा कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे के रास्ते में आपकी ऊँटनी गुम हो गई। ज़ैद इब्ने सलत नामी एक मुनाफिक़ ने कहा के मोहम्मद अगर नबी है तो अपनी ऊँटनी के मुतअल्लिक़ क्यों नहीं बता देता के वो कहाँ है? वैसे तो उसका दावा है के वो आसमान की ख़बरें बताता है। मगर वो अपनी ऊँटनी की ख़बर नहीं रखता। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को उसकी इस बात का पता चला तो आपने फ़रमाया। फलाँ शख़्स मेरे मुतअल्लिक़ ऐसा कहता है। हालाँके मुझे अल्लाह तआला जिस बात की ख़बर देता है। मैं उसे जानता हूँ। और मैं अपनी ऊँटनी के मुतअल्लिक़ भी जानता हूँ के वो कहाँ है? मेरी ऊँटनी फलाँ वादी और फलाँ घाटी के पास खड़ी है और उसकी नकैल एक दरख़्त ने पकड़ रखी है। यानी उसकी नकैल एक दरख़्त से अटकी हुई है। और ऊँटनी वहीं खड़ी है जाओ उसे वहाँ से ले आओ। चुनाँचे सहाबा इक्राम गए और ऊँटनी को वहीं खड़ी पाया। और उसे ले आए। (ज़ादा-उल-मआद-उल-बिन क़ीम, जिल्दः 3, सफ़ा 5)

सबक़ः- मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इल्म में तान करना मुनाफिक़ों का काम है और जो सच्चे मुसलमान हैं। वो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इल्म के दिलो जान से क़ायल हैं और मानते हैं के हमारे आक़ा व मौला सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को अल्लाह तआला की तालीम से हर बात का इल्म है।

हिकायत नम्बर(794) ऐलाने हज

हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम तामीर बैत-उल्लाह शरीफ से जब फारिग़ हो गए तो अल्लाह तआला ने आपको हुक्म दिया के अब आप ऐलाने हज फ़रमा दें। हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम ने अर्ज़ की। इलाही! मैं ऐलान तो कर देता हूँ। मगर मेरे ऐलान को सुनेगा कोई किस तरह?

खुदा तआला ने फ़रमाया। ऐ इब्राहीम तुम ऐलान करो। ऐलान करना तुम्हारा काम है और उसे सुनाना हमारा काम है। चुनाँचे हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम ने जबल अबी क़बीस पर खड़े होकर और अपनी उंगलियाँ अपने कानों में दाखिल करके दायें बायें और मशरिक़ व मग़रिब की तरफ़ रूख करके ऐलान फ़रमाया के

याहिय्यूहन्नासू इन्नल्लाहा यदऊकुम इलल हज्जी बिबैतिल हराम

तर्जुमाः ऐ लोगो! अल्लाह तआला तुम्हें अपने इज़्ज़त वाले घर के हज के लिए बुलाता है।

हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम की ये आवाज़ जिन लोगों की क़िस्मत में हज था। उन्होंने अपने बापों की पीठों और माँओं के अरहाम में सुन ली। और जवाब में कहने लगे।

लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक

(उम्दत-उल-क़ारी शरह सही बुखारी जिल्दः 4, सफ़ा 484)

सबक़:- मालूम हुआ के दूर तक आवाज़ पहुँचा देना ये अल्लाह का काम है। और मख़लूक़ में की ग़ायब को हर्फ़ "या" से निदा करना और ये समझना के अल्लाह के सुनाने से वो सुन लेगा। जायज़ है। बल्के इब्राहीम अलेहिस्सलाम की सुन्नत है। जब ये बात साबित हो गई के एक नबी की आवाज़ अल्लाह के सुनाने से आम लोग सुन सकते हैं। तो फिर एक आम आदमी की निदा को अल्लाह का नबी क्यों नहीं सुन सकता?

मालूम हुआ जो मुसलमान इस ऐतमाद व यक़ीन के साथ के अल्लाह तआला के करम से मेरी आवाज़ को मेरा रसूल सुन लेगा "या रसूल अल्लाह" का नारा लगाकर अपने आक़ा से कुछ अर्ज़ करे तो यक़ीनन उसकी इस आवाज़ को अल्लाह तआला अपने मेहबूब तक पहुँचा देता है। और अल्लाह का मेहबूब सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपने फ़रयादियों की आवाज़ सुन लेता है। इसलिए आला हज़रत ने भी लिखा है के...

फरयाद उम्मती जो करे हाले ज़ार में
मुमकिन नहीं के ख़ैरे बशर को ख़बर ना हो!

हिकायत नम्बर(795) हज़रत दानियाल अलेहिस्साम

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया के दानियाल अलेहिस्सलाम ने अपने रब से ये दुआ की थी के उन्हें मोहम्मद सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की उम्मत दफ़्न करे। जब अबु मूसा अशआरी रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने क़िले तश्तर फतह किया तो उन्होंने हज़रत दानियाल अलेहिस्सलाम को उनके ताबूत में इस हाल में पाया के उनके तमाम जिस्म और गर्दन की सब रगें। बराबर चल रही थीं। (अलबदाया व अलनहाया, जिल्दः 2, सफ़ा 4)

सबक़:- अल्लाह के पैग़म्बर ज़िन्दा हैं और सेंकड़ों साल गुज़र जाने के बाद भी उनका जिस्म मुबारक सही सालिम रहता है। फिर जो उन सब

पैग़म्बरों के सरदार अलेह व अलेहिमअस्सलाम को भी मर कर मिट्टी में मिल जाने वाला लिख दे। (मआज़ अल्लाह) उसकी गुमराही व मुर्दा दिली में कौन शक कर सकता है?

हिकायत नम्बर (796) आक़्बत अंदेशी

एक जलील-उल-क़द्र ताबई हज़रत रबई रज़ी अल्लाहो अन्ह ने उम्र भर कभी झूट नहीं बोला था। उन्होंने क़सम खाई थी के जब तक उन्हें अपना ठिकाना मालूम ना हो जाए। वो ना हंसेंगे। चुनाँचे वो अपनी मौत के बाद ही हंसे। इसी तरह उनके भाई हज़रत रबीअ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने भी क़सम खाई थी के वो उस वक़्त तक नहीं हंसेंगे जब तक के उन्हें अपने जन्नती या नारी होने का इल्म ना हो जाए। चुनाँचे जब उनका इन्तिक़ाल हुआ तो उनको ग़ुस्ल देने वाले का बयान है के वो ग़ुस्ल के तख़्ते पर बराबर हंसते रहे। यहाँ तक के हम उनके ग़ुस्ल से फारिग़ हुए। (शरह मुक़द्दमा सही मुस्लिम, जिल्द: 1, सफ़ा 7)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों को अपनी आक़्बत की फिक्र रहती है। और हर वक़्त आक़्बत अंदेशी में रहते हैं, आक़्बत फ़रामोशी में हंसना इन्तिहाई ग़फ़्लत की अलामत है और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले अपने इन्तिक़ाल के बाद भी ज़िन्दा रहते हैं। और हंसते हैं। पस ज़िन्दगी हो तो ऐसी के मरने के बाद उसके अज़ीज़ तो रो रहे हों। मगर वो हंस रहा हो....

निशान मर्दे मोमिन बा तो गोयम!!
चू मर्ग आयद तबस्सुम बरलब अवस्त

और एक उर्दू शायर लिखता है...

तू आया था तो रोता था तुझे सब देख हंसते थे
अब ऐसा काम कर बन्दे ये रोते हों तू हंसता हो

यानी जब तुम पैदा हुए थे। तो रोते हुए आए थे, तुम रो रहे थे और तुम्हारे अज़ीज़ हंस रहे थे। के हमारे हाँ बच्चा पैदा हुआ है और अब जब के तुम दुनिया से जाने लगो। तो ज़िन्दगी ऐसी गुज़ार कर जाओ के ये हंसने वाले तुम्हारे अज़ीज़ सब रो रहे हों और तुम हंस रहे हो। ऐसा ना हो के अज़ीज़ भी रो रहे हों और तुम भी रो रहे हो। और तुम्हारा आना भी रोते हुए हो। और जाना।

हिकायत नम्बर(797) मौत के बाद कलाम

हज़रत रबीअ रज़ी अल्लाह अन्ह एक बहुत बड़े मुत्तक़ी परहैज़गार और ल्लाह के मक़्बूल बन्दे थे। कसरत के साथ नवाफिल अदा करते और रोज़े वा करते थे। उनकी जब वफात हुई तो उनके तीन भाई उनके आस पास ठे हुए थे वो कहते हैं के हम ने देखा के हज़रत रबीअ ने एक दम अपने ह से कपड़ा हआ दिया और अस्सलाम अलेकुम कहा। हम ने व अलेकुम स्सलाम कहकर जवाब दिया और ताज्जुब से कहा "मौत के बाद कलाम? न्होंने जवाब दिया। हाँ। मौत के बाद मैंने अपने रब से ऐसे हाल में मुलाक़ात ी के वो ग़ज़बनाक नहीं था। मेरे रब ने आला दर्जे की नअेमतों और रेशमी लबास के अतिये के साथ मेरा इसतक़बाल किया।"

ख़बरदार हो जाओ के बेशक हुज़ूर अबु अलक़ासिम हज़रत मोहम्मद सूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मुझ पर नमाज़ पढ़ने का इन्तिज़ार फ़रमा रहे हैं। तुम मेरा जनाज़ा जल्दी ले कर चलो। मेरे ले जाने ं देर ना करो। ये कहकर फिर सकूत मौत के साथ खामोशी इख़्तियार कर ली। (शरह-उल-सदूर-उल-इमाम सयूती, सफ़ा 28)

सबक़:- अल्लाह वाले मरते नहीं। बल्के अपने जगह बदलते हैं और अपने मेहबूब हक़ीक़ी से जा मिलते हैं। इसीलिए उनके लिए ये कहा जाता है के फलाँ बुज़ुर्ग का विसाल हो गया है। पस ये लोग मरते नहीं।

कौन कहता है के मोमिन मर गए
क़ैद से छूटे वो अपने घर गए

और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ज़िन्दा हैं और अपनी उम्मत के हालात से बाख़बर। और आप अपने सच्चे गुलामों के इन्तिक़ाल पर उनकी नमाज़े जनाज़ा भी पढ़ते हैं।

फसल-लल्लाहो अलेही व आलिही
क़दरा हुस्निही व जमालिही

हिकायत नम्बर(798) अबु जहल

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ी अल्लाहो अन्हुमा फ़रमाते हैं के मैं नवाहे बद्र में जा रहा था के अचानक एक क़ब्र के गढ़े से एक मर्द निकला। जिसकी गर्दन में जंजीर थी। उसने मुझे आवाज़ देकर कहा। ऐ अब्दुल्लाह! मुझे पानी पिला! इसी गढ़े से एक और शख़्स बरआमद हुआ। उसके हाथ में

कोड़ा था। उसने मुझे पुकार कर कहा। ऐ अब्दुल्लाह! उसे पानी ना पिलाना। ये काफिर है। फिर उसे कोड़ा मारता रहा। यहाँ तक के वो अपने गढ़े की तरफ़ वापस लौट गया। अब्दुल्लाह बिन उमर फ़रमाते हैं फिर मैं नबी करीम सल-लल्लहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। और मैंने ये वाक़ेया हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से अर्ज़ किया, फ़रमायाः क्या तूने उसे देखा है? मैंने अर्ज़ किया। हाँ! या रसूल अल्लाह मैंने उसे देखा है। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया। वो अल्लाह का दुश्मन अबु जहल था और वो इसका अज़ाब था जो उसे क़यामत तक होता रहेगा। (अलहावी-उल-फतावा मतबूआ मिस्र, जिल्दः2, सफ़ा 265)

सबक़:- दुश्मन रसूल अज़ाबे क़ब्र भी क़यामत तक मुब्तला रहता है और उसको निजात नहीं होती। और ये भी मालूम हुआ के जो कुछ इस दुनिया में और इस दुनिया में हो रहा है। हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को सब इल्म है।

हिकायत नम्बर(799) चार यार (रज़ी अल्लाहो अन्हुम)

हज़रत अबु अब्दुल्लाह अलमोहतदी फ़रमाते हैं। एक साल मैं हज के लिए गया तो हरम शरीफ में एक ऐसे शख़्स से मुलाक़ात हुई। जो पानी नहीं पीता था। मैंने उससे वजह दरयाफ़्त की के तुम पानी क्यों नहीं पीते। तो उसने बताया के मैं हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से मोहब्बत का मुद्दई था और हज़रत अबु बक्र, हज़रत उमर और हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुम से बुग्ज़ रखता था। एक रात मैं सोया और मैंने देखा के क़यामत बर्पा है। और लोग बड़े परेशान हैं और मुझे सख़्त प्यास लग रही थी प्यास बुझाने के लिए मैं रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के होज़े कोसर पर पहुँचा। तो वहाँ मैंने हज़रत अबु बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान और हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुम को देखा। जो प्यासों को पानी पिला रहे थे। मैं सीधा हज़रत अली के पास पहुँचा और पानी माँगा। मगर हज़रत अली ने अपना मुंह फैर लिया। फिर हज़रत अबु बक्र के पास गया। तो उन्होंने भी मुंह फैर लिया। फिर मैं हज़रत उमर और हज़रत उस्मान के पास गया तो उन्होंने भी मुंह फैर लिया। मैं बड़ा परेशान हुआ। और रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की तलाश की। चुनाँचे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मैदान महशर में

तशरीफ़ फ़रमा नज़र आए। मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ ओर शिकायत की के या रसूल अल्लाह मुझे सख़्त प्यास लग रही है और मैं होज़े कोसर पर गया और हज़रत अली से पानी माँगा। तो उन्होंने मुंह फैर लिया और पानी नहीं पिलाया। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया। मेरा अली तुम्हें पानी कैसे पिलाए? जब के तुम मेरे सहाबा से बुग्ज़ रखते हो। मैंने अर्ज़ की। या रसूल अल्लाह! क्या मेरे लिए तौबा की गुंजाईश है या नहीं? फ़रमाया! हाँ है, सच्चे दिल से तौबा करो और मेरे सहाबा से मोहब्बत रखो। फिर मैं तुम्हें अभी ऐसा जाम पिलाऊँगा के उम्र भर तुम्हें प्यास ना लगेगी। चुनाँचे मैं ने बुग्ज़ सहाबा से तौबा की। तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने मुझे एक जाम दिया। जो मैंने पिया। फिर मेरी आँख खुली तो मुझे क़तअन प्यास ना थी। और अब प्यास लगती भी नहीं। पानी पियूं या ना पियूं बराबर है। अब मैं सच्चे दिल से रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के चार यार का मुहिब्ब हूँ। (हुज्जत-उल्लाह अलल आलमीन सफ़ा 808)

सबक़:- हज़रत अबुबक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान और हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्हुम से मोहब्बत रखने वाला अपनी आक़्बत दुरूस्त कर लेता है और उनसे बुग्ज़ व बैर रखने वाला अपनी आक़्बत बर्बाद कर लेता है।

और ये भी मालूम हुआ के जिसको हज़रत अबु बक्र, हज़र उमर और हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्हुम से मोहब्बत नहीं। उस पर हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह भी खुश नहीं। और ये भी मालूम हुआ के होज़े कोसर का पानी पियासों में तक़सीम फ़रमाने वाले ये चार याराने मुसतफा सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हैं। अगर क़यामत की प्यास से बचना हो तो चार यार से मोहब्बत ज़रूरी है।

हिकायत नम्बर(800) अमीर तग़रूल

शाहान सलजूक़िया में से तग़रूल बादशाह एक मर्तबा अपने लश्कर समेत मवस्सिल की तरफ़ रवाना हुआ। ये अज़ीम लश्कर रास्ते में एक गाँव में पहुँचा। तो गाँव वालों पर ज़ियादतियाँ शुरू कर दीं। जिनसे गाँव वाले बड़े परेशान हुए। इसी रात तग़रूल बादशाह को ख़्वाब में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मिले। बादशाह ने सलाम अर्ज़ किया तो हुज़ूर ने रूख अनवर फैर लिया। और फ़रमाया।

"अल्लाह ने तुम्हें अपनी मख़लूक़ पर हाकिम बनाया है। और तुम उसकी मख़लूक़ को परेशान करने लगे। हो। क्या तुम अल्लाह के क़हरो जलाल से नहीं डरते हो।"

बादशाह की आँख खुली तो वो कांप रहा था। और उसी वक़्त उसने सारे लश्कर में मनादी करा दी के ख़बरदार कोई सिपाही किसी शख़्स पर ज़र्रा भर भी ज़ियादती ना करे वरना उसे सख़्त सज़ा दी जाएगी। (हुज्जत-उल्लाह अलल आलमीन, सफ़ा 809)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपने ग़ुलामों के हालात से बाख़बर हैं। और अपने ग़ुलामों की परेशानी आप पर शाक़ गुज़रती है और ये भी मालूम हुआ के हाकिम की नज़र अगर अल्लाह की अज़मत व जलाल पर भी है तो वो रिआया पर कभी ज़ुल्मो सितम नहीं होने देता।

हिकायत नम्बर(801) तीन सख़ी

रमज़ान शरीफ का महीना आने वाला था और हज़रत वाक़दी रहमत-उल्लाह अलेह के पास कुछ ना था। आप को फिक्र लाहक़ हुई के रमज़ान शरीफ का महीना कैसे गुज़रेगा। आपने अपने एक अलवी दोस्त की तरफ़ रूक़आ लिखा के रमज़ान शरीफ का महीना आने वाला है और मेरे पास खर्च के लिए कुछ नहीं। मुझे क़र्ज़े हस्ना के तौर पर एक हज़ार दरहम भेज दे। चुनाँचे उसे अलवी ने एक हज़ार दरहम की थेली भेज दी। थोड़ी देर के बाद हज़रत वाक़दी के एक दोस्त का रूक़आ हज़रत वाक़दी की तरफ़ आ गया के रमज़ान शरीफ के महीने में खर्च के लिए मुझे एक हज़ार दरहम की ज़रूरत है। मुझे एक हज़ार दरहम बतौर क़र्ज़ भेज दें। हज़रत वाक़दी ने वही थेली वहाँ भेज दी।

दूसरे रोज़ वही अलवी दोस्त जिनसे वाक़दी ने क़र्ज़ लिया था। और वो दूसरे दोस्त जिन्होंने वाक़दी से क़र्ज़ लिया था। दोनों हज़रत वाक़दी के घर आए और अलवी कहने लगे के रमज़ान का महीना आ रहा है। और मेरे पास इन हज़ार दरहमों के सिवा और कुछ ना था मगर जब आपका रूक़आ आया। तो मैंने ये हज़ार दरहम आपको भेज दिए और अपनी ज़रूरत के लिए इस अपने दोस्त को रूक़आ लिखा के मुझे एक हज़ार दरहम बतौर क़र्ज़ भेज दे उसने वही थेली जो मैंने आपकी भेजी थी। मुझे भेज दी तो पता चला के आपने मुझ से क़र्ज़ माँगा। मैंने उस अपने दोस्त से क़र्ज़ माँगा और उस दोस्त ने आपसे माँगा और जो थेली मैंने आपको भेजी थी वो आपने उसे भेज दी। और

उसने वही थेली मुझे भेज दी। फिर इन तीनों ने आपस में इत्तिफाक़ करके इस रक़म के तीन हिस्से करके तक़सीम कर लिए और उसी रात वाक़दी को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ख़्वाब में मिले और फ़रमाया: कल तुम्हें बहुत कुछ मिल जाएगा चुनाँचे दूसरे रोज़ मीर याहिया बरमकी ने वाक़दी को बुला कर पूछा के मैंने रात ख़्वाब में तुम्हें परेशान देखा है। क्या बात है? वाक़दी ने सारा क़िस्सा सुनाया। तो याहिया बरमकी ने कहा के मैं नहीं कह कसता के तुम तीनों में से कौन ज़्यादा सखी है। तुम तीनों ही सखी और वाजिब-उल-एहत्राम हो। फिर उसने तीस हज़ार दरहम वाक़दी को और बीस हज़ार उन दोनों को दिए और वाक़दी को क़ाज़ी भी मुक़र्रर कर दिया। (हुज्जत-उल्लाह अलल आलमीन, सफ़ा 812)

सबक़:- सच्चे मुसलमान सखी और ईसार पैशा होते हैं। और अपने भाई की तकलीफ दूर करने की खातिर अपनी परवाह भी नहीं करते। और ये भी मालूम हुआ के सखावत से हमेशा फायदा ही होता है। माल घटता नहीं। बल्के बढ़ता है और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उम्मत के हालात से बाख़बर हैं। और सखियों पर नज़रे रहमत फ़रमाते हैं।

हिकायत नम्बर(812) हसन व हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा

एक रोज़ हज्जाज ने फुक़िया खरासान हज़रत याहिया इब्ने उमैर को बुलाया और कहा के ऐ याहिया! मैंने सुना है के तुम हसन व हुसैन(रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा) को रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की औलाद से बताते हो। औलाद तो बाप की तरफ़ से होती है और हसन हुसैन रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की बेटी के बेटे हैं। फिर वो माँ की तरफ़ से रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की औलाद कैसे हो गए? तुम्हारे पास अगर कोई दलील है तो बयान करो हज़रत याहिया फ़रमाने लगे मेरे पास क़ुरआन की दलील मौजूद है। हज्जाज ने कहा। मगर *नदऊ अबनाआ ना व अबनाआ कुम* वाली आयत ना पढ़ना। इसके अलावा कोई दूसरी आयत हो। तो पढ़ो। हज़रत याहिया ने फ़रमाया। दूसरी ही आयत पढ़ूंगा। हज्जाज हैरान हो गया के दूसरी ऐसी आयत भला कौन सी हो सकती है। कहने लगा अगर तुम कोई ऐसी आयत ना पढ़ सके तो तुम्हारे टुकड़े टुकड़े कर दूंगा। फ़रमाया। इंशाअल्लाह वाज़ेह आयत पेश करूंगा लो सुना खुदा तआला फ़रमाता है:

व नूहन हदेना मिन क़बलु मिन ज़ुर्रियातिही राऊदावा सुलैमाना व अय्युबा व युसूफा व मूसा व हारूना व कज़ालिका नजज़िल मोहसिनीना। व ज़क्रिया व याहिया व ईसा व इलयासा। (प:7, रूकू 16)

देख लो इस आयत में अल्लाह तआला ने हज़रत नूह अलेहिस्सललाम की औलाद दाऊद, सुलैमान, अय्युब, युसूफ, मूसा, हारून, याहिया और ईसा व इलयास (अलेहिस्सलाम) को बताया है और इस फेहरिस्त में हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम भी हैं। जिनका बाप कोई ना था और माँ ही थी। और अल्लाह तआला ने माँ की तरफ़ से उनको हज़रत नूह अलेहिस्सलाम की औलाद से बताया है। पस इसी तरह हसन व हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा भी अपनी माँ की तरफ़ से रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की औलाद से हैं, हज्जाज ये आयत सुनकर हैरान रह गया और आसमान की तरफ़ मुंह करके कहने लगा। ये आयत गोया मैंने आज तक पढ़ी ही ना थी। फिर उसने हज़रत याहिया बिन उमैर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को बहुत सा ईनाम देकर रूख़सत किया। (तफसीर कबीर, जिल्दः 1, सफ़ा 284)

सबक़:- हज़रत इमाम हसन व हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा की बहुत बड़ी शान है और ये हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की औलाद में से हैं। उनका अदब हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का अदब है। और उनकी शान में (मआज़ अल्लाह) कोई गुसताखी करने वाला हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह वसल्लम का गुस्ताख़ है।

हिकायत नम्बर(803) सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह

हज़रत इमाम जाफर सादिक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के वालिद हज़रत मोहम्मद बाक़र रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह फ़रमाते हैं के मेरे वालिद हज़रत इमाम ज़ैन-उल-आबेदीन बिन इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा के पास एक शख़्स आया। और कहने लगा। हुज़ूर "अबु बक्र" की कोई बात कीजिए। इमाम ज़ैन-उल-आबेदीन ने फ़रमाया। हज़रत सिद्दीक़ की? सायल ने हैरान होकर पूछा। अबु बक्र को आप भी सिद्दीक़ कहते हैं? इमाम ज़ैन-उल-आबेदीन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने जवाब दियाः

क़द सम्माहू सिद्दीक़न रसूलुल्लाही सल-लल्लाहो तआला अलेही व सल्लम वअलमुहाजिरूना वलअनसारू वमिन लम युसम्मीहू सिद्दीक़न फला सद्दाक़ल्लाहो अज़्ज़ा व जल्ला क़ौलाहू फिदुनिया वलआख़िरती इज़हब फहिब अबाबक्रिन व उमरा रज़ी अल्लाहो

अन्हुमा (अस्सवाईक़-उल-महर्रिक़त, सफ़ा 31)

उनका नाम खुद रसूल अल्लाह(स०अ०स०) और मुहाज़ीन व अनसार ने सिद्दीक़ रखा है। और जो उनको सिद्दीक़ नहीं मानता। खुदा तआला उसकी बात को दुनिया व आख़िरत में सच्चा ना करे। जाओ अबुबक्र व उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा दोनों की मोहब्बत पैदा करो।

सबक़:- हज़रत अबुबक्र सिद्दीके अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की वो शान है के खुद अहले बैत अेज़ाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुम उन्हें "सिद्दीक़" तसलीम फ़रमाते हैं। और जो उन्हें सिद्दीक़ नहीं मानता। उसे वो झूटा समझते हैं। और ये भी मालूम हुआ के अहले बैत अेज़ाम का भी सबक़ ये है के हज़रत अबुबक्र व उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा से मोहब्बत रखना ज़रूरी है। फिर अगर कोई उनसे मोहब्बत नहीं रखता। तो गोया वो अहले बैत अेज़ाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुम का हुक्म नहीं मानता।

हिकायत नम्बर(804) नेक ख़सलतें तीन सौ साठ(360) हैं

एक रोज़ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया के अल्लाह तआला जब किसी बन्दे से भलाई का इरादा फ़रमाता है। तो उनमें से एक ख़सलत उसमें पैदा फ़रमा देता है। जिसकी वजह से वो बन्दा जन्नत में दाखिल हो जाता है। हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! इन (360) नेक ख़सलतों में से कोई खसलत मुझ में भी है। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया। अबुबक्र! तुम्हें मुबारक हो। के वो सारी की सारी नेक खसलतें तुम में मौजूद हैं। (अस्सवाईक़-उल-मोहर्रिक़ा, सफ़ा 44)

सबक़:- हज़रत सिद्दीक़ अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की बहुत बड़ी शान है। और वो यक़ीनन जन्नती बल्के जन्नतियों के सरदार हैं। 360 ख़सलतों में से जब एक ख़सलत भी जन्नत में ले जाती है तो जिस ज़ाते पाक में 360 पूरी की पूरी नेक खसलतें हूँ। उसके जन्नती होने में (मआज़ अल्लाह सुम्मा मआज़ अल्लाह) शक व शुबह करने वाला क्यों ना बद ख़सलत होगा।

हिकायत नम्बर(805) सुनहरी महल

एक रोज़ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया के मैंने जन्नत में एक अज़ीम-उश-शान सुनहरी महल देखा और पूछा के ये महल किस का है फरिश्तों ने बताया के ये सुनहरी महल एक अरबी का है। मैंने

कहा मैं भी अरबी हूँ। बोले एक कुरैशी का है। मैंने कहा। मैं भी कुरैशी हूँ। फरिश्ते बोले: ये सुनहरी महल मोहम्मद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के एक उम्मती का है। मैंने कहा। मैं मोहम्मद हूँ। बताओ मेरे किस उम्मती का है? उन्होंने बताया। ये महल हज़रत उमर बिन अलखत्ताब का है।(अलसवाईक़ अलमोहिर्रका, सफ़ा 59)

सबक़:- हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो का बहुत बड़ा दर्जा है और अल्लाह तआला ने आपके वास्ते जन्नत में सुनहरी महल तैयार फ़रमाया है। फिर जो कोई इतनी बड़ी मक़्बूल हक़ हस्ती से बुग्ज़ रखे। तो उसका नामा-ए-आमाल सियाह क्यों ना हो?

हिकायत नम्बर(806) सत्तर हज़ार

एक रोज़ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया के हज़रत उस्मान (रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह) की शफाअत से क़यामत के रोज़ सत्तर हज़ार अफ़राद जिनके लिए आग वाजिब हो गई होगी। जन्नत में दाखिल होंगे। (अस्सवाईक़-उल-मोहर्रिका, सफ़ा 65)

सबक़:- हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह बड़ी शान के मालिक हैं और आप की मोहब्बत जन्नत में ले जाने वाली है। फिर आपका बुग्ज़ व अनाद रखने वाला जन्नत में कैसे जा सकता है?

हिकायत नम्बर(807) चार मेहबूब

एक रोज़ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया के अल्लाह तआला ने मुझे चार शख़्सियतों से मोहब्बत रखने का हुक्म दिया है। इसलिए मैं उनसे मोहब्बत रखता हूँ। हाज़रीन ने पूछा या रसूल अल्लाह! उन खुश क़िस्मतों का नाम लीजिए। फ़रमाया एक तो अली हैं(रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह) और तीन ये हैं अबुज़र, मिक़्दाद और सलमान रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुम(अस्सवाईक़-उल-मोहर्रिका सफ़ा 73)

सबक़:- हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की इतनी बड़ी शान है के खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को खुदा का हुक्म होता है के उनसे मोहब्बत रखो। फिर मावशमा के लिए उनकी मोहब्बत रखना क्यों ज़रूरी ना होगा। और उनका बुग्ज़ खुदा की नाराज़गी का सबब क्यों ना होगा?

हिकायत नम्बर(808) अहसनतुन्ना

हज़रत इमाम आज़म रहमत-उल्लाह तआला अलेह एक मर्तबा एक बाग़ ...में तशरीफ़ ले गए। और वहाँ से वापसी पर आपने इब्ने अबी लैला को देखा जो खच्चर पर सवार अदालत की तरफ़ जा रहे थे। इब्ने अबी लैला को एक मुकद्दमे में हज़रत इमाम आज़म रहमत-उल्लाह तआला अलेह की गवाही दरकार थी। इसलिए उन्होंने इमामे आज़म अलेह अर्रहमा को साथ ले लिया। रास्ते में चन्द औरतें गा रही थीं। उन औरतों ने जब हज़रत इमाम आज़म और इब्ने अबी लैला को देखा तो खामोश हो गईं। इमाम आज़म अलेह अर्रहमा ने फ़रमाया *अहसनतुन्ना* हज़रत इमाम साहब ने फ़रमाया। आप भी याद कीजिए के मैंने ये कलमा किस वक़्त कहा था। गाने के वक़्त या सकूत के वक़्त? इब्ने अबी लैला ने जवाब दिया। सकूत के वक़्त। तो आपने फ़रमाया के मैंने तो उन्हें *अहसनतुन्ना* इसी सकूत पर कहा था के तुम ने गाना छोड़ के जो सकूत इख़्तियार कर लिया है। बहुत अच्छा किया है। इब्ने अबी लैला ने ये बात सुनी। तो आपकी गवाही क़बूल कर ली। (ग़रायब-उल-बयान, सफ़ा 34)

सबक़:- हमारे इमाम हज़रत इमाम आज़म रहमत-उल्लाह तआला अलेह बहुत बड़े इमाम और इल्मो इर्फ़ान के मख़ज़न थे। आपकी हर बात इल्मो हिकमत से भरी होती थी। और आप पर ऐत्राज़ करने वाला दरअसल अपनी ग़लत फहमी का शिकार होता है। खुदा अगर समझ दे तो हमारे इमाम की किसी बात पर ऐत्राज़ ना किया जाए और ये भी मालूम हुआ के औरतों का गाना बजाना बहुत बुरी बात है। और इस फ़ैल का छोड़ना ही अच्छा काम है।

हिकायत नम्बर(809) खारजी को जवाब

इंक़िलाबात ज़माना से एक खारजी शख़्स जिसका नाम ज़ोहाक था। कूफ़े का गवरनर बन गया। ये शख़्स बड़ा ज़ालिम था। और हमारे इमाम आज़म अलेह अर्रहमा को भी ज़ोहाक से एक दफ़ा वास्ता पड़ा था। ज़ोहाक ने गवरनरी संभालते ही हज़रत इमाम अबु हनीफ़ा अलेह अर्रहमा को गिरफ़्तार कर लिया। और कहा *तुब या शेख़ मिनलकुफ़्र।* ऐ शेख़! कुफ़्र से तौबा करो। इमाम अबु हनीफ़ा ने जवाब दिया। *अना तायबुम्न मिना कुल्ली कुफ़्रिन* मैं हर कुफ़्र से तायब हूँ। ज़ोहाक समझा के अबु हनीफ़ा ने तमाम ग़ैर खारजी अक़ायद से तौबा कर ली। इमाम अबु हनीफ़ा रिहा हो गए। लेकिन किसी शरीर ने उसे मुतवज्जह किया के अबु हनीफ़ा

ने ग़ैर खारजी अक़ायद से तौबा नहीं की है। उल्टा खारजी अक़ायद को कुफ़्र बताया है। इमाम अबु हनीफा रहमत-उल्लाह फिर बुलाए गए और पूछा के तुम ने क्या खुद हमारे अक़ायद से तौबा की थी। कुफ़्र से मुराद क्या हमारे अक़ायद थे? इमाम अबु हनीफा बोले: आपको यक़ीन है के मेरे पेशे नज़र कुफ़्र का लफ़्ज़ इस्तेमाल करते वक़्त आपके अक़ायद थे। ज़ोहाक ने जवाब दिया। यक़ीन कैसे हो सकता है। ज़न और गुमान है। इमाम अबु हनीफा रहमत-उल्लाह अलेह ने फ़रमाया *इन्ना बअज़ ज़मिन्नी इसमुन* बअज़ गुमान गुनाह होते हैं।

खारजियों के नज़दीक हर छोटे बड़े गुनाह का मुरतकिब काफिर हो जाता है। इमाम अबु हनीफा रहमत-उल्लाह अलेह ने फ़रमाया। अब आप कुफ़्र से तौबा कीजिए। आपने बदगुमानी करके कुफ़्र किया है ज़ोहाक गड़बड़ा गया। और बोला। बेशक मुझ से ग़लती हुई। मैं तौबा करता हूँ। लेकिन अबु हनीफा! तुम भी तौबा के अलफाज़ दोबारा कहो। इमाम अबु हनीफा ने वही फिक़रा दोहराया। के मैं हर कुफ़्र से तायब हूँ और रिहाई पाकर घर तशरीफ़ ले आए।

सबक़:- हमारे इमाम आज़म अलेह अर्रहमा को अल्लाह ने हाज़िरत दिमाग़ी का खास मल्का अता फ़रमाया था और आपके दुश्मन हमेशा ज़लील ही हुए।

हिकायत नम्बर(810) अज़ान

ज़ोहाक के मरने के बाद उसका जानशीन इब्ने हबीरा हुआ। ये शख़्स इब्तिदा में हज़रत इमाम अबु हनीफा रहमत-उल्लाह अलेह का दोस्त और मौतक़िद रहा। और मौक़ा बे मौक़ा हज़रत इमाम साहब को बुला भेजता था। और उनसे मशवरे और फतवे लेता था और ये उसकी चाल थी।

एक दिन इब्ने हबीरा किसी शख़्स को वाजिब-उल-क़त्ल क़रार देकर जल्लादे के सपुर्द करने वाला था के इमाम अबु हनीफा हस्बे मामूल बुलाए हुए पहुँच गए। ग़रीब मुलज़िम की नज़र इमाम साहब पर पड़ी। तो उसने बदहवासी से या जान बूझ कर इब्ने हबीरा से कहा। आप मेरी बाबत हज़रत से दरयाफ़्त कर लीजिए के मैं कैसा आदमी हूँ इब्ने हबीरा ने इमाम अबु हनीफा की तरफ़ देखा। इमाम अबु हनीफा रहमत-उल्लाह अलेह मुलज़िम को मतलक़ नहीं जानते थे। लेकिन समझ गए के बेचारा ख़्वाह म ख़्वाह इब्ने हबीरा के पंजे में फंस गया है। बचाने की कोई सूरत निकालनी चाहिए। झूट

तो बोल नहीं सकते थे। इब्ने हबीरा को जवाब देने की बजाए मुलज़िल से बोले के तुम वही होना जो अज़ान देते वक़्त लाइलाहा इल लल्लाह का कलमा खास तरीके से खींचते हो। उसने कहा। जी हाँ! वही हूँ। इमाम अबु हनीफा ने फ़रमाया। अच्छा ज़रा अज़ान दो। उसने अज़ान दी। अज़ान ख़त्म हुई। तो इमाम अबु हनीफा ने इब्ने हबीरा से कहा अच्छा आदमी है मुझे इसमें बुराई नज़र नहीं आई इब्ने हबीरा की बात काट कर और कलमा शहादत पढ़वा कर इमाम अबु हनीफा ने उस शख़्स की तारीफ की गुंजाईश पैदा कर ली के जो तौहीद का मक़्र और रिसालत का क़ायल हो। उसकी बाबत इतना कह देना के अच्छा आदमी है। झूट नहीं होगा। इब्ने हबीरा ने जान बख़्शी कर दी।

सबक़:- हमारे इमाम ने बड़ी बड़ी मुश्किलें हल फ़रमाई हैं और अपनी खुदादाद ज़हानत से बड़ी बड़ी मुसीबतें टाल दी हैं।

हिकायत नम्बर(811) अजीब सवाल

एक शख़्स ने हमारे इमाम हज़रत इमाम आज़म अलेह अर्रहमा से पूछा के फ़रमाईये। उस शख़्स के मुतअल्लिक़ आपका क्या खयाल है। जो यूं कहता है के मैं जन्नत की ख़्वाहिश नहीं रखता और दोज़ख से नहीं डरता और मुर्दा खाता हूँ। और बग़ैर क़िरात के और बग़ैर रूकू व सज्दे के नमाज़ पढ़ता हूँ और इस चीज़ की गवाही देता हूँ। जिसे मैंने ना देखा और हक़ से नफरत रखता हूँ और फितना से रग़बत रखता हूँ।

हज़रत इमाम साहब ने अपने शार्गिदों से मुस्कुरा कर दरयाफ़्त फ़रमाया के तुम बताओ ऐसा शख़्स कैसा होगा? सब ने कहा के ऐसा शख़्स तो बहुत ही बुरा शख़्स है।

इमाम साहब ने फ़रमाया। नहीं बल्के ये शख़्स तो बड़ा ही अच्छा शख़्स है। जो जन्नत की ख़्वाहिश नहीं रखता बल्के खालिके जन्नत अल्लाह तआला की मोहब्बत रखता है और दोज़ख़ से नहीं डरता बल्के ख़ालिके दोज़ख़ अल्लाह तआला से डरता है। और मुर्दा खाता है। यानी मछली या टिड्डी खाता है और बग़ैर क़िरात व रूकू व सज्दे के नमाज़ पढ़ता है। यानी नमाज़े जनाज़ा पढ़ता है। और बग़ैर देखे गवाही देता है। यानी अल्लाह तआला को बग़ैर देखे उसकी गवाही देता है। और कहता है *अशहदू अन लाइलाहा इल-लल्लाह* और हक़ से नफरत रखता है यानी मौत से नफरत रखता है जो हक़ है और फितने से रग़बत रखता है। यानी मालो औलाद से रग़बत रखता हैं जो दोनों ही फितना हैं।

सायल ने जवाब सुने

फक़ब्बला राअसाहू वक़ाला अशहदू अन्नाका लिलइल्मी विआमुन
तो आपके सर को बेसा देकर कहने लगा के मैं गवाही देता हूँ के आप इल्मो फज़्ल के मख़ज़न हैं। (ग़रायब-उल-बयान सफ़ा 32)

सबक़:- हमारे इमाम आज़म अलेह अर्रहमा वाक़ई इमाम आज़म हैं। और मुश्किलात इल्म के हल फ़रमाने वाले हैं। और जहाँ तक आपके इल्म की रसाई है। उस वक़्त से आज तक किसी दूसरे की वहाँ तक रसाई हुई ना होगी। फिर जो लोग हमारे इमाम आज़म पर तरह तरह की बीसियों ऐत्राज़ात करने वाले हैं। वो खुद क्यों जाहिल व बेख़बर ना हों?

हिकायत नम्बर(812) तक़वा

हज़रत इमाम आज़म रहमत-उल्लाह तआला अलेह कपड़े के बहुत बड़े ताजिर थे। एक दफा आपने कपड़ा फ़रोख़्त करने के लिए एक शख़्स को वकील किया उन कपड़ों में एक कपड़ा ऐबदार भी था। हज़रत इमाम साहब ने वकील से कह दिया के इस कपड़े को फ़रोख़्त ना करना जब तक उसका ऐब बयान ना कर लेना। इत्तिफाक़ से वकील ने फ़रामोशी से वो कपड़ा ऐब बयन किए बग़ैर फ़रोख़्त कर दिया और सब कपड़ों की क़ीमत में उसकी क़ीमत भी मिला दी।

हज़रत इमाम साहब को जब इस बात का पता चला तो आपने उन तमाम कपड़ों की क़ीमत ग़ुर्बा व मसाकीन पर सदक़ा कर दी। (ग़राब-उल-बयान, सफ़ा 69)

सबक़:- हमारे इमाम साहब रहमत-उल्लाह तआला अलेह वरअे व तक़वा के बादशाह थे। और ताजिर व अमीन थे। फिर ऐसे अमीर व मुत्तक़ी इमाम पर जो शख़्स ज़बान तान दराज़ करे। वो क्यों ख़ायन व आक़्बत ना अंदेश ना हो? और ये भी मालूम हुआ के सच्चा मुसलमान वो है जो किसी से धोका ना करे। ताजिर हो तो अपनी ऐबदार चीज़ को धोके से फरूख़्त ना करे। बल्के गाहक को इस ऐब पर मतलअ कर दे और यूं ना करे के किसी बहाने अपनी ऐदार चीज़ को फ़रोख़्त करके खुश होने लगे और घर में आकर अपने इस कारनामे पर फख्र करने लगे के लो भई। जो एक रद्दी थान दुकान में था। मैंने आज उसे बड़ी सफाई से निकाल दिया है और गाहक को पता तक नहीं चलने दिया।

हिकायत नम्बर(813) सलामती व आफियत

हज़रत हातिम असिम रहमत-उल्लाह अलेह ने एक शख़्स से पूछा। कैसे हो? उसने जवाब दिया। सलामत हूं और आफियत से हूँ। हातिम असिम

फ़रमाने लगे। भाई! पुल सिरात पर से गुज़र जाने के बाद तुम सलामत होगे। और जन्नत में दाखिल हो चुकने के बाद आफियत से होगे। पस तुम अपनी सलामती व आफियत की फिक्र में रहो। (कीमियाऐ सआदत, सफ़ा 216)

सबक़:- असल सलामती व आफियत आख़िरत की सलामती व आफियत है। दुनयवी सलामती व आफियत कोई हक़ीक़त नहीं। और जो अल्लाह के सच्चे बन्दे हैं। क़यामत के रोज़ की सलामती व आफियत की फ़िक्र में रहते हैं।

हिकायत नम्बर (814) अद्ल की बर्कत

बज़रचमहर ने अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की ख़िदमत में अपना एक ऐलची भेजा। ताके वो फारूक़े आज़म की सूरत व सीरत देख आए। वो ऐलची जब मदीना मुनव्वरह पहुँचा तो मुसलमानों से पूछा *ऐनल मलिकू* यानी तुम्हारा बादशाह कहाँ है? मुसलमानों ने कहा। हमारा बादशाह नहीं। हमारा अमीर है। और अभी अभी दरवाज़ा से बाहर तशरीफ़ ले गया है। ऐलची बाहर निकला। तो हज़रत फारूक़े आज़म को देखा के धूप में सो रहे हैं। दुर्रा सर के नीचे रखा है। और पैशानी नूरानी से ऐसा पसीना बहा है के ज़मीन तर हो गई है। जब ये हाल देखा तो उसके दिल में बड़ा असर हुआ। और दिल में कहने लगा के तमाम जहान के बादशाह जिसकी हैबत से लर्ज़ा बरइंज़ाम हैं। ताज्जुब है के वो इस सादगी से ज़मीन पर सो रहा है। फिर कहने लगा ऐ मुसलमानों के अमीर! आपने अद्ल किया। इस वजह से बे खटके सोए और हमारा बादशाह ज़ुल्म करता है। तो हरासाँ रहता है। मैं गवाही देता हूँ के आपका दीन सच्चा है। (कीमियाऐ सआदत, सफ़ा 267)

सबक़:- हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह पेकर अद्लो इंसाफ थे। और सारी दुनिया पर आपका रौब व दबदबा क़ायम था। और आप तकल्लुफात से दूर और सादगी पसंद थे। और ये भी मालूम हुआ के जो हाकिम ज़ुल्मो सितम से काम लेते हैं वो कभी सुख चैन और इतमिनान नहीं पाते।

हिकायत नम्बर (815) करामत

सरज़मीने शाम में एक अब्दाल का इन्तिक़ाल हो गया। तो हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह सरज़मीने इराक़ से फौरन वहाँ पहुँच गए और फिर हज़रत ख़िज़र अलेहिस्सलाम और दीगर अब्दाल भी पहुँच गए और

सबने उसका जनाज़ा पढ़ा। और फिर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने हज़रत ख़िज़र अलेहिस्सलाम से कहा के क़सतनतुनिया में फ़लाँ शख़्स जो काफिर है। उसे यहाँ ले आईये। चुनाँचे हज़रत ख़िज़र अलेहिस्सलाम उसी वक़्त उस काफिर को ले आए। हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने उसे कलमा पढ़ा कर मुसलमान किया। और उसकी मूंछें पस्त कीं और अपनी एक ही नज़र से उसे फौरन मुक़ामे अब्दाल तक पहुँचा दिया और फिर सारे अब्दालों से फ़रमाया के विसाल पा जाने वाले अब्दाल की जगह मैं इसे मुक़र्रर करता हूँ। सब ने सर तसलीम खम कर दिया। (शरह मुस्लिम अलसबूत, सफ़ा 626, तमता)

सबक़:- हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह की ये करामत है के पल भर में इराक़ से शाम पहुँच गए और फिर एक काफिर को क़सतनतुनिया से पल भर में वहाँ मंगवा लिया और फिर अपनी एक ही नज़र से उसे कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया। इसी लिए शायर ने लिखा है के....

ना किताबों से ना कालिज के है दर से पैदा
दीन होता है बुज़ुर्गों की नज़र से पैदा

हिकायत नम्बर(816) ग़ुलाम खलील

एक शख़्स ग़ुलाम खलील नामी बुज़ुर्गाने दीन का बड़ा मुखालिफ था। और बुज़ुर्गों के खिलाफ हर वक़्त बक्ता रहता था। उस ज़माने में बग़दाद शरीफ में हज़रत समनून रहमत-उल्लाह अलेह की विलायत का बड़ा चर्चा था। ग़ुलाम खलील हज़रत समनून के खिलाफ था और चाहता था के कोई ऐसी बात मिले, जिससे मैं उन्हें बदनाम कर सकूं। इत्तिफाक़न एक मालदार औरत हज़रत समनून के पास आई और उनसे दरख़्वास्त की के हज़रत समनून उससे निकाह कर लें। हज़रत समनून ने इस बात से इंकार कर दिया। वो औरत ग़ुलाम खलील के पास पहुँची। और इन्तिक़ाम लेने की ख़ातिर उसने हज़रत समनून पर इलज़ाम लगा दिया। ग़ुलाम खलील तो इस ताक में था ही। फौरन खलीफा-ए-वक़्त के पास पहुँचा और हज़रत समनून के खिलाफ बहुत कुछ कह कर खलीफा को भड़का दिया। यहाँ तक के खलीफा ने हज़रत समनून को बुलाकर हुक्म दिया के कल उन्हें क़त्ल कर दिया जाए। रात को जब वो सोया। तो ख़्वाब में देखा के कोई कह रहा है। खबरदार! अगर समनून को क़त्ल किया तो तेरा मुल्क बर्बाद हो जाएगा। खलीफा जब बेदार हुआ तो फौरन समनून की खिदमत में हाज़िर होकर माफी चाही। और बड़ी इज़्ज़त के साथ रिहा कर दिया। ग़ुलाम खलील ने ये बात देखी तो मारे

हसद के और भी जलने लगा। और आख़िर उम्र में मर्ज़ कोढ़ में मुब्तला हो गया। (तज़्करत-उल-औलिया, सफ़ा 522)

सबक़:- अल्लाह वालों के हासिद ख़्वाह म ख़्वाह हसद की आग में जलते रहते हैं। और अल्लाह वालों की शान को घटाने के दरपे रहते हैं। मगर खुद ही जल जल कर और कोढ़ी होकर मर जाते हैं।

हिकायत नम्बर(817) बेटा

हज़रत अबु बक्र वराक़ का एक बेटा था। जो क़ुरआन पढ़ने मक्तब जाया करता था एक दफा वो सबक़ पढ़कर घर आया। तो रो रहा था। बाप ने पूछा, बेटा रोते क्यों हो। उसने जवाब दिया अब्बा जान! क़ुरआन पाक की ये आयत रूला रही है *यौमा यजअलुल विलदाना शीबा*, यानी एक रोज़ वो होगा। जिसकी हैबत से लड़के भी बूढ़े हो जायेंगे। पस वो लड़का इस आयत के ख़ौफ से बीमार हो गया और फौत हो गया। (तज़्करत-उल-औलिया, सफ़ा 541)

सबक़:- अल्लाह वालों की सोहबत से उनकी औलाद भी खुदा तरस और आक़्बत अंदेश होती हैं और ये भी मालूम हुआ के क़ुरआने पाक में बड़ी तासीर और ज़ोर है। बशर्त ये के पढ़ने वाला उसे समझे भी।

हिकायत नम्बर(818) नसीहत

हज़रत अब्दुल्लाह हफीफ रहमत-उल्लाह अलेह से किसी ने आकर कहा के हुज़र! शहर मिस्र में एक बूढ़ा मुराक़्बे में बैठा है। जो अपना सर उठाता ही नहीं। हज़रत अब्दुल्लाह को शौक़ पैदा हुआ और वहाँ पहुँचे। उन्होंने बूढ़े को देखा जो रू बक़िबला होकर मुराक़्बे में था। हज़रत अब्दुल्लाह ने सलाम किया। उसने जवाब ना दिया। उन्होंने फिर सलाम किया फिर जवाब ना दिया। उन्होंने तीसरी मर्तबा सलाम किया और कहा। तुम्हें खुदा की क़सम के मेरे सलाम का जवाब दो, बूढ़े ने सर उठाया और कहा:

ऐ अब्दुल्लाह! दुनिया थोड़ी है और इस थोड़ी से थोड़ी ही बाक़ी रह गई है। इस थोड़ी से तुम हिस्सा बड़ा हासिल करने की कोशिश करो। पर शायद तुम बेफिक्र हो के इतनी दूर से मेरे सलाम को यहाँ आए हो।

ये कह फिर सर झुका लिया। हज़रत अब्दुल्लाह ने वहीं उसके साथ ज़ोहर व अस्र की नमाज़ पढ़ी और फिर अर्ज़ की के मुझे कुछ नसीहत कीजिए बूढ़े ने कहा ऐसे शख़्स की सोहबत इख़्तियार करो। जिसका दीदार तुझे खुदा की याद दिला दे। और हक़ तआला की शौकत दिल में पैदा कर दे। और

फिर सर झुका लिया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 568)

सबक़:- अल्लाह वाले इस दुनिया को बहुत हक़ीर और थोड़ी समझते हैं। और कोशिश में लगे रहते हैं। के दम ग़नीमत है इस फ़ुर्सत में आक़्बत के लिए कुछ बना लिया जाए और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों की सोहबत बड़ी मुफ़ीद है और अल्लाह वाले वो हैं जिनके दीदार से खुदा याद आ जाता है।

हिकायत नम्बर(819) हज़रत शिबली अलेह अर्रहमा

हज़रत शिबली अलेह अर्रहमा के ज़माने के लोग आपको दीवाना व मजनूँ समझते थे। हालाँके आप अपने ज़माने के लोगों में आक़िल तर थे। एक रोज़ आप अबुबक्र मुजाहिद के पास जो इस ज़माने के जय्यद उल्मा में थे। तशरीफ़ लाए, अबुबक्र आपको देखते ही उठ खड़े हुए। और आपकी पैशानी पर दोनों आँखों के दरमियान बोसा दिया। और बड़ी ताज़ीम के साथ आपको अपने पास बिठा लिया। बहुत से उल्मा जो अबुबक्र के पास बैठे थे। उन्होंने कहा के आप शिबली के लिए उठे क्यों? और उनकी ताज़ीम क्यों की। जब के अहले बग़दाद उन्हें दीवाना और मजनूँ कहते हैं।

अबुबक्र ने जवाब दिया के मैंने खुद ब खुद ऐसा नहीं किया। बल्के मैंने वो किया है जो के रसूले करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को उनके साथ करते देखा है। यानी आज रात को मैंने ख़्वाब में देखा के शिबली हज़रत रसूले करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के हुज़ूर में आए तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उन्हें देखकर खड़े हो गए। और उनकी आँखों के दरमियान में बोसा देकर अपने पहलू में बिठा लिया। मैंने अर्ज़ किया। या रसूल अल्लाह! आप शिबली के साथ ऐसा करते हैं। ये किस वजह से इस क़द्र ताज़ीम का मुसतहिक़ हो गया? हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया के वो हर नमाज़ के बाद ये आयत पढ़ता है। *लक़द जाआकुम रसूलुन मिन अनफ़ुसीकुम अज़ीज़ुन अलेही मा अनित्तुम हरीसुन अलेकुम बिलमौमिनीना रऊफ़-उर-रहीम* और उसके बाद मुझ पर दुरूद पढ़ता है। हज़रत शाह अब्दुलहक़ मोहद्दिस देहलवी रहमत-उल्लाह अलेह की किताब मुसतताब मर्ज-उल-बहरैन सफ़ा 45)

सबक़:- अल्लाह वालों की शाखें बड़ी बुलंद होती हैं और उन बुज़ुर्गों को बारहगाहे रिसालत मआब सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम में रसाई हासिल हुई है। और ये भी मालूम हूआ के ये दुनियादार अफ़्राद उन

अल्लाह वालों को दीवाना व मजनूँ भी कह दिया करते हैं। मगर उनका ऐसा कहना उनकी अपनी नादानी का मुज़ाहेरा होता है। और ये भी मालूम हुआ के खुश अक़ीदा उल्मा इक्राम पर हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम अपना करम फ़रमाते हैं और अपनी ज़ियारत से मुशर्रफ़ फ़रमा कर उन्हें हक़ायक़ का इल्म भी अता फ़रमा देते हैं। और जो "उल्मा" उन अल्लाह वालों की अज़मत के क़ायल ना हों, वो ना खुश अक़ीदा हैं ना खुश क़िसमत और वो ताज़ीम व क़याम पर एत्राज़ करने लगते हैं और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम अपनी उम्मत के आमाल से आज भी बा ख़बर हैं। जो उनकी याद में रहे। और उन पर दुरूद पढ़े हुज़ूर उसकी इस याद व मोहब्बत की क़द्र फ़रमा कर उसकी पैशानी को चूम कर उसे बेपनाह सर बुलंदी अता फ़रमा देते हैं। और ये भी मालूम हुआ के ये सारी दौलत इर्फ़ान आँख वालों को मिलती है और। अैन

दीदा-ए-कोर को क्या आए नज़र क्या देखे

हिकायत नम्बर(820) खुदा की ज़मानत

बनी इस्राईल में एक शख़्स को हज़ार अशर्फ़ियों की ज़रूरत पड़ी। तो वो एक शख़्स के पास गया। और उससे एक हज़ार अशर्फ़ियाँ बतौर क़र्ज़ माँगीं उसने कहा। के क़र्ज़ मैं देता हूँ। मगर कोई गवाह लाओ। उसने कहा के खुदा का गवाह होना काफी है।

क़र्ज़ देने वाले ने कहा। तू किसी ज़ामिन को ले आओ। उसने कहा। के ज़मानत भी खुदा ही की काफी है। क़र्ज़ देने वाला बोला। तूने सच कहा। ये लो मैं तुम्हें खुदा की ज़मानत पर एक हज़ार अशर्फ़ियाँ क़र्ज़ देता हूँ। फलाँ मुद्दत तक मेरी ये रक़म अदा कर देना।

उस शख़्स ने एक मुद्दत मुतय्यन करके हज़ार अशर्फ़ियाँ क़र्ज़ लीं। और फिर सौदागरी के लिए समुंद्र पार चला गया। और जब वो अपने काम से फ़ारिग़ हुआ। तो मुद्दत मुक़र्रा को क़र्ज़ वापस करने के लिए जहाज़ की तलाश में साहिल पर आया। ताके वक़्त पर वापस पहुँच कर क़र्ज़ अदा कर सके। मगर उसे कोई जहाज़ ना मिला।

फिर उसने एक लकड़ी को लिया। और उसे कुरैद कर उसमें सूराख किया। और उसके अन्दर एक हज़ार अशर्फ़ी भर एक ख़त क़र्ज़ देने वाले के नाम लिखा। और वो खत भी लकड़ी के अन्दर रखा। फिर उस लकड़ी को समुंद्र के किनारे लाया और कहा।

ऐ अल्लाह! तू जानता है के मैंने फलाँ शख़्स से तेरी ज़मानत पर एक हज़ार अशर्फियाँ क़र्ज़ ली थीं। वो शख़्स तेरी ज़मानत पर राज़ी हो गया था। अब चूंके क़र्ज़ की मुद्दत ख़त्म हो रही है। और मुझे कोई जहाज़ नहीं मिला ताके मैं उसका क़र्ज़ वापस कर सकूं। अब मैं तुझ को ये अमानत सपुर्द करता हूँ। उसने क़र्ज़ तेरी ज़मानत पर दिया था। और मैं ये क़र्ज़ तेरी अमानत में देता हूँ। ये रक़म उस तक पहुँचा दे।

ये कहकर वो लकड़ी समुंद्र में बहा दी। और खुद वापस चला आया।

उधर क़र्ज़ देने वाला मुद्दत ख़त्म होने पर साहिल पर इस उम्मीद पर आया। के शायद वो सौदागर मेरा क़र्ज़ लेकर वापस आया हो। उसने समुंद्र में देखा तो एक लकड़ी बहती हुई किनारे आ लगी। उसने उस लकड़ी को निकाला। और जलाने की नीयत से घर ले आया। जब उसे चीरा तो अन्दर से एक हज़ार अशर्फियाँ और एक ख़त निकला।

एक मुद्दत के बाद वो सौदागर जब वापस आया। तो इस खयाल से के शायद वो लकड़ी उसे ना मिली हो। एक हज़ार अशर्फियाँ लेकर उसके पास आया। और कहा खुदा की क़सम मैं तुम्हारा क़र्ज़ अदा करने के लिए जहाज़ की तलाश में रहा। मगर अफसोस के मुझे जहाज़ ना मिल सका। ये लो एक हज़ार अशर्फियाँ।

क़र्ज़ देने वाले ने पूछा। मगर ये बताओ के क्या तुम ने मेरी तरफ़ कोई ख़त लिखकर मुझे कुछ भेजा था? उसने कहा। हाँ जब मैंने कोई जहाज़ ना पाया। तो एक लकड़ी को कुरेद कर उसमें हज़ार अशर्फियाँ भर कर और एक ख़त उसमें डाल कर अल्लाह की अमानत व हिफाज़त में वो लकड़ी तुझे मैंने भेजी थी। वो बोला।

तो सुन लो। मुझे वो लकड़ी पहुँच चुकी है। और मेरा सारा माल मुझे मिल चुका है। अब ये हज़ार अशर्फियाँ तुम वापस ले जाओ। (बुखारी शरीफ, जिल्द 1, सफ़ा 306)

सबक़:- रास्त बाज़ी और दयानत दारी बड़ी अच्छी चीज़ है। जो शख़्स अल्लाह पर भरोसा करे। और ईफाऐ अहद की पाबंदी करे। तो वो कभी घाटे में नहीं रहता। ये भी मालूम हुआ के जायज़ ज़रूरत पर किसी भाई से क़र्ज़ ले लेना जायज़ है। और क़र्ज़ के लिए एक मुद्दत मुक़र्रर करना चाहिए। और फिर जब मुद्दत ख़त्म हो तो क़र्ज़ अदा कर देना चाहिए। और अपने अहदो पैमान को पूरा करने की कोशिश करना चाहिए। ना ये के लेने वाले देने से बे फिक्र हो जायें। और देने वाला लेने से मायूस हो जाए। "क़र्ज़ हस्ना" इसी

का नाम है। के जायज़ ज़रूरत पर लो और वक़्त मुक़र्रर पर वापस कर दो। मगर आज "क़र्ज़ हस्ना" का मानी लोग शायद ये करते हैं के देने वाला माँगे तो "हंसता।"

और ये भी मालूम हुआ के देने वाले की नीयत दुरूस्त हो। तो अल्लाह तआला कोई ना कोई सबब पैदा फ़रमा देता है। और क़र्ज़ अदा हो जाता है। और ये भी मालूम हुआ के पहले लोगों की अपने अल्लाह पर नज़र थी। और उनकी नीयतें बड़ी साफ और नेक थीं। आज हमें भी उनकी तरह बनना चाहिए।

हिकायत नम्बर(821) बेनियाज़ी

एक बार हारून अलरशीद कूफे में आया। और उसने वहाँ के क़ारियों की फेहरिस्त मुरत्तब की। ताके उन सबको दो दो हज़ार दरहम दिए जायें। ये अतिया तक़सीम करने के लिए फेहरिस्त पढ़ी जा रही थी।

हज़रत दाऊद बिन नसीर अबु सुलेमान का नाम भी पढ़ा गया। मगर ये ग़ैर हाज़िर थे। हारून अलरशीद ने जब उनकी ग़ैर हाज़री की वजह दरयाफ़्त की। तो मालूम हुआ के उनको इत्तिला नहीं दी गई। हारून अलरशीद ने हुक्म दिया के ये रक़म उनकी ख़िदमत में पहुँचा दी जाए।

हज़रत दाऊद बिन नसीर बड़े ज़ाहिद और क़नाअत पैशा बुज़ुर्ग थे। और वो कभी किसी रईस की मजलिस में ना गए थे। उनकी खिदमत में दो हज़ार दरहम की रक़म पहुँचाने पर इब्ने समाक और हम्माद को मामूर किया गया। ये साहब हज़रत दाऊद की बे ऐतनाई से वाक़िफ थे। उन्हें खदशा पैदा हुआ के शायद वो ये अतिया क़बूल ना करें। इसलिए दोनों ने सलाह की के नादार शख़्स पर ज़ोर व जवाहर की कसरत बड़ा असर करती है। लिहाज़ा ये रक़म थेली में पेश करने की बजाए उनके सामने बखैर दी जाए।

चुनाँचे इन हज़रात ने दाऊद की खिदमत में पहुँच कर थेली उलट दी। और उनके सामने दरहम बखैर दिए। ताके आँख से देखने का दिल पर भी असर पड़े और ये नादाद बुज़ुर्ग उनको क़बूल कर लें।

हज़रत दाऊद फ़ौरन समझ गए। और फ़रमाया।

"ये चालें तो बच्चों के साथ खेली जाती हैं। और मैं बच्चा नहीं हूँ। अफसोस के मैं ये रक़म लेने से मअज़ूर हूँ।"

ये कहकर वो रक़म वापस कर दी। (याद माज़ी, सफ़ा 57)

सबक़:- अल्लाह वाले दुनयवी माल से बड़े बेनियाज़ होते हैं। और दरहम व दीनार को देखकर खुश होना बच्चों का काम समझते हैं। और ये भी मालूम

हुआ के पहले ज़माने के बादशाह उल्मा व सुलहा और बुज़ुर्गों से बड़ी अक़ीदत रखते थे। और अपना रुपया अच्छे लोगों में तक़सीम करने के आदी थे।

हिकायत नम्बर (822) क़सतात

गवरनर मिस्र हज़रत उमर बिन अलआस रज़ी अल्लाहो अन्ह को जब इसकंद्रिया की फतह की ख़बर पहुँची उन्होंने इसकंद्रिया जाने की तैयारी की। तो ज़रूरी सामान जमा करते हुए आपने अपना खैमा भी उखाड़ने का हुक्म दिया। सिपाही खैमा उखाड़ रहे थे के हज़रत उमरो बिन अलआस की नज़र ख़ैमे के अन्दर एक घोंसले पर पड़ी। जो एक कबूतर का आशयाना था। आपकी नज़र जब इस पर पड़ी तो आपने सिपाहियों को खैमा उखाड़ने से रोक दिया। और फ़रमाया के इस ख़ैमा को ना गिराओ। ताके हमारे मेहमान को तकलीफ ना हो।

चुनाँचे सिर्फ एक कबूतर के आराम व आसायश की ख़ातिर उसे बेघर ना करने के लिए इस ख़ैमे को वहीं छोड़ दिया गया। और फिर हज़रत उमरो बिन अलआस रज़ी अल्लाहो अन्ह ने वापसी पर उसी जगह शहर तामीर करने का हुक्म दिया। जिस का नाम इस कबूतर के इस ख़ैमे की निसबत से "क़सतात" मशहूर हो गया। क़सतात अरबी ज़बान में ख़ैमे को कहते हैं। ये शहर क़सतात आज तक मुसलमानों के हुस्ने अख़लाक़ की गवाही दे रहा है। (तारीख़े इस्लाम, सफ़ा 149)

सबक़:- मुसलमानों का हुस्ने अखलाक़ इतना बुलंद व बाला रहा है। के परिंदे भी उनके हाथों मामून थे। फिर अगर आज कल कोई मुसलमान अपने भाई पर ही ज़ुल्मो सितम करने पर आमादा होने लगे। तो कितनी बुरी बात है। पस हमें चाहिए के मुसलमान के हाथों कोई मुसलमान परेशान ना हो।

हिकायत नम्बर (823) तवाज़ो

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ी अल्लाहो अन्ह एक रात रिजा बिन हयात से गुफ़्तगू फ़रमा रहे थे। दफ़अतन चिराग़ झिलमिलाने लगा। उस वक़्त क़रीब ही एक मुलाज़िम सो रहा था। रिजा ने कहा। उसको जगा दें। आपने फ़रमाया। नहीं सोया रहने दो। मैं खुद उठकर चिराग़ ठीक करता हूँ। रिज़ा ने कहा। मैं ठीक कर दूंगा। आपने फ़रमाया। मेहमान से काम लेना मुरव्वत के खिलाफ़ है।

चुनाँचे आप चादर रखकर खुद ही उठे। बर्तन से ज़ैतून का तेल

निकाला। और चिराग़ में डाला। उसे ठीक करके लौटे। तो फ़रमाया, भाई घर के काम काज से अगर कोई घबराए या अपनी बे इज़्ज़ती समझे तो समझो वो बहुत बुरा आदमी है। जब मैं उठा था। तब भी उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ था। जब लौटा हूँ। तब भी उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ही हूँ। (याद माज़ी, सफ़ा 93)

सबक़:- सच्चे मुसलमान चाहे कितने बड़े ओहदे पर फायज़ हो जायें। तवाज़ो का दामन नहीं छोड़ते। और अपने मातहत अफ़राद को भी इंसान ही समझते हैं। और उन पर कभी ज़ियादती नहीं करते। और उनकी राहत व असायश का हर वक़्त खयाल रखते हैं। और ये भी मालूम हुआ के अपना काम आप कर लेना हमारे बुज़ुर्गों का शीवा था। ये नहीं के हर काम के लिए अलग अलग नौकर रखे जायें। और अपने घर का काम खुद करने में ऐब समझा जाए। खुद हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम अपना काम आप कर लिया करते थे। और बुज़ुर्गों के पेशे नज़र यही असवा-ए-हस्ना है।

हिकायत नम्बर (824) रोना

सलीम बिन मनसूर रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं। मैंने ख़्वाब में अपने मरहूम वालिद हज़रत मनसूर बिन अम्मार रहमत-उल्लाह अलेह को देखा। और पूछा।

अब्बा जान! आपके साथ अल्लाह तआला ने कैसा सलूक फ़रमाया? तो उन्होंने फ़रमाया। बेटा! खुदा ने मुझे अपने सामने बुला कर फ़रमाया। ऐ मनसूर! जानते हो, मैंने तुम्हारी मग़फिरत क्यों फ़रमाई? मैंने अर्ज़ किया। नहीं या अल्लाह! मैं नहीं जानता। फ़रमाया। एक रोज़ मजलिसे वअज़ में तुम ने ऐसा वअज़ सुनाया। के उस मजलिस में मेरा एक ऐसा गुनहगार बन्दा भी था। जो उम्र भर मेरे ख़ौफ से कभी ना रोया था। उस रोज़ तुम्हारा वअज़ सुनकर मेरे ख़ौफ से वो भी रोने लगा। पस उसके रोने से मेरी रहमत जोश में आई। और मैंने उसे और उसके सदक़े में सारी मजलिस को भी और तुझे भी बख़्श दिया। (शरह अलसदूर-उल-इमाम सयूती, सफ़ा 118)

सबक़:- अल्लाह के डर से रोना बड़ी अच्छी बात हैं उससे गुनाह माफ हो जाते हैं। और ये भी मालूम हुआ के बख़्शे हुओं के सदक़े में दूसरे गुनहगार भी बख़्शे जाते हैं। इसलिए अल्लाह वालों की मेहफिल में ज़रूर बैठना चाहिए। ताके किसी अल्लाह के मग़फूर बन्दे के तुफ़ैल हमारा काम भी बन जाए।

हिकायत नम्बर (825) असतग़फार

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमत-उल्लाह के साहबज़ादे ने ख़्वाब में अपने मरहूम वालिदे माजिद को देखा। और पूछा, अब्बा जान! आपने कौन सा अमल सब आमाल से अफ़ज़ल पाया? तो उन्होंने जवाब दिया। बेटा! अल्लाह से डर कर अपने गुनाहों की माफी चाहते रहना। (शरह अलसदूर, सफ़ा 120)

सबक़:- अल्लाह से डरते रहना और अपने गुनाहों की माफी माँगते रहना चाहिए।

हिकायत नम्बर (826) सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अलसालेह रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं। मैंने एक मोहद्दिस को ख़्वाब में देखा। और उनसे पूछा। खुदा ने आपके साथ क्या सलूक किया है? तो उन्होंने फ़रमाया। खुदा ने मेरी मग़फिरत फ़रमा दी है। मैंने पूछा। किस बात के सदक़े में? तो फ़रमाया। मैं अपनी तहरीरों में हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के नाम के साथ "सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम" लिखता रहा। उसके सदक़े में अल्लाह ने मेरी मग़फिरत फ़रमा दी है। (शरह अलसदूर, सफ़ा 120)

सबक़:- मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का नाम नामी सुनकर या लिखकर जो शख़्स हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम पर दुरूद शरीफ पढ़े और लिखेगा वो अल्लाह तआला की मग़फिरत व रहमत का हक़दार होगा। और ये भी मालूम हुआ के जो शख़्स हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का नाम नामी लिखकर "सल्लअम" या "स्वाद" लिखता है और पूरा दुरूद शरीफ नहीं लिखता। वो गोया अपनी मग़फिरत भी पूरी नहीं चाहता।

हिकायत नम्बर (827) मोहब्बत औलिया

हज़रत क़ासिम बिन मुनबह रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं। मैंने ख़्वाब में हज़रत बशर हाफी अलेह अर्रहमा को देखा और पूछा। अल्लाह तआला ने आपसे क्या सलूक फ़रमाया? तो फ़रमाया अल्लाह तआला ने मुझ से फ़रमाया। ऐ बशर! मैंने तुझे बख़्श दिया। और जो लोग तेरे जनाज़े में शरीक हुए। उन्हें भी बख़्श दिया। मैंने अर्ज़ किया। इलाही! और हर उस शख़्स को भी बख़्श दे जिसको मुझ से मोहब्बत है। खुदा ने फ़रमाया *वलिकुल्ली मिन अहब्बाका* और क़यामत तक के हर उस शख़्स को भी बख़्श दिया। जिसे तुम से मोहब्बत है। (शरह अलसदूर, सफ़ा 120)

सबक़:- अल्लाह वालों की मोहब्बत से आदमी बख़्शा जाता है। इसलिए उन पाक लोगों से मोहब्बत रखना चाहिए। और उनके बुग़्ज़ व हसद से बचना चाहिए।

हिकायत नम्बर(828) ईसाले सवाब

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अलसालेह रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं, अबु नवास को ख़्वाब में देखा गया। और वो बहुत अच्छी हालत में था। उससे पूछा गया के अलह तआला ने तुम से क्या सलूक फ़रमाया? तो कहने लगा। के मैं था तो गुनहगार। मगर हमारे क़ब्रिस्तान में एक रात कोई अल्लाह का मक़्बूल आया। और उसने अपनी चादर बिछा कर दो रकअत नफिल पढ़े। और दोनों रकअत में "कुल हुवल्लाहू अहद" एक हज़ार मर्तबा पढ़कर उन दो नफिलों का सवाब क़ब्रिस्तान वालों को बख़्शा। पस उस अल्लाह के मक़्बूल के इस ईसाले सवाब से अल्लाह तआला ने सब क़ब्रिस्तान वालों को बख़्श दिया। और मैं भी बख़्शा गया। (शरह अलसदूर, सफ़ा 120)

सबक़:- मालूम हुआ के कुछ पढ़कर या कोई दूसरा नेक अमल करके मसलन कुछ पका कर मसाकीन को खिला के उसका सवाब मईयत को बख़्शा जाए। तो मईयत को उससे फायदा पहुँचता है। इसलिए अमवात के लिए ज़रूर कुछ पका कर या पढ़कर उसका ईसाले सवाब करना चाहिए।

हिकायत नम्बर(829) अदाऐ क़र्ज़

हज़रत मैमून कुर्दी अलेह अर्रहमा फ़रमाते हैं। मैंने हज़रत उरवत बिन बज़ार रहमत-उल्लाह अलेह को उनके विसाल के बाद दूसरे दिन ख़्वाब में देखा। उन्होंने मुझ से फ़रमाया। के फलाँ शख़्स जो लोगों को पानी पिलाता है उसका एक दरहम मेरे ज़िम्मे है। मेरे घर के फलाँ ताक़ में मेरा एक दरहम रखा है। अज़राहे करम आप उस ताक़ से वो दरहम लेकर उस पानी पिलाने वाले को दे दें। ताके मैं क़र्ज़ से सबुकदोश हो जाऊँ। हज़रत मैमून फ़रमाते हैं। मैं जब ख़्वाब से बैदार हुआ। तो उस शख़्स को बुलाया। और उससे पूछा के हज़रत उरवत बिन बज़ार को क्या तुम्हारा कुछ देना था? उसने बताया। के हाँ एक दरहम मेरा उनके ज़िम्मे है।

फरमाते हैं। फिर मैं हज़रत उरवा के घर आया। और उनके बताऐ हुए ताक़ को देखा। तो वहाँ एक दरहम रखा था। चुनाँचे मैंने वो उठाया। और उस पानी पिलाने वाले को दे दिया। (शरह अलसदूर, सफ़ा 116)

सबक़: अदाऐ क़र्ज़ बहुत ज़रूरी अम्र है। और अल्लाह वाले अपना क़र्ज़ विसाल के बाद अदा कर देते हैं। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले अपने विसाल के बाद बाख़बर रहते हैं। और इस दुनिया में रहने वालों को फ़ायदा पहुँचाते हैं।

हिकायत नम्बर(830) सलाम

हज़रत अब्दुल आला रहमत-उल्लाह अलेह हज़रत इब्ने अबी बिलाल रहमत-उल्लाह अलेह की बीमारी का सुनकर उनकी अयादत को गए। और उनकी नाज़ुक़ हालत देखकर कहने लगे। ऐ इब्ने अबी बिलाल! हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम से मेरा सलाम अर्ज़ करना और अगर मुमकिन हो तो मुझे मतला करना के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम से मेरा सलाम अर्ज़ कर दिया है। या नहीं?

चुनाँचे हज़रत इब्ने अबी बिलाल का विसाल हो गया। और तीन दिन के बाद इब्ने अबी बिलाल अपनी बीवी को ख़्वाब में मिले। और फ़रमाया अब्दुल आला को जानती हो? वो बोलीं, नहीं! फ़रमाया। उनका पता लेकर मेरा पैग़ाम उन्हें पहुँचा दो। के मैंने आपके सलाम हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम तक पहुँचा दिया है। और हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने व अलेकुम अस्सलाम फ़रमाया है। (शरह अलसदूर, सफ़ा 115)

सबक़:- मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम आज भी अपनी उम्मत का सलाम क़बूल फ़रमाते हैं। और जवाब भी देते हैं।

और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले विसाल के बाद भी ज़िन्दा होते हैं।

हिकायत नम्बर(831) चार बातें

हज़रत हातिम असिम रहमत-उल्लाह अलेह से किसी ने पूछा। हुज़ूर! आपने सारी उम्र किस तरह बसर की? आपने फ़रमाया। चार बातों में।

1- एक तो ये के मैं ने यक़ीन के साथ जान लिया के अल्लाह तआला की नज़र से मैं एक लम्हा भी ग़ायब नहीं रह सकता। पस इस यक़ीन के बाद मुझे शर्म व हया आने लगी। के उसके सामने मैं उसकी कोई नाफ़रमानी करूं।

2- दूसरे ये के मैंने यक़ीन के साथ जान लिया के मेरी क़िस्मत में जो रिज़्क़ है उसका ज़िम्मा ख़ुदा ने ले लिया है। और वो बहरहाल मुझे पहुँचकर रहेगा। पस मैं अपने रिज़्क़ की तरफ़ से बे फ़िक्र हो गया।

3- तीसरे ये के मैंने यक़ीन के साथ जान लिया के जो फ़रायज़ मेरे ज़िम्मे

लगाए गए हैं वो बजुज़ मेरे दूसरा कोई और अदा नहीं कर सकता। पस मैं इन फ़रायज़ की अदायगी की तरफ़ हमा तन मशग़ूल हो गया।

4- चौथे ये के मैंने यक़ीन के साथ जान लिया। के एक रोज़ मुझे ज़रूर मरना है। और दूसरी दुनिया में बहरहाल जाना है। पस मैं दूसरी दुनिया को अपने लिए अच्छा बनाने की कोशिश में लग गया। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 168)

सबक़:- हर शख़्स को ये चार बातें पेशे नज़र रखना चाहियें। ताके इंसान गुनाहों से बच कर और अपने फ़रायज़ अदा करके अपनी आक़बत को संवार सके।

हिकायत नम्बर(832) ख़्वाहिशे नफ़्स

हज़रत अबु त्राब नख़्शी रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं। के मैं एक रोज़ सफर में था। तो मेरे नफ़्स ने ये ख़्वाहिश की के आज अगर कहीं से रोटी के साथ तला हुआ अंडा मिले। तो लुत्फ आ जाए। फ़रमाते हैं। थोड़ी देर के बाद मैं एक गाँव में पहुँचा। तो एक शख़्स दौड़ता हुआ मेरे पास आया। और उसने मुझे पकड़ लिया। और शौर मचाने लगा। के ये भी चोरों के साथ था। लोग जमा हो गए और मुझे दुर्रे मारने लगे। सत्तर दुर्रे मार चुके तो एक शख़्स ने मुझे पहचान लिया। और उसने कहा। ऐ नादानो! ये तो हज़रत अबु त्राब नख़्शी हैं।

चुनाँचे वो सब बड़े शर्मिंदा हुए। और मुझ से माफी माँगने लगे। फिर एक शख़्स मुझे बड़ी इज़्ज़त के साथ अपने घर ले गया। और मेरे लिए खाना ले आया। मैंने देखा। के खाने में रोटी और तला हुआ अंडा भी है। मैंने अपने नफ़्स को मुख़ातिब करके कहा।

"ले सत्तर दुर्रे खा लेने के बाद अब रोटी और तला हुआ अंडा खा ले" (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 168)

सबक़:- नफ़्स इंसान का दुश्मन है। और उसकी ख़्वाहिश पर चलने से इंसान को ज़लील होना पड़ता है। जो लोग नफ़्स पर क़ाबू पाकर ख़्वाहिशाते नफ़्स से बाज़ रहते हैं। वो कामयाब रहते हैं।

हिकायत नम्बर(833) दोनों जहाँ

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं। मेरे सामने दुनिया अपनी ज़ाहिरी ज़ैब व ज़ीनत और अपनी शैहवात के साथ ज़ाहिर हुई। तो मैंने उससे मुंह फैर लिया। फिर मेरे सामने आख़िरत अपने हूरो क़सूर और ज़ीनत व बर्कत के साथ ज़ाहिर

हुई। तो मैंने उससे भी मुंह फैर लिया।

इतने में हातिफ़ से निदा आई। तुम अगर दुनिया को क़बूल कर लेते तो हम तुम्हें बर्कात आख़िरत से महरूम कर देते। और अगर तुम आख़िरत को क़बूल कर लेते। तो हम तुम्हें अपनी ज़ात से महरूम कर देते। मगर अब सुनो! के हम तुम्हारे हैं। और दीन व दुनिया के दोनों जहाँ भी हम ने तुम्हारे कर दिए। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 168)

सबक़:- अल्लाह वालों के पेशे नज़र सिर्फ़ ज़ात हक़ होती है और उन्हें अपने ख़ालिक़े हक़ीक़ी से प्यार होता है। और उसके नतीजे में वो खुदा के हो जाते हैं तो सारी खुदाई उनकी हो जाती है। और उनके दोनों जहान संवर जाते हैं।

हिकायत नम्बर(834) "से" और "को"

हज़रत अहमद इब्ने ख़िज़्रविया अलेह अर्रहमा फ़रमाते हैं मैंने ख़्वाब में रब्बे तआला का इर्शाद सुना। खुदा तआला ने फ़रमाया।

या अहमद कुल्लिन्नास यतलबूना मिनल बायज़ीद फइन्नहू यतलबनी

"ऐ अहमद! हर शख़्स मुझ "से" माँगता है। मगर बायज़ीद बसतामी मुझ "को" माँगता है।" (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 168)

सबक़:- अल्लाह वालों की नज़र में दुनिया की कोई हक़ीक़त नहीं। और वो दोनों जहानों की नअेमतों को ज़ाते हक़ के सामने कुछ नहीं समझते। और अपने मौला से सिर्फ़ अपने मौला ही के तालिब होते हैं।

हिकायत नम्बर(835) बदला

हज़रत इब्ने असअद याफई शाफई अलेह अर्रहमा फ़रमाते हैं मैं एक शहर में गया। तो पत चला के वहाँ एक बुज़ुर्ग का मज़ार है। जिसकी ज़ियारत के लिए लोग दूर दूर से आते हैं।

चुनाँचे मैं भी इस मज़ार पर गया। और फातिहा पढ़ी। और फिर लोगों से साहिबे मज़ार का हाल दरयाफ़्त किया। तो लोगों ने बताया के इस शहर में एक ग़रीब शख़्स रहता था। वो बमीार हो गया। और वफात पा गया। यहीं के एक शख़्स ने अपनी गिरह से उसके लिए कफ़न खरीदा। और उसे कफ़न पहनाया। रात को उस कफ़न पहनाने वाले ने ख़्वाब में देखा। के वही ग़रीब शख़्स अपनी क़ब्र से निकला। और एक बेहतरीन रेशमी हल्ला उसके हाथ में है। उसने वो रेशमी हल्ला उस शख़्स को दिया। और कहा। ये तुम्हारे कफ़न पहानाने का बदला है। ले लो। चुनाँचे जब वो जागा। तो वो रेशमी हल्ला

उसके पास मौजूद था। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 169)

सबक़:- अल्लाह वाले बअज़ अवक़ात छुपे रहते हैं। और उनका पता नहीं चलता। इसलिए किसी को हिक़ारत की नज़र से नहीं देखना चाहिए। और ये भी मालूम हुआ के उन अल्लाह वालों और ग़रीबों की मदद करने वाला बड़ा अच्छा फल पाता है। और ये भी मालूम हुआ के बुज़ुर्गों के मज़ारात पर दुर दूर से आना [illegible]तदा ही से मुसलमानों का दस्तूर है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले विसाल पा जाने के बाद भी अहले दुनिया में रहने वालों की मदद फ़रमाते हैं।

हिकायत नम्बर(836) मुसाफिर मदीना

हज़रत अबु इमरान वास्ती रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं। के मैं हज से फारिग़ होकर मदीना मुनव्वरह की तरफ़ रवाना हुआ। ताके सरवरे आलम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की क़ब्र अनवर की ज़ियारत करूं। रास्ते में पानी ख़त्म हो गया। और शिद्दत प्यास से बेहद तंग हो गया। फिर चारों तरफ़ से मायूस होकर मैं एक दरख़्त के नीचे बैठ गया। अचानक मैंने देखा के एक सब्ज़ पोश घोड़े पर बैठा हुआ तशरीफ़ लाया। उसके हाथ में सब्ज़ ही रंग का पियाला था। और पियाला में पानी भी सब्ज़ ही रंग का था। उसने मुझे वो पियाला दिया। और मैंने जी भर के पानी पिया। मैंने देखा। के पियाले से पानी कुछ भी कम नहीं हुआ। सब्ज़ पोश ने मुझ से पूछा। कहाँ जा रहे हो। मैंने कहा। हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम और सिद्दीक़े अक्बर और फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्हुमा की बारगाह में सलाम अर्ज़ करने मदीना मुनव्वरह जा रहा हूँ। सब्ज़ पोश ने कहा। जब वहाँ पहुँचो और सलाम अर्ज़ करो। तो हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम और सिद्दीक़ व फारूक़ रज़ी अल्लाहो अन्हुमा से अर्ज़ करना *रिज़्वानुन युक़्रिऊकुमुस्सलाम* रिज़्वान जन्नत सलाम अर्ज़ करता है। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 185)

सबक़:- मदीना मुनव्वरह का सफा बड़ा ही मुबारक है। और मुसाफिर मदीना के ख़ादिम रिज़्वान जन्नत भी हैं। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर(स०अ०स०) के वज़ीरों सिद्दीक़ व फारूक़ रज़ी अल्लाहो अन्हुमा की बहुत बड़ी शान है। और जन्नत वाले भी उन पर सलाम भेजते हैं। पस उनसे अनाद जन्नत व अहले जन्नत से अनाद है।

हिकायत नम्बर(837) अल्लाह के शेर

हज़रत सय्यदी इब्ने मसऊद रज़ी अल्लाहो अन्हु अकाबिर औलिया से हैं।

आप जंगल में रहते थे। एक शख़्स ने एक बैल नज़्र माना जब वो खूब मोटा ताज़ा हो गया तो उसके लेकर हज़रत की ख़िदमत में चला। बैल ताज़ा बहुत था। रास्ते में छूट गया। हर चन्द तलाश किया मगर ना मिला। ख़ैर मायूस होकर लौट आया। एक और शख़्स के उसके पास एक बैल था। तमाम खेती बाड़ी का काम उसी से लेता था। निहायत नहीफ़ व लाग़िर हो गया था। लेकर हाज़िर हुआ। अर्ज़ किया। हुज़ूर! मेरे रिज़्क़ का ज़रिया यही बैल है। दुआ फ़रमाईये। ये बैल दुबला बहुत है। इसमें ताक़त आ जाए। आपके पास शेर बैठे थे। एक को इशारा फ़रमाया। वो गया। और उस बैल का शिकार किया। और कुछ खाया। वो बैल ख़त्म हो गया। ये शख़्स अपने दिल में कहने लगा। मैं अच्छी दुआ कराने आया था। के मेरा दुबला बैल भी हाथ से गया। थोड़ी देर में एक अच्छा मोटा ताज़ा बैल आया। जो उस आदमी से छूट गया था। और सामने आकर मौद्दिब खड़ा हो गया। फ़रमाया। उसके बदले में ये बैल ले ले। उसने ले तो लिया। लेकिन दिल में ये ख़तरा गुज़रा के ये शेर हज़रत की खिदमत में बैठे हैं। हज़रत के सामने तक तो कुछ नहीं बोलते। यहाँ से फिर मुझे और इस बैल को खा लेंगे। आपको उसके इस ख़तरे पर इत्तिला हो गई। और क्यों ना हो। जो अल्लाह को जानता है उससे कोई शै पौशीदा नहीं।

फरमाया। शेरों से डरते हो। अब उनके दिल में ये खयाल आया। के मालूम नहीं किस का बैल है। कोई पूछे तो क्या कहूंगा। खुद ही फ़रमाया तुम से कोई ना बोलेगा। और शेर को इशारा फ़रमाया। वो उनके साथ कुत्ते की तरह हो लिया। और उनकी और उनके बैल की हिफाज़त की। आबादी के क़रीब आकर वो शेर वापस चला गया। (मलफ़ूज़ात अला हज़रत, जिल्द 4, सफ़ा 410)

सबक़:- अल्लाह वाले अल्लाह के शेर होते हैं। औरये जंगल के शेर उनके ग़ुलाम। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों पर दिलों के ख़तरात व खयालात मुनकशिफ हो जाते हैं। फिर जो उन अल्लाह वालों के भी सरदार हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के मुतअल्लिक़ यूं लिखे और कहे के उन्हें पीठ पीछे की भी ख़बर ना थी। तो उसकी बेख़बरी और गुमराही में क्या शक हो सकता है।

हिकायत नम्बर(838) इल्म की बर्कत

एक रोज़ शैतान लईन इंसान की शक्ल बनकर एक ऐसे आबिद की राह में खड़ा हो गया जो आलिम ना था। आबिद साहब तहज्जुद की नमाज़

के बाद फज्र की नमाज़ के लिए मस्जिद की तरफ़ तशरीफ़ लाए। तो रास्ते में इबलीस खड़ा था। सलाम अलेकुम व अलेकुम अस्सलाम। हज़रत! मुझे एक मसला पूछना है। आबिद साहब ने फ़रमाया। जल्द पूछो, मुझ नमाज़ को जाना है। शैतान ने अपनी जैब से एक छोटी सी शीशी निकाली। और पूछा। क्या अल्लाह तआला क़ादिर है के इन सारे आसमानों और ज़मीन को इस छोटी सी शीशी में दाख़िल कर दे। आबिद साहब ने सोचा और कहा। कहाँ आसमान और ज़मीन और कहाँ ये छोटी सी शीशी। शैतान ने कहा। बस इतना ही पूछना था। तशरीफ़ ले जाईये।

शैतान ने अपने लश्कर शयातीन से कहा। देखो इस जाहिल आबिद की मैंने राह मार दी। उसको अल्लाह की कुद्रत पर ही ईमान नहीं। इबादत किस काम की।

तुलू आफ़्ताब के क़रीब एक आलिम जल्दी करते हुए तशरीफ़ लाए। उसने कहा। अस्सलाम अलेकुम व अलेकुम अस्सलाम। मुझे एक मसला पूछना है। उन्होंने फ़रमाया। पूछो। जल्द पूछो। नमाज़ का वक़्त बहुत कम है। उसने वही सवाल किया। आलिम साहब ने फ़रमाया। मलऊन तू इबलीस मालूम होता है। अरे वो क़ादिर है के ये शीशी तो बहुत बड़ी है एक सूई के नाके के अन्दर अगर चाहे तो करोड़ों आसमान व ज़मीन दाखिल कर दे। *इन्नल्लाहू अला कुल्ली शैइन क़दीर।*

आलिम साहब की तशरीफ़ ले जाने के बाद शैतान ने अपने लश्कर से कहा। देखा ये इल्म की बर्कत है। (मलफ़ूज़ात, जिल्द 3, सफ़ा 21)

सबक़:- इल्म बड़ी दौलत है। और बग़ैर इल्म के आबिद भी ख़तरे में रहता है। लिहाज़ा हासिल करना चाहिए। और आबिद खुद आलिम ना हो। उसे उल्मा की सोहबत व मोहब्बत पैदा करनी चाहिए। वरना जो आबिद खुद भी आलिम ना हो। और उल्मा से दूर भी रहता हो। वो शैतान के फंदे में फंस जाने के ख़तरे से दो चार समझिये। ये भी मालूम हुआ के शैतान अपना सब से बड़ा दुश्मन वाले यानी "मोलवी" को समझता है।

हिकायत नम्बर(839) दुआ में एक हाथ

हज़रत ज़ुलनून मिस्री रहमत-उल्लाह अलेह ने एक दफा दुआ में सर्दी के सबब सिर्फ एक हाथ बाहर निकाला था। इलहाम हुआ, एक हाथ उठाया। हमने इसमें रख दिया जो रखना था। दूसरा हाथ उठाता तो उसे भी भर देते। (मलफ़ूज़ात, जिल्द 1, सफ़ा 84)

सबक़:- अल्लाह से दुआ बड़े ख़लूस और एहतिमाम से माँगनी चाहिए। और इस उम्मीद पर के इस बारगाह में जो हाथ उठेगा कभी खाली ना लौटेगा।

हिकायत नम्बर(840) बुज़ुर्गों का फ़ैज़

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमत-उल्लाह अलेह बीमार हुए तो आपका क़ारोरा एक नसरानी तबीब के पास गया। वो तबीब क़ारोरे को बग़ौर देखता रहा। फिर दफ़अतन कहा।

अशहदू अन लाइलाहा इल-लल्लाहू व अशहदू अन्ना मोहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू

लोगों ने सबब पूछा। तो कहा। मैं देखता हूँ। ये क़ारोरा ऐसे शख़्स का है जिसका जिग्र इश्के इलाही ने कबाब कर दिया है। (मलफ़ूज़ात, जिल्द, सफ़ा 85)

सबक़:- अला हज़रत अलेह अर्रहमा ने ये हिकायत लिखकर उससे जो सबक़ हासिल होता है। उन लफ़्ज़ों में लिखा है। के अल्लाहू अक्बर! इन बुज़ुर्गों का बोल वो हिदायत करता है। जो दूसरों का क़ौल नहीं करता।"

हिकायत नम्बर(841) भेड़ और शेर

एक भेड़ बड़ी ऊँची छत पर खड़ी थी। नीचे एक शेर गुज़र रहा था। भेड़ ने उसे देखकर गालियाँ देनी शुरू कर दीं। शेर ने गालियाँ सुनीं। तो कहने लगा। तेरी क्या मजाल तू मुझे गालियाँ दे। ये तो छत मुझे गालियाँ दे रही है। यानी छत पर होने से तू बेबाक हो गई है। (मिरक़ात-उल-अदब)

सबक़:- किसी दुनयवी, ओहदे पर फायज़ होकर कोई शख़्स "मोलवी" को गालियाँ देता है। तो उसकी क्या मजाल। के वो ऐसा करे। वो तो उसका ओहदा उसे बेबाक कर देता है।

हिकायत नम्बर(842) एक नेक बीबी

एक शख़्स एक क़ब्रिस्तान में गया। और एक क़ब्र के पास बैठ गया। और थोड़ी देर में ग़ाफ़िल हो गया। ख़्वाब में देखता है के एक बी बी इस क़ब्र में से फ़रमाती हैं।

ऐ खुदा के बन्दे! इस बला को मेरे पास से दूर कर जो थोड़ी देर में आने वाली है। उसकी फौरन आँख खुल गई। देखा के एक क़ब्र वहीं खुद रही है। और सामने से एक जनाज़ा जो किसी रईस का था। चला आ रहा है। उसने सब को मना किया। के ये जगह ठीक नहीं है। खराब है। ऐसी है, वैसी है।

ग़र्ज़ वो लोग बाज़ रहे और दूसरी जगह इस मईयत को ले गए। शब को उस शख़्स ने ख़्वाब में देखा के वो बी बी फ़रमाती हैं के खुदा तुझे जज़ाऐ ख़ैर दे। के तूने आग को मेरे पास से दूर किया। (मलफ़ूज़ात अला हज़रत, सफ़ा 83, जिल्द 1)

सबक़:- अल्लाह के नेक बन्दे इन्तिक़ाल के बाद भी ज़िन्दा रहते हैं। और इइस आलम के हालात से बाख़बर और ये भी जानते हैं। के किसी मरने वाले से क़ब्र में क्या होने वाला है।

हिकायत नम्बर(843) एक बुज़ुर्ग

एक बुज़ुर्ग का इन्तिक़ाल हो गया। उनकी साहबज़ादी क़ब्र पर रोज़ाना हाज़िर होतीं। और तिलावत क़ुरआने अज़ीम किया करतीं। कुछ मुद्दत गुज़रने के बाद वो जोश जाता रहा। एक रोज़ हाज़िर ना हुईं। शब को ख़्वाब में तशरीफ़ लाए। फ़रमाया। ऐसा ना करो। आओ और मेरे मवाजहा में खड़ी हो जाओ। यहाँ तक क तुम्हें जी भर के देख लूं। फिर मेरे लिए दुआऐ रहमत करो और फिर चली जाओ। (मलफ़ूज़ात, सफ़ा 89, जिल्द 1)

सबक़:- अल्लाह वाले अपने इन्तिक़ाल के बाद भी देखते और सुनते हैं और अपने मुतअल्लिक़ीन के हालात से बाख़बर रहते हैं और ये भी मालूम हुआ के क़ब्र पर फातिहा ख़्वानी के लिए जाना साहिबे क़ब्र के लिए मौजिब राहत होता है। और जो नहीं जाते। वो अपने मरने वाले के लिए मौजिब कल्फत बनते हैं।

हिकायत नम्बर(844) हक़ गो

एक साहब विलायत ने हज़रत मेहबूबे इलाही क़ुद्स अल्लाह सरह-उल-अज़ीज़ की बारगाह में हाज़री का मंज़िल दूरदराज़ से क़सद फ़रमाया। राह में जिससे हज़रत मेहबूबे इलाही साहब का हाल दरयाफ़्त फ़रमाते लोग तारीफ ही करते। उन्होंने अपने दिल में कहा। मेरी मेहनत ज़ाये हुई। के ये अगर हक़ गो होते लोग ज़रूर उनके बदगो भी होते। जब देहली क़रीब रही। उन्होंने लोगों से पूछा। अब मज़म्मते सुनीं। कोई कहता वो देहली का मक्कार है। कोई कुछ कहता। उन्होंने कहा। *अलहम्दू लिल्लाह* मेरी वसूल हुई। (मलफ़ूज़ात, सफ़ा 50, जिल्द 1)

सबक़:- अल्लाह के नेक बन्दे हक़ गो होते हैं और उनकी हक़ गोई की वजह से कई मुखालफीन हक़ उनकी बदगोई करने लगते हैं। पस कोई पीर या आलिम जिस सब अच्छा कहें और कोई भी उसके खिलाफ ना हो।

—

समझ लीजिए के वो हक़ बो नहीं। बल्के उसका नानक शाही मसलक है जो ये कहता है के मेरे लिए सारे अच्छे हैं। मैं किसी को बुरा नहीं कहता।

हिकायत नम्बर(845) कुश्ती

हज़रत बहा-उल-हक़ वालदैन ख़्वाजा नक़्शबंदी रज़ी अल्लाहो अन्ह बुखारा में हज़रत अमीर कलाल रज़ी अल्लाह अन्ह का शौहरा सुनकर खिदमत में हाज़िर हुए। आपको देखा। के मकान के अन्दर ख़ास लोगों का मजमा है। अखाड़े में कुश्ती हो रही है। हज़रत भी तशरीफ़ फ़रमा हैं। और कुश्ती में शरीक हैं। हज़रत ख़्वाजा नक़्शबंद आलिम जलील पाबंद शरीअत। उनके क़ल्ब ने कुछ पसंद ना किया। हालाँके के कोई नाजायज़ बात ना थी। ख़तरा आते ही ग़नूदगी तारी हो गई। देखा के मारका-ए-हश्र बरपा है। उनके और जन्नत के दरमियान एक दलदल का दरया हायल है। ये उसके पास जाना चाहते थे। दरया में उतरते ज़ोर करते। जितना ज़ोर करते धंसते जाते। यहां तक के बग़लों तक धंस गए। अब निहायत परेशान के क्या जाए। इतने में देखा के हज़रत अमीर कलाल तशरीफ़ लाए। और एक हाथ से दरया के उस पार कर दिया। आपकी आँख खुल गई। क़ब्ल उसके के ये कुछ अर्ज़ करें। हज़रत अमीर कलाल ने फ़रमाया। हम अगर कुश्ती ना लड़ें तो ये ताक़त कहाँ से आए। ये सुनकर फौरन क़दमों पर गिर पड़े। और बैत की। (मलफ़ूज़ात, सफ़ा 30,जिल्द 4)

सबक़:- अल्लाह वाले मुश्किल के वक़्त अपने ग़ुलामों के काम आते हैं। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के वली दिली ख़तरात पर आगाह हो जाते हैं। और ये भी मालूम हुआ के कुश्ती लड़ने के लिए शर्त ये है के सतर ना खुले। और नमाज़ की पाबंदी भी मलहूज़ रहे जैसा के आला हज़रत ने इस हिकायत की इब्तिदा में तशरीह फ़रमाई है।

हिकायत नम्बर(846) जेल खाना

हज़रत इमाम दाऊद ताई रहमत-उल्लाह तआला अलेह जो हज़रत इमाम अबु हनीफा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के शार्गिदों में से थे। बड़े ज़ाहिद और पारसा थे। उनका जब इन्तिक़ाल हुआ। तो बअज़ सालेहीन ने ख़्वाब में देखा के दाऊद ताई निहायत खुशी के साथ हश्शाश बश्शाश दौड़ते हुए जा रहे हैं। उन्होंने आपको कभी इस हाल में ना देखा था। पूछा कैसा है? क्यों दौड़े जा रहे हो। फ़रमाया। अभी जेलखाने से छूटा हूँ। ख़बर पाई के वही वक़्त

इन्तिक़ाल का था। (मलफ़ूज़ात, सफ़ा 31, जिल्द 4)

सबक़:- ये दुनिया एक जेलखाना है। जैसा के हदीस में वारिद है के *अद्दुनिया सजनिल मोमिन व जन्नातिल काफ़िर।* दुनिया मोमिन के लिए जेखाना है। और काफ़िर के लिए बाग़। पस ये अल्लाह वाले दुयिा से रूख़सत हो तो समझते हैं के जेलखाने से रिहाई पाई। इसीलिए शायर ने लिखा है....

कौन कहता है के मोमिन मर गए
क़ैद से छूटे वो अपने घर गए

हिकायत नम्बर(847) तलब सादिक़

एक साहब सब सज्जादों में घुमे हुए। मुजाहिदे रियाज़तें किए हुए। हज़रत शाह आले मोहम्मद रज़ी अल्लाहो अन्ह मारहिरा शरीफ़ की ख़िदमत में हाज़िर हुए। और शिकायत की के इतने बरसों से तलब में फिरता हूँ। मक़सूद हासिल नहीं होता। फ़रमाया ठहरो। एक हुजरे में ठहराया। ख़ादिम को फ़रमाया। उन्हें मछली खाने को दी जाए। और पानी का एक क़तरा ना दिया जाए। और बाद खाना खाने के फौरन हुजरा बाहर से बन्द कर दिया जाए। ख़ादिम ने मछली दी। जब वो खा चुके, फौरन ज़ंजीर बन्द कर दी। अब ये अन्दर से चिल्लाते हैं। चीखते हैं के मुझे पानी दिया जाए। मगर कौन सुनता है। सुबह को हुज़ूर नमाज़ के वास्ते तशरीफ़ लाए। ख़ादिम ने हुजरा खोला। खोलते ही पानी पर जा गिरे। और जिस क़द्र पिया गया। खूब पिया। नमाज़ के बाद हज़रत ने फ़रमाया। ख़ैरियत है अर्ज़ किया। हुज़ूर रात तो ख़ादिमों ने मार ही डाला था के मुझे ऐसी गर्मी में अव्वल तो मछली खाने को दी। दूसरे एक क़तरा पानी का ना दिया। और प्यासा ही हुजरे में बन्द कर दिया। फ़रमया फिर रात कैसी गुज़री। अर्ज़ किया। जब तक जागता रहा। पानी का खयाल। जब सोया सिवाये पानी के और कुछ ना देखा। फ़रमाया तलब सादिक़ इसका नाम है। कभी ऐसी तलब भी की थी जिसकी शिकायत करते हो। (मलफ़ूज़ात, सफ़ा 34, जिल्द 4)

सबक़:- तलबे सादिक़ हो। तो आदमी कामयाब हो जाता है। वरना शिकायत करना के अजी हमें तो कोई रहबर मिला ही नहीं महेज़ नफ़्स का धोका है।

हिकायत नम्बर(848) नूरानी ख़्वाब

औलिया इक्राम में से अल्लाह के एक वली बीमार हो गए। वो खुद फ़रमाते हैं के मेरा मर्ज़ जब शिद्दत इख़्तियार कर गया और मरे मुतअल्लिक़ीन

व मुतवस्सलीन मेरी सेहत से मायूस हो गए तो मैंने जुमअे की रात को ख़्वाब में देखा। के एक नूरानी वजूद मेरे पास तशरीफ़ लाया। और मेरे सिरहाने बैठ गया। और फिर उसके बाद और भी बहुत से लोग मेरे घर दाखिल हुए। वो लोग घर में दाखिल होते वक़्त परिंदो की मिस्ल थे। और जब बैठ गए तो इंसानों की शक्ल में हो गए इसी तरह कई लोग अन्दर आते रहे और मैं देखता रहा। जब सब लोग अन्दर आ गए तो इस नूरानी वजूद मसऊद ने अपना सर मुबारक उठाया। और फ़रमाया। मैं इस शहर में तीन आदमियों की अयादत के लिए आया हूँ। एक तो उसकी अयादत के लिए इशारा मेरी तरफ़ फ़रमाया। दूसरी "सालेह ख़ुलक़ानी" के लिए मैं हज़रत सालेह ख़ुलक़ानी के नाम से पहले वाकिफ ना था। और तीसरे एक औरत के लिए फ़रमाया। और इस औरत का नाम ना लिया। फिर अपना हाथ मुबारक मेरी पैशानी पर रखकर फ़रमाया।

"बिस्मिल्लाही रब्बिलाहु हसबियल्लाहु तवक्कल्तू अलल्लाही ईतसम्तू बिल्लाही ला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह"

और फिर मुझ से फ़रमाया। ये दुआ अक्सर पढ़ते रहा करो।

इसलिए के इसमें हर मर्ज़ की शिफा और हर मुश्किल का हल मौजूद है। खुदा तआला ने जब अपना अर्श उठाने का *हमलत-उल-अर्श* फरिश्तों को हुक्म दिया। तो सबसे पहले उन्हें फरिश्तों ने ये दुआ पढ़ी थी। और आज तक यही दुआ पढ़ रहे हैं। और क़यामत तक यही पढ़ते रहेंगे। फिर इस नूरानी वजूद मसऊद की दायें जानिब जो साहब बैठे थे। वो बोले।

"या रसूल अल्लाह! अगर ये दुआ दुश्मन के मुक़ाबले में पढ़ी जाए तो? उन्होंने जवाब दिया। तो दुश्मन पर फतह हासिल होगी।"

अब मैं समझा के ये तो खुद हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम हैं। और दायें जानिब वाले साहब जिन्होंने ये सवाल किया। मैंने समझा। शायद ये हज़रत सिद्दीके अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह हैं। हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने मुझे फ़रमाया। ये मेरे चचा हज़रत हम्ज़ा हैं। फिर हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने अपनी बायीं जानिब इशारा फ़रमा कर फ़रमाया। ये सब शौहदा हैं। और फिर अपने पीछे इशारा फ़रमा कर फ़रमाया। ये सब औलिया हैं। फिर आप तशरीफ़ ले गए। और जब मैं जागा तो बिलकुल तनदुरूस्त था। जैसे के कभी बीमार ही नहीं हुआ। (रोज़-उल-रियाहीन-उल-इमाम अब्दुल्लाह इब्ने असअद याफई मतबुआ मिस्र, सफ़ा 188)

सबक़:- औलिया इक्राम की बहुत बड़ी शान है। इतनी बड़ी के उनमें

से कोई बीमार पड़ जाए तो उनकी अयादत के लिए खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम तशरीफ़ लाते हैं। और विसाल पा जाने के बाद ये खुश नसीब हज़रात सरवरे आलम सल-लल्लाहो अलेह वसल्लम के साथ रहते हैं। और ये भी मालूम हुआ के ला इलाज मरीज़ पर भी अगर हुज़ूर का करम हो जाए तो उसे शिफा मिल जाती है। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम अपनी उम्मत के जुमला हालात से आज भी बाख़बर हैं। और ये भी मालूम हुआ के जो दुआ हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाई है। ये दुआ बड़ी मुफीद है। और मर्ज़ व मुश्किल में पढ़ने से मर्ज़ दूर और मुश्किल हल हो जाती है। और दुश्मन के मुक़ाबले में पढ़ने से दुश्मन पर फतह हासिल हो जाती है। लिहाज़ा ये दुआ मुसलमानों को याद कर लेना चाहिए।

हिकायत नम्बर(849) खुदा का मेहमान

हज़रत अबु अलफतह रहमत-उल्लाह अलेह एक बार हज के लिए घर से निकले तो रास्ते में एक नो उम्र लड़का पा पियादा चलते देखा। हज़रत अबु अलफहत ने उससे पूछा। ऐ लड़के! कहाँ का इरादा है। उसने कहा। बैत-उल्लाह शरीफ का। अबु अलफतह ने फ़रमाया। तू कम उम्र है। और रास्ता बड़ा तवील है। क़दम तेरे छोटे और बैत-उल्लाह शरीफ यहाँ से बहुत दूर है। वो बोला। जनाब! क़दम उठाना मेरा काम और मंज़िल तक पहुँचाना उसका काम है। जिसने यूं फ़रमाया है।

वल्लज़ीना जाहिदू फीना लानहदीनाहुम सुबलना

हज़रत अबु अलफतह ने कहा। तुम्हारे पास खाने पीने का सामान भी नहीं है। वो बोला। या शेख! सच बताईये अगर कोई भाई आपको महमानी के तौर पर बुलाए तो क्या या लायक़ है के आप खाना अपने साथ ले जायें। वो बोले नहीं। उसने कहा। तो मेरे मौला जिल्ले शानाहू ने मुझे अपने घर बुलाया है। मेरे खाना पीना उसके ज़िम्मे है। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 140)

सबक़:- जिनके दिलों में अल्लाह तआला की लगन है। वो हर फिक्रो अंदेशे से बेनियाज़ रह कर अपने मौला की याद में मगन रहते हैं और अल्लाह तआला अपने मेहबूबों की मदद फ़रमाता है। और उनके लिए असबाब पैदा फ़रमा देता है।

हिकायत नम्बर(850) तारीफ

मक्का मोअज़्ज़मा में एक शख़्स एक शेख की मजलिस में उनकी तारीफ कर रहे थे और वो शेख़ खुश हो रहे थे। रावी को शुबह हुआ के शेख होकर

अपनी तारीफ से खुश होते हैं। उन्हें मकशूफ हुआ। और फी अलबदीहा फ़रमाया के भाई। अपने सानअे की तारीफ से खुश हो रहा हूँ। ये तारीफ बिलकुल ऐसी है जैसे कोई हर्फ की मदह करे। गो ज़ाहिर में वो हर्फ की मदह कर रहा है। लेकिन फी अलहक़ीक़त वो कातिब की मदह है। के क्या उम्दा कातिब है। जिसने ऐसा हर्फ बनाया। ऐसा ही ये शख़्स सानअे हक़ीक़ी की तारीफ कर रहा है। के क्या ही जामअे कमालात ज़ात है। जिसने ऐसे शख़्स को पैदा किया।

रावी कहते हैं के मुझ को फिर ये शुबह हुआ। के जब ख़ालिक़ हर शै का खुदा तआला है। तो मेरे दिल में जो ये वसवसा व ऐत्राज़ पैदा हुआ था। इस वसवसे को भी उसी ने पैदा किया है। फिर ये उसको क्यों दफे कर रहे हैं। उनको ये भी मुनकशिफ हो गया। फ़रमाया। शरवर को अल्लाह तआला की तरफ़ से मनसूब करना बे अदबी है। इसका नतीजा ये है के गोया हम बिलकुल बरी-उज़-ज़िम्मा हैं। हम से कुछ होता ही नहीं। मुज़तर हैं। फाईल मुख़्तार नहीं। शरवर को अपने नफ़्स की जानिब मनसूब करना चाहिए।

(देवबंदी हज़रात के हकीम-उल-उम्मत। मोलवी अशरफ़ अली साहब के मलफूज़ात हफ़्त अख़्तर, सफ़ा 39)

सबक़:- अल्लाह वाले दूसरों के दिल की बात भी जान लेते हैं। फिर अगर कोई शख़्स उन सब अल्लाह वालों के आक़ा व मौला सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के मुतअल्लिक़ यूं लिख दे के हुज़ूर को तो दीवार के पीछे का भी इल्म ना था तो ऐसा लिखने वाला कितना बड़ा बे ख़बर और जाहिल है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के नेक बन्दों की जितनी भी तारीफ की जाए। ये ग़ैर-उल्लाह की तारीफ नहीं होती। बल्के ये अल्लाह ही की तारीफ होती है। क्योंके उन साहिबे कमाल मक़्बूल बन्दों का ख़ालिक़ वही अल्लाह तआला है।

हिकायत नम्बर(851) लाइलाहा इल-लल्लाह

हज़रत मही-उद्दीन इब्ने अरबी रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के मुझे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ये हदीसे पाक पहुँची के जो शख़्स सत्तर हज़ार दफा लाइलाहा इल-लल्लाह पढ़े। खुदा तआला उसके गुनाह माफ फ़रमा देता है। चुनाँचे मैंने ये कलमा इतनी बार पढ़ लिया। और एक रोज़ मैं एक दावत में गया जहाँ एक साहब कशफ जवान भी मौजूद था। उस नोजवान के मुकाशफात का बड़ा चर्चा था।

चुनाँचे खाना खाते हुए वही नोजवान रोने लगा। मैंने उससे रोने की वजह पूछी तो उसने बताया। के मैंने अपने माँ बाप को क़ब्र में देखा है। के उन्हें

अज़ाब हो रहा है। उनको अज़ाब में देखकर रोने लगा हूँ। हज़रत मही-उद्दीन इब्ने अरबी फ़रमाते हैं के मैंने उसी वक़्त दिल ही दिल में अपने पढ़े हुए सत्तर हज़ार बार कलमा शरीफ को उसके माँ बाप को बख़्श दिया। मेरे बख़्शते ही वो नोजवान हंसने लगा। मैंने अब हंसने की वजह पूछी। तो कहने लगा के मेरे माँ बाप से अज़ाब टल गया है। और अब वो अज़ाब से मेहफूज़ हैं। हज़रत मही-उद्दीन इब्ने अरबी फ़रमाते हैं के हदीस की सेहत मुझे इस नोजवान के कशफ से मालूम हो गई। और नोजवान के कशफ की सेहत हदीस से मालूम हो गई। (शरह-उल-शिफा, सफ़ा 399, जिल्द 1)

सबक़:- कलमा शरीफ बड़ी बर्कत की चीज़ है। और उसे सिद्क़ दिल से पढ़ने वाला अज़ाब से बच जाता है। और ये भी मालूम हुआ के कुछ पका कर या पढ़ कर अगर उसका सवाब दूसरों को बख़्शा जाए। तो उन्हें उससे फायदा पहुँचता है। इसलिए मईयत के खवैश व अहबाब को चाहिए के वो कुछ पढ़कर ज़रूर उसे बख़्शा करें। और ये भी मालूम हुआ के किसी मरने वाले की फातिहा पढ़ने के लिए जाकर बजाए इसके फिज़ूल बातें करके अपना नामा-ए-आमाल भी सियाह किया जाए। चुनूँ पे कलमा शरीफ पढ़ते रहना बेहतर है। ताके अपना दफ़्तर भी काला ना हो। और उसको भी कुछ नफा हासिल हो।

हिकायत नम्बर (852) बन्दगी

हज़रत अब्दुल्लाह हफीफ रहमत-उल्लाह अलेह के दो मुरीद थे आप उनमें से एक को बहुत चाहते थे। और फख्र करते थे के हक़ीक़त में मेरा मुरीद यही है। दोस्तों ने पूछा के हुज़ूर! बैत तो आपकी दोनों ही ने की है। फिर आप एक से ज़्यादा मोहब्बत क्यों रखते हैं? फ़रमाया! लो मैं इसकी वजह तुम्हें बताता हूँ। आपने अपने दूसरे मुरीद को बुलाकर फ़रमाया। भई! मेरा ये ऊँट आज कोठे पर चढ़ा दो। वो बोला। हुज़ूर ऊँट तो कोठे पर चढ़ ही नहीं सकता। ऐसी अनहोनी बात का आप हुक्म दे रहे हैं। बात ऐसी कीजिए जो हो भी सके। फिर आपने अपने पहले मुरीद को बुलाया। और फ़रमाया। भई! मेरा ये ऊँट कोठे पर चढ़ा दो। उसने झट अपनी कमर कसी। और ऊँट के पीठ के नीचे अपने दोनों हाथ डाल कर उसे उठाने की कोशिश करने लगा। हज़रत अब्दुल्लाह ने फ़रमाया। बस! बस!! अब चले जाओ मुझे यही दिखाना था। के इरादात व गुलामी और बात का नाम है के हुक्म की तामील में "हो सकने या ना हो सकने का फलसफा दरमियान में ना लाए।" (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 570)

सबक़:- मालूम हुआ के बन्दे का काम ये है के अपने अल्लाह के हुकम के आगे सर तसलीमे खम कर दे। और जो लोग अपने फलसफा व साईंस को दरमियान लाकर सौ क़िस्म की हुज्जतें और चूँ व चरा करने लगते हैं। वो आदाब बन्दगी से ना आश्ना हैं। खुदा तआला ने बावजूद उसके कोई हुक्म ऐसा नहीं दिया। जो बन्दे से हो ना सकता हो। और फ़रमा दिया के *ला युकल्लीफुल्लाहू नफ़्सन इल्ला वुसअहा* फिर भी जो लोग गर्मियों के रोज़ों और अपनी दुनयवी मसरूफियात के बाइस पंज वक़्ता नमाज़ और *अला कलमत-उल-हक़* की ख़ातिर जिहाद वग़ैरा को मुश्किल समझें तो ऐसे लोग खुदा के बन्दे हर गिज़ नहीं हो सकते।

हिकायत नम्बर(853) मोहताज

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमत-उल्लाह अलेह के पास एक अमीर शख़्स पाँच सौ दीनार लाया और नज़्र पेश की। हज़रत जुनैद ने फ़रमाया के इन पाँच सौ दीनारों के सिवा तुम्हारे पास कुछ और भी है? उसने कहा। बहुत कुछ। आपने फ़रमाया। "बहुत कुछ" के होते हुए तुझे "और कुछ" की भी हाजत है? उसने कहा। हाँ है। फ़रमाया। तू इन दीनारों को तू ही ले जा। क्योंके मुझ से ज़्यादा तू उनका ज़्यादा मुसतहिक़ है। इसलिए के मेरे पास कुछ भी नहीं। और कुछ भी हाजत नहीं। और तेरे पास सब कुछ है। और फिर भी और कुछ की हाजत है। गोया असल में मोहताज तुम हो ना के मैं। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 439)

सबक़:- अल्लाह वाले साबिर व शाकिर, क़ानअे और दिल के ग़नी होते हैं। और अपने पास कुछ ना कुछ ना रखकर भी सब कुछ रखते हैं। और दुनिया वाले फक़ीर व मुफ़्लिस और मोहताज होते हैं के अपने पास सब कुछ रखकर भी कुछ नहीं रखते। और यही कहते हैं। के अभी थोड़ा है कुछ और मिले। अभी थोड़ा है कुछ और मिले। और इसी हर्स व तमअे ही में सारी ज़िन्दगी गुज़ार देते हैं। इसीलिए कहा गया के:

को ज़है चश्म हरीसाँ पुर ना शुद
नीज़ ये के
तवंगरी बदिल अस्त ना के बमाल

हिकायत नम्बर(854) अल्लाह की मर्ज़ी

हज़रत अबु उमर रहमत-उल्लाह अलेह ने अहद कर रखा था। के

मैं अल्लाह तआला की मर्ज़ी के खिलाफ कभी कोई चीज़ ना चाहूंगा। आपकी एक ही साहबज़ादी थी। आपने उसका निकाह अब्दुर्रहमान सलमी रहमत-उल्लाह अलेह से कर दिया था। इत्तिफाक़ से आपकी साहबज़ादी बड़ी बीमार हो गईं। तमाम तबीब उनके इलाज से आजिज़ रह गए। हज़रत अब्दुर्रहमान रहमत-उल्लाह अलेह ने कहा। के तुम्हारी बीमारी की सिर्फ एक ही इलाज है। और वो तुम्हारे वालिद के पास है। बीवी ने पूछा। वो क्या? फ़रमाया! के तुम्हारे वालिद अगर दुआ करें। तो तुम अच्छी हो सकती हो। चुनाँचे वो उसी वक़्त अपने वालिद हज़रत अबु उमर के पास पहुँचीं। और दुआ के लिए अर्ज़ की। हज़रत अबु उमर ने फ़रमाया। बेटी! मेरा अपने अल्लाह से अहद हो चुका है। के मैं उसकी रज़ामंदी के खिलाफ कभी कोई चीज़ ना चाहूंगा। और उसकी मर्ज़ी यही है के तुम अच्छी ना हो तो मुझ से बद अहदी क्यों कराती हो। बेटा! मरना तो एक दिन है ही। मेरी दुआ से अगर आज ना मरोगी। तो कल मर जाओगी। पस जो मरने वाला है। उसका मरना ही बेहतर है। "मेरी प्यारी बेटी! जाओ! और मुझे गुनहगार ना बनाओ। आपकी बेटी वापस आ गई। और समझी के अब मैं ना बचूंगी। मगर अल्लाह तआला ने अपना फज़्ल फ़रमाया और वो रूबसेहत होने लगीं। और चन्द ही दिनो में मुकम्मल सेहतयाब हो गईं।" (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 609)

सबक़:- अल्लाह वाले अल्लाह की मर्ज़ी पर राज़ी रहते हैं और अपनी मर्ज़ी को उसके सामने फना कर देते हैं। अल्लाह तआला उनकी इस अदा पर खुश होकर फिर उनकी मर्ज़ी पूरी फ़रमा देता है। और दुनिया वाले हर हाल में अपनी ही मर्ज़ी को सामने रखते हैं। और अल्लाह की मर्ज़ी पसंद नहीं करते। तो अल्लाह तआला अपनी ही मर्ज़ी करता है। और दुनिया वाले परेशान होकर मरने लगते हैं जिन्होंने अल्लाह तआला की मर्ज़ी को अपना लिया। उनके लिए खुदा ने फ़रमा दिया। *लाख़ौफुन अलेहिम वला हुम यहज़नून।*

हिकायत नम्बर (855) गधे

हज़रत उस्मान हैरी रहमत-उल्लाह अलेह बहुत बड़े अमीर घराने में से थे बचपन में आप बड़े क़ीमती लिबास में मलबूस जा रहे थे। नोकर चाकर आपके साथे। रास्ते में आप ने एक ज़खमी गधा देखा जिसकी पीठ ज़खमी थी और कव्वे उसकी पीठ से गोश्त नोच रहे थे। और बेचारा मजबूर था और

उनको उड़ा नहीं सकता था। हज़रत उस्मान को उस पर तरस आ गया। और अपने नौकरों को अपनी रेशमी क़बा उतार कर दी। और हुक्म दिया के ये इस गधे की पीठ पर उढ़ा दो। फिर आपने अपनी दसतार उतार कर उसके ज़ख़्म की जगज पर बांध दी। और चल दिए। गधे ने ज़बान हाल से बारगाहे हक़ में दुआ की। तो हज़रत की तबीयत में कुछ एसा इंक़िलाब आया के आप तलब मारफ़त में हज़रत याहिया बिन मआज़ रहमत-उल्लाह अलेह की मजलिस में पहुँच गए और उनकी नज़र से आरिफ़ कामिल बन गए। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 488)

सबक़:- जो लोग इंसानों के अलावा मजबूर व आजिज़ गधों पर भी लुत्फ़ो करम फ़रमाते थे। असल में वही इंसानियत के पैकर हैं और जो लोग जानवर तो बरतरफ़ इंसानों पर भी ज़ुल्म करते हैं। वो बराये नाम इंसान हैं असल में गधे हैं।

हिकायत नम्बर(856) खुदा का ख़ौफ

हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रहमत-उल्लाह अलेह रमज़ान शरीफ में दिन को घास लाकर बेचते और जो क़ीमत मिलती वो दुरवैशों में ख़ैरात कर देते और खुद तमाम रात सुबह तक नमाज़ पढ़ते रहते। लोगों ने पूछा के ये तो बताईये के इसकी क्या वजह है के आपको कभी नींद नहीं आती। आपने फ़रमाया के वजह यही है के दम भर आँखों का रोना बन्द नहीं होता है। अब तुम ही बताओ के जिनकी ये हालत हो। उनमें नींद का गुज़र कैसे हो सकता है और जब आप नमाज़ पढ़ चुकते तो अपने मुंह को हाथों से ढाँप लेते और फ़रमाते के मैं डरता हूँ के ऐसा ना हो के नमाज़ उल्टा कर मेरे मुंह पर मार दी जाए। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 115)

सबक़:- अल्लाह वालों के दिलो में अल्लाह का ख़ौफ रहता है और वो हर वक़्त खुदा की याद में लगे रहते हैं और वो लोग खुदा की इबादत करके अपनी इबादत पर नाज़ नहीं करते। बल्के अजज़ो नियाज़ ही इख़्तियार करते हैं।

हिकायत नम्बर(857) फिक्र इख़्तियारी

हज़रत इब्राहीम अदहम रहमत-उल्लाह अलेह को एक रोज़ खाने को कुछ ना मिला। आपने उसके शुक्राने में चार रकआत नफिल अदा किए। दूसरे रोज़ खाने को फिर कुछ ना पाया आपने फिर शुक्राने के चार नफिल

पढ़े। इसी तरह तीसरे रोज़ भी हुआ। और आप बहुत कमज़ोर हो गए। आपने अर्ज़ की। इलाही इबादत करने की ताक़त बाक़ी रहने के लिए कुछ अता हो जाए। तो खूब है। उसी वक़्त एक जवान आया और कहा के आपकी दावत है चलिए! आप उसके घर गए मेज़बान ने जब आपको बग़ौर देखा। तो चीख मार कर कहने लगा के मैं तो आपका ग़ुलाम हूँ। (हज़रत इब्राहीम बिन अदहम इससे पहले बड़े बादशाह थे) और जो कुछ मेरे पास है। सब कुछ आपकी ही का है। आपने फ़रमाया मैंने तुझे आज़ाद कर दिया और जो कुछ तुम्हारे पास है। तुझे बख्श दिया अब तू मुझे इजाज़त दे के मैं वापस जाऊँ। उसके बाद आपने अर्ज़ की। इलाही! मैंने तुझ से रोटी का एक टुकड़ा माँगा था। मगर तूने मेरे सामने इतनी दुनिया पेश फ़रमा दी। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 116)

सबक़:- अल्लाह वाले अगर चाहें तो जिस क़द्र चाहें माल दुनिया जमा कर लें। मगर माल दुनिया उन्हें मरग़ूब नहीं होता और उनका फिक्र फिक्र इख़्तियारी होता है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह ताअला अपने मक़्बूल बन्दों की दुआ फौरन सुनता है और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले मुश्किल व आज़माईश के वक़्त भी इबादत में कमी नहीं करते। बल्के और भी ज़ियादती इख़्तियार करते हैं।

हिकायत नम्बर(858) चार सवारियाँ

हज़रत इब्राहीम इब्ने अदहम अलेह अर्रहमा फ़रमाया करते थे मेरे पास चार सवारियाँ हैं। जब कोई नअेमत मिलती है तो शुक्र की सवारी पर सवार होकर खुदा के सामने जाता हूँ जब बन्दगी व इबादत का वक़्त आए। तो ख़लूस की सवारी पर सवार हो जाता हूँ। और जब कोई मुसीबत व बला नाज़िल होती है तो सब्र की सवारी पर सवार हो जाता हूँ। और जब कोई गुनाह हो जाता है तो तौबा व असतग़फार की सवारी पर सवार होकर उसके हुज़ूर पेश हो जाता हूँ।" (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 122)

सबक़:- अल्लाह वाले हमेशा सब्रो शुक्र, ईसार व खलूस और तौबा व असतग़फार को अपनाए रखते हैं। हमें भी इर चीज़ों को अपनाना चाहिए।

हिकायत नम्बर(859) बन्द को खोल

हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रहमत-उल्लाह अलेह से एक शख़्स ने अर्ज़ की के कुछ नसीहत फ़रमाईये आपने फ़रमाया: बन्द को खोल और खुले को बन्द कर। वो बोला हुज़ूर! मैं इसका मतलब नहीं समझा वज़ाहत फ़रमाईये

तो फ़रमाया के थेली का मुंह खोल दे और ज़बान को खुली से बन्द कर।" (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 121)

सबक़:- बुख्ल बहुत बुरी चीज़ है, और ज़बान को बे क़ाबू करके बे हूदा बातें इख़्तियार कर लेना भी बेहद बुरी चीज़ है। हमें अल्लाह वालों के नक़्शे क़दम पर चल कर सखावत पैशा बनना चाहिए और ज़बान को क़ाबू में रखना चाहिए।

हिकायत नम्बर (860) ग़ीबत

हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रहमत-उल्लाह अलेह एक दावत में गए। लोग एक शख़्स का इन्तिज़ार कर रहे थे। एक ने उनसे कहा। के वो बड़ा बद मिज़ाज आदमी है। हज़रत इब्राहीम बिन अदहम सुनकर फ़रमाने लगे। के ऐ लोगो! दस्तूर तो ये है के पहले रोटी खाते हैं। फिर गोश्त लेकिन तुम ने पहले गोश्त खाना शुरू कर दिया है। यानी ग़ीबत करने लगे हो। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 122)

सबक़:- ग़ीबत करना मुरदार का गोश्त खाने के बराबर है।

हिकायत नम्बर (861) अजज़ो बेचारगी

हज़रत बायज़ीद बस्तामी अलेह अर्रहमा ने एक मर्तबा फ़रमाया के खुदा के हुज़ूर ऐसी चीज़ पेश करो। जो उसके ख़ज़ाने में ना हो। मुरीदों ने अर्ज़ किया। हुज़ूर! भला वो कौन सी ऐसी चीज़ है। जो खुदा के ख़ज़ाने में ना हो। फ़रमाया बे चारगी, अज्ज़ और ख़्वारी व शिकस्तगी है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 189)

सबक़: अल्लाह तआला के सामने अजज़ो ख़्वारी इख़्तियार करने से अल्लाह की रहमत जोश में आ जाती है और तकब्बुर व ग़ुरूर से हमेशा अल्लाह का जलाल व अज़ाब नाज़िल होता है।

हिकायत नम्बर (862) अनानियत

हज़रत बायज़ीद बस्तामी अलेह अर्रहमा के दरवाज़े पर आकर एक शख़्स ने आवाज़ दी तो आपने पूछा किस को बुलाते हो? उसने कहा बायज़ीद को आपने फ़रमाया मैं बेचारे बायज़ीद को तीस बरस से ढूंड रहा हूँ। और पता नहीं लगता, हज़रत ज़ुलनून मिस्री अलेह अर्रहमा ने ये बात सुनी। तो फ़रमाया बा यज़ीद बस्तामी ख़ासाने खुदा की तरह हक़ तआला में ऐसे महू हो गए थे के उसमें गुम हो गए। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 190)

सबक़:- अल्लाह वाले अपने आपको बिलकुल मिटा और भुला देते हैं। और अनानियत का नामो निशान भी बाक़ी नहीं रहने देते। इसी लिए एक शायर ने भी लिखा है केः

तू को इतना मिटा के तू ना रहे
झूटी बातों की गुफ़्तगू ना रहे
आरज़ू-ए-विसाल है पर्दा
आरज़ू है के आरज़ू ना रहे

हिकायत नम्बर(863) पंदो निसाऐह

हज़रत उमर बिन अबदुल अज़ीज़ जब तख़्ते खिलाफ़त पर मुतमकिन हुए तो ख़्वाजा हसन बसरी को एक ख़त भेजा। जिसका मज़मून ये था मेरे दोस्त! तू जानता है के मैं एक बहुत बड़े काम में मुब्तला हुआ हूँ। मुझ को कुछ नसीहत कीजिए और अपने हम नशीनाने खुदा दोस्त में से एक को मेरे पास भेज दीजिए ताके उसकी मुसाहेबत से मुझे आसायश हासिल हो सके। जवाब में हज़रत हसन बसरी ने लिखा। अमीर-उल-मोमिनीन का नामा मुतालअे से गुज़रा और जो इशारा के इसमें किया गया था। वो समझ लिया। आपने जो फ़रमाया के इसकी मुसाहेबत से आसायश हासिल करूं। तो समझ ले जैसे शख़्स के तुझ को चाहिए वो तेरे नज़दीक ना आएगा और तुझ से फारिग़ होगा और जो शख़्स के तेरे पास आएगा ऐसे की तुझे ज़रूरत नहीं है। इसकी मुसाहेबत से तुझे कुछ आसायश व नफा हासिल ना होगा और जो के नसीहत के वास्ते लिखा है तो जान ले के जो कोई खुदा से डरता है। तमाम लोग उससे डरते हैं। और जो कोई खुदा से शर्म रखता है। लोग भी उससे शर्म रखते हैं। और जो कोई खुदा के हुज़ूर में गुनाहों पर दिलैरी का इज़हार करा है, तमाम लोग उस पर दिलैर हो जाते हें और जो कोई आज ऐमन है। कल को मख़्दूश होगा और जो आज मख़्दूश है कल को मामून होगा ओर जो कोई अपने आप पर मग़रूर होगा वो दुनिया और आख़िरत में माज़ूल होगा। दुनिया की तमाम नेकियों का निचोड़ सब्र करना है और सब्र का सवाब सब से ज़्यादा है। अपने तमाम कामों में खुदाऐ अज़्ज़ो जल की पनाह और मदद तलब कर, ताके तुझ को मदद मिले। और इस पर तवक्कल रख ताके कामों में तुझे किफायत करे। जो कोई आँख को आज़ाद करत। है के जो कुछ चाहे सौ देखे उसका अंदवा, दराज़ हो जाता है और जो कोई ज़बान को रिहा कर देता है के जो कोई चाहे सौ कहे वो गोया अपने आपको हलाक करता है।

ग़ालिबन ये मुख़्तसिर कलमात तेरी रहनुमाई और अमल करने के लिए काफी हैं। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 423)

सबक़:- बुज़रगाने दीन के इर्शादात पर अमल करना दीन व दुनिया की कामयाब के लिए ज़रूरी है। ये भी मालूम हुआ के जिनका ताल्लुक़ हाकिमे हक़ीक़ी से हो चुका है। वो कभी दुनयवी हाकिमों की एहतियाज नहीं रखते और जो खुदा तरस हाकिम हैं वो अल्लाह वालों की हिदायत के तालिब रहते हैं।

हिकायत नम्बर (864) दुआ

याक़ूब बिन लीस अमीर खरासान को एक बीमारी लाहक़ हाल हुई। तमाम तबीब उसका इलाज करने से क़ासिर व आजिज़ हो गए। किसी ने इस याक़ूब बिन लीस को कह दिया के आपकी विलायत में एक खुदा का नेक बन्दा मौजूद है, जिनका इस्मे ग्रामी सहल बिन अब्दुल्लाह है। और अगर आप उनको अपने पास बुलायें तो आपके लिए दुआ करेंगे। मुझे उम्मीद वासिक़ है के आपको सेहत कामिल अता होगी। पस अमीर खरासान ने उनको तलब करके कहा। मेरे लिए दुआ करो। हज़रह सहल रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया। मेरी दुआ तेरे हक़ में किस तरह क़बूल हो सकती है। हालाँके तू हमेशा ज़ुल्म करता रहता है ये सुनकर याक़ूब (अमीर खरासान) ने तौबा की नीयत की ज़ुल्म को तर्क करने का अहद किया। रूईय्यत के साथ हुस्ने सलूक का अहद किया। और क़ैदखाने से तमाम मज़लूमों को आज़ाद कर दिया। फिर हज़रत सहल रज़ी अल्लाहो अन्ह ने हाथ उठा कर दुआ माँगी।

"ऐ मुनइमे हक़ीक़ी जिस तरह तूने उसको गुनाहों की वजह से ज़िल्लत दिखाई थी। अब उसको ताअत की वजह से इज़्ज़त दिखा और उसकी मुश्किल को दूर कर।"

पस वो उसी वक़्त शिफायाब हुआ और उसी तरह बश्शाश नज़र आता था। जैसे के किसी के ग़मों का उक़्दा खुल जाता है फिर हज़रत सहल की खिदमत में बहुत सा माल बतौर नज़राना पेश किया। लेकिन उन्होंने क़बूल ना किया। जब आप वापस आए तो रास्ते में किसी ने अर्ज़ किया के काश आप वो पेश कर्दा माल लेकर फक़ीरों में तक़सीम कर देते। फिर आपने उस मैदान कंकरों की तरफ़ नज़र की तो वो तमाम जवाहरात बन गए फिर फ़रमाया जो माल तुम चाहते हो तुम्हारे सामने मौजूद है। जितना चाहो ले लो फिर फ़रमाया जिसको अल्लाह तआला अपनी बारगाह से एसे ख़ज़ाने बख़्श दे वो अमीर खरासान याक़ूब बिन लीस का मोहताज कब हो सकता

है। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 430)

सबक़:- ज़ेर दस्तों और ग़रीबों पर ज़ुल्मो सितम करने से दीन व दुनिया की हलाकत का सामना होता है और ज़ुल्मो सितम से तौबा कर लेने से अल्लाह तआला खुश होता है और आफियत व आसायश की ज़िन्दगी अता फ़रमाता है और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के मक़्बूल बन्दों की नज़र पड़ जाने से एक बे क़ीमत कंकर भी ग्राँ क़द्र सोना बन जाता है। और ये के उन पाक लोगों का फिक्र फिक्र इख़्तियारी होता है।

हिकायत नम्बर(865) पत्थर में आदमी

हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम का एक रोज़ एक पहाड़ पर गुज़र हुआ। आपने उस पहाड़ पर एक सफेद पत्थर देखा। जिसे आपने ग़ौर से देखा और उसकी खूबसूरती पर ताज्जुब का इज़हार फ़रमाया खुदा तआला ने फ़रमाया ऐ ईसा क्या तुम चाहते हो के मैं उससे भी ज़्यादा ताज्जुब अंगेज़ एक चीज़ तुम पर ज़ाहिर करूं ईसा अलेहिस्सलाम ने अर्ज़ किया हाँ इलाही मैं चाहता हूँ चुनाँचे खुदा के हुक्म से वो पत्थर फट पड़ा और उसमें से एक मुबारक शख़्स निकला जिसके हाथ में एक सरसब्ज़ शाख थी जिसके साथ अंगूर लगे हुए थे। हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम से उस शख़्स ने कहा ऐ अल्लाह के पैग़म्बर ये अंगूर मेरी हर दिन की रोज़ी है और मैं इस पत्थर में हर वक़्त अल्लाह की इबादत में लगा रहता हूँ। हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम ने पूछा के तुम इस पत्थर में कितनी मुद्दत से मसरूफ इबादत हो। वो बोला के चार सौ बरस से इस पर ईसा अलेहिस्सलाम ने जनाब इलाही में गुज़ारिश की के इलाही ये शख़्स तो बड़ा ही खुश नसीब है मेरे खयाल में इससे बढ़कर और तो कोई शख़्स खुश नसीब और अफ्ज़ल ना होगा। खुदा तआला ने जवाब दिया। मेरे आख़री पैग़म्बर हज़रत मोहम्मद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की उम्मत में से जो शख़्स भी शअबान की पंद्रहवीं शब को दो रकअत नमाज़ पढ़ेगा। वो उस शख़्स की चार सौ बरस की इबादत से भी ज़्यादा अज्र पाएगा। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 292, जिल्द:1)

अल्लाह तआला ने शअबान शरीफ की पंद्रहवीं शब को बड़ी फज़ीलत दी है और वो लोग बड़े ही खुश नसीब हैं जो इस रात जाग कर अल्लाह की इबादत करके अपने अल्लाह को राज़ी कर लेते हैं। और बहुत से दर्जे पा लेते हैं ओरये भी मालूम हुआ के अल्लाह तआला बड़ी क़ुद्रतों का मालिक है वो चाहे तो आदमी को माँ के पेट में भी और पत्थर के अन्दर भी ज़िन्दा रख सकता है

और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह तआला बड़ी कुद्रतों का मालिक है वो चाहे तो आदमी को माँ के पेट में भी और पत्थर के अन्दर भी ज़िन्दा रख सकता है। और ये भी मालूम हुआ के जो खुदा एक आदमी को पत्थर के अन्दर चार सौ बरस ज़िन्दा रख सकता है। वही क़ादिर व तवाना खुदा अपने पैग़म्बर हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम को आसमानों पर बुला कर सेंकड़ों बरस ज़िन्दा रख सकता है और इन सब बातों का इंकार अल्लाह तआला की वसी कुद्रतों का इंकार है। जो मुसलमान का काम नहीं।

हिकायत नम्बर(866) नेक नीयती

पुराने ज़माने में एक बूढ़ा और एक जवान दोनों ने मिलकर एक ज़मीन खरीदी और उसमें गंदम बोई। खेती जब पक कर तैयार हुई और कटाई हो चुकी और दोनों अपना अपना हिस्सा तक़सीम करने लगे। तो बूढ़ा अपना हिस्सा लेता और चुपके से जवान की तरफ़ सरका देता। और कहता के शायद उसकी उम्र में बर्कत हो और उसे ज़्यादा गंदम की हाजत हो। मैं तो बूढ़ा हो चुका हूँ। मुझे ज़्यादा गंदम की क्या हाजत? और जवान अपना हिस्सा लेता तो चुपके से वो भी बूढ़े की तरफ़ सरका देता। और कहता के बूढ़ा अयाल दार है उसे ज़्यादा गंदम दरकार होगी। जूं जूं ये दोनों आपस में ये मामला करते रहे। गंदम बढ़ती गई। और ख़त्म होने में ना आती थी। जब ये दोनों तक़सीम करते करते थक गए तो दोनों ने एक दूसरे को अपनी नीयत बयान की तो पता चला के बर्कत हमारी ने नीयत के बाइस है। बादशाहे वक़्त को उन दोनों के इस मामले का पता चला तो उसने उनको इस ज़ख़ीरे गंदम से एक दाना मंगवा कर अपने ख़ज़ाने में रखा। उसकी बर्कत से उसके ख़ज़ाने में भी बर्कत पैदा हो गई। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 390, जिल्द:1)

सबक़:- नेक नीयती से रिज़्क़ में बर्कत पैदा होती है। और बदनीयती से क़ैहत पैदा होता है। पहले लोग एक दूसरे के खैर ख़्वाह और ईसार पैशा थे। इसी वजह से वो लोग मआशी तंगी मं मुब्तला ना थे। और आज कल दुनिया भर में बद नीयती और ज़ुल्मो सितम आम है। इसीलिए सारी दुनिया मआशी तंगी में मुब्तला है पस हमें चाहिए के अपने भाईयों की हक़ तलफी ना किया करें बल्के हत्ता-उल-इमकान दूसरों पर एहसान करना चाहिए।

हिकायत नम्बर(867) बुज़ुर्गों का हसद

एक मर्तबा शैतान ने हज़रत नूह अलेहिस्सलाम से कहा के मैं आपके

एक एहसान का बदला चुकाना चाहता हूँ। हज़रत नूह अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। मलऊन! मैंने तो तुझे अपने पास फटकने तक नहीं दिया। फिर तुम पर मेरा कोई एहसान कैसा? शैतान बोला आपने अपनी दुआ से अपनी सरकश क़ौम को डुबो कर आए दिन की मुसीबत से मुझे बचा लिया। हर रोज़ की कशमकश और अग़वा की तरकीबों से मुझे निजात मिल गई है। इसके अवज़ में ये नसीहत करता हूँ के बुज़ुर्गों के हसद से बचना चाहिए। मैं आदम के हसद से ही मारा गया हूँ और अबदी जहन्नुमी बन गया हूँ उनकी बड़ाई व अज़्मत मुझे ना भाई। और उनके आगे ना झुका। और हमेशा के लिए मलऊन बन गया। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 402, जिल्द:1)

सबक़:- अल्लाह वालों की अज़्मत का इंकार और उनके सामने अपने आपको भी कुछ समझना बल्के उनकी मिस्ल बनना बहुत बुरी बात है। इस बात से आदमी की आक़्बत बर्बाद हो जाती है। इसलिए इस ख्याल से भी बचना चाहिए।

हिकायत नम्बर (868) सद्क़ा

एक आराबी ने हज़रत अबु हुरैरा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से अर्ज़ की हुज़ूर मेरा बेटा दरयाई सफर कर रहा है। आप उसकी सलामती के लिए दुआ करें। हज़रत अबु हुरैरा रज़ी अल्लाहो अन्ह ने फ़रमाया उसकी तरफ़ से कुछ सद्क़ा कर दे। क्योंके इस वक़्त दरया में तूफान आ रहा है। चुनाँचे बाप ने उसी वक़्त सदक़ा दिया और इधर कश्ती वालों ने ग़ैब से ये निदा सुनी के कश्ती वालो! खुदा का शुक्र करो, तुम डूबने से बच गए। और अल्लाह ने इस आराबी की सदक़ा क़बूल फ़रमाया लिया। चन्द रोज़ के बाद आराबी का बेटा सही सलामत वापस आ गया। और बाप को उस निदाऐ ग़ैबी की ख़बर सुनाई। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 421, जिल्द:1)

सबक़:- सद्क़ा व ख़ैरात देने से सेंकड़ों बलायें टल जाती हैं। ग्यारहवीं शरीफ, तीजा, दसवाँ, चालीसवाँ, वग़ैरा सदक़ा व ख़ैरात ही की चीज़ें हैं। इन्हें बन्द करने का मतलब ये है के बलायें बन्द ना हों। इसलिए इन अच्छी बातों को बन्द हर गिज़ ना करना चाहिए। ताके बलाओं के दरवाज़े ना खुल जायें। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों को दूर दराज़ की बतों का भी इल्म हो जाता है। जैसे के हज़रत अबु हुरैरा रज़ी अल्लाह तआला अन्ह को हो गया और अल्लाह वाले इन अल्लाह वालों के इल्म को मान लेते हैं। जैसे के इस आराबी ने माल लिया।

हिकायत नम्बर(869) साँप

एक बुज़ुर्ग ने एक साँप को ये कहते सुना के जो इस वक़्त मुझे पनाह दे खुदा उसे दोज़ख़ से पनाह में रखेगा। उन्होंने अपना मुंह खोल दिया। साँप सीधा पेट में जा उतरा। इतने में एक शख़्स साँप को ढूंडता आया। मगर जब कहीं निशान ना मिला। तो वापस चला गया थोड़ी देर के बाद साँप ने उस बुज़ुर्ग से कहा फ़रमाईये अब मैं आपके दिल को डसूं या कलेजे को? पूछा ये क्यों? साँप ने कहा नाअहलों के साथ नेकी करने की यही सज़ा है। बुज़ुर्ग ने कहा अच्छा पहले मुझे अपनी क़ब्र तो खोद लेने दे इतने में एक फरिश्ता उतरा और उन्हें एक ऐसी चीज़ खिलाई के साँप टुकड़े टुकड़े होकर कै के रास्ते निकल गया। उन्होंने पूछा आप कौन हैं? जवाब मिला। मैं तुम्हारी वो नेकी हूँ जो अभी तुम ने साँप के साथ की। (नुज़हत-उल-मजातलिस, सफ़ा 423, जिल्द:1)

सबक़:- किसी नाअहल से अच्छा सलूक बअज़ अवक़ात मुसीबत का बाइस बन जाता है। इसलिए अहल व ना अहल का इम्तियाज़ हर वक़्त पेशे नज़र चाहिए और ये भी मालूम हुआ के नेकी बहर हाल नेकी ही है और उसका अच्छा बदला मिल कर ही रहता है।

हिकायत नम्बर(870) बुज़ुर्गों की शर्म

एक रोज़ हज़रत इमाम जाफर सादिक़ रज़ी अल्लाहो तआलाअन्ह बैठे हुए थे। आपने अपने ग़ुलामों से फ़रमाया के आओ ताके हम आपस में अहद करें के क़यामत के रोज़ जो हम में से निजात पा जाए। वो सबकी शफाअत करे। उन्होंने अर्ज़ की ऐ इब्ने रसूल अल्लाह! आपको हमारी शफाअत की क्या हाजत है? जब के आपके दादा जान तमाम मख़्लूक़ के शफ़ीअ हैं। हज़रत इमाम जाफर सादिक़ फ़रमाने लगे ये ठीक है मगर मुझे अपने अफआल के पेशे नज़र अपने दादा जान सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सामने होते शर्म आती है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 16)

सबक़:- अल्लाह वाले अल्लाह के जिस क़द्र मुक़र्रिब होते हैं उसी क़द्र उनके दिलों में ख़ौफ व खशीयते इलाही ज़्यादा होती है और इसी क़द्र उनकी शर्मो हया भी बढ़ती है और वो सब कुछ होकर भी अपने आपको कुछ नहीं समझते और ये भी मालूम हुआ के इमाम जाफर सादिक़(र॰अ॰) जैसे सादिक़ इमाम बावजूद अलू मतरतबत और नेकों के सरदार होने के अपने आमाल को हैच समझते हैं। फिर हम कौन हैं? जो कुछ भी ना करें

अपनी बड़ाई के मुद्दई बन जायें और जब हज़रत इमाम जाफर सादिक़ जैसे पाकबाज़ इंसान हुज़ूर(स०अ०स०) के सामने होते हुए शर्माते हैं। फिर किस क़द्र जुर्रात है के हम हज़ार गुनाहों के बावजूद भी नहीं शर्माते।

हिकायत नम्बर(871) बुज़ुर्गों का तक़वा

हज़रत हसन बसरी रहमत-उल्लाह अलेह एक रात घर में रो रहे थे। ग़ुलामों ने अर्ज़ किया के आप क्यों रो रहे हैं। आप तो अल्लाह के फज़्ल से मुत्तक़ी और परहैज़गार और अल्लाह के मक़्बूल हैं। फिर इस रोने का सबब क्या है? फ़रमाया मैं इस खयाल से रो रहा हूँ के मेरी नादानस्तगी और भूल से कोई ऐसा काम मुझ से ना हो गया हो। जो मरे अल्लाह को पसंद नहीं या मैं ग़लती से अपना क़दम किसी ऐसी जगह पर ना रख बैठा हूँ। जिस जगह जाना मेरे अल्लाह को पसंद नहीं। अगर मुझ से कभी ऐसा हो गया है तो ऐसा ना हो के अल्लाह की दरगाह से मैं रौंदा जाऊँ और खुदा तआला मेरी कोई इबादत क़बूल ना फ़रमाए। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 35)

सबक़:- अल्लाह वाले बड़े तक़वा शआर होते हैं और सब कुछ अदा कर के भी डरते रहते हैं के शायद हम से कोई कोताही हो गई हो और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले तो ग़ैर पसंदीदा काम भूल कर भी नहीं करना चाहते और हम जान बूझ कर भी सेंकड़ों गुनाह कर डालते हैं फिर अगर कोई शख़्स इन अल्लाह वालों से हमसरी का दावा करने लगे। तो उसकी गुमराही में क्या शक हो सकता है।

हिकायत नम्बर(872) क़ब्र

हज़रत हसन बसरी रहमत-उल्लाह अलेह एक बार जनाज़े की नमाज़ पढ़ने लगे। तो जब लोग दफ़्न से फारिग़ हो गए और क़ब्र दुरूस्त कर चुके तो आप इस क़ब्र पर बैठ कर बहुत रोये। फिर आपने हाज़रीन से फ़रमाया के ऐ लोगो! सुनो! अव्वल और आख़िर क़ब्र है। दुनिया के आख़िर क़ब्र है। और आख़िरत के अव्वल क़ब्र है। फिर तुम ऐसे आलम से क्यों नहीं डरते। जिसके अव्वल क़ब्र है और जब अव्वल व आख़िर तुम्हारा ये है तो ऐ ग़ाफ़िलो! अव्वल व आख़िर को दुरूस्त कर लो। आपके इस वाज़ से लोग बहुत मुतास्सिर हुए। और सब रोने लगे। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 35)

सबक़:- इंसान को चाहिए के मंज़िल क़ब्र को हर वक़्त याद रखे और

ऐसे काम करे, जिनकी बदौलत इसे क़ब्र में आराम मिले। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले क़ब्रिस्तान में जाते हैं। तो इब्रत हासिल करते हैं। वहां पहुँच कर दुनिया की बातें नहीं शुरू कर देते। जैसे के आज कल का हाल है के जनाज़ा पढ़ने गए। तो क़ब्रिस्तान में पहुँचकर भी मंडियों के भाव पूछे जा रहे हैं।

हिकायत नम्बर(873) पेट में

हज़रत सफयान सूरी रहमत-उल्लाह अलेह जब अपनी माँ के पेट में थे। एक रोज़ आपकी वालिदा कोठे पर तशरीफ़ ले गईं। और पड़ोसी की तुर्शी से एक उंगली भर कर चाटी। आप पेट में बेचैन हो गए और इतनी बेचैनी का इज़हार करने लगे के आपकी वालिदा समझ गईं। और उसी वक़्त जाकर पड़ोसी से माफी माँगी तब जाकर आप मुतमईन हुए। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 230)

सबक़:- अल्लाह वाले पराई चीज़ को बग़ैर इजाज़त के हाथ भी नहीं लगाते और अगर वो माँ के पेट में भी हों तो भी ऐसी बात गवारा नहीं फ़रमाते। पस हमें भी उनके नक़्शे क़दम पर चलना चाहिए। और पराई चीज़ को हर गिज़ अपनाना चाहिए। ये भी मालूम हुआ के आज कल का दौर बड़ा ही पुर फतन दौर है। क्योंके पहले लोग तो पेट में भी पराय माल से बचते थे और आज कल के पेट ही पराय माल के लिए वक़्फ हो चुके हैं।

हिकायत नम्बर(874) खुदा पर नज़र

हज़रत शक़ीक़ रहमत-उल्लाह ताअला अलेह से एक रईस ने कहा के मैं चाहता हूँ के आपको बहुत सा माल दे दूं ताके आप बे फिक्र हो जायें। आपने फ़रमाया मैं तो बेफिक्र ही हूं और अपने ख़ुदा पर नज़र रखता हूँ। हाँ अगर तुम से कुछ लेना शुरू कर दिया तो बड़ी मुश्किल हो जाएगी और मैं तुम से कुछ इसलिए लेना नहीं चाहता। के पाँच ऐब तुम में से ऐसे हैं जो मुझे डराते हैं अगर वो ऐब तुम में ना होते तो शायद ले लेता।

एक तो ये के तेरा ख़ज़ाना कम हो जाएगा।

दूसरे ये के मुमकिन है उसे चोर चुरा कर ले जायें।

तीसरे ये के मुमकिन है तू देकर फिर पछताए।

चौथे ये के तुम शायद मेरा कोई ऐब देखकर मुझ से कहने लगो के मेरा माल लौटा दो।

पाँचवें ये के मुमकिन है के तुम मर जाओ और मैं तुम्हारे बाद मुफ़लिस हो जाऊँ।

लेकिन हाँ अलबत्ता मेरा जो खुदा है। वो इन सब ऐबों से पाक है और बे ऐब है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 241)

सबक़:- अल्लाह वालों की अल्लाह पर नज़र रहती है और अल्लाह अपने मक़्बूलों के सब काम पूरे फ़रमा देता है और उन्हें माल दुनिया और अहले दुनिया की परवा नहीं होती। मालूम हुआ के यही अल्लाह वाले दरअसल ग़नी व अमीर हैं। और जिन्हें माल दुनिया ही की धुन और फ़िक्र लगी रहती है। और हर वक़्त उसके ग़म में रहते हैं। दरअसल वही मोहताज व फ़क़ीर हैं और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले दुनिया व अहले दुनिया से रूख मोड़ कर अल्लाह की तरफ़ दौड़ते हैं और दुनिया व अहले दुनिया उनकी तरफ़ दौड़ते हैं गोया जो रब का हो जाए रब उसका हो जाता है। और जिसका रब हो जाए सब उसका है।

हिकायत नम्बर(875) बहुत जल्द

एक बूढ़ा शख़्स हज़रत शक़ीक़ रहमत-उल्लाह तआला अलेह के पास हाज़िर हुआ। और कहने लगा। या हज़रत! मैं ने गुनाह बहुत किए हैं। अब चाहता हूँ के तौबा करूं हज़रत शक़ीक़ ने फ़रमाया बड़े मियाँ तुम बहुत देर से आए बूढ़े ने कहा। मैं तो खयाल करता हूँ के मैं बहुत जल्द आया हूँ। क्योंके जो शख़्स मौत से पहले तौबा करने को आमादा हो जाए। उसको ऐसा समझना चाहिए के वो बहुत जल्द आया है। हज़रत शक़ीक़ ने फ़रमाया। वाक़ई तुम ने सच कहा और तुम बहुत ठीक वक़्त पर आए। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 243)

सबक़:- इंसान को चाहिए के मरने से पहले पहले अपने गुनाहों से बहुत जल्द सच्ची तौबा करे और मरने के वक़्त का कोई इल्म नहीं। इसलिए तौबा बहुत जल्द कर लेनी चाहिए।

हिकायत नम्बर(876) नंगे सर

हमारे इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह की आदत मुबारका थी के आप कभी नंगे सर ना रहते थे। चुनाँचे दाऊद ताई अलेह अर्रहमा फ़रमाते हैं। मैं बीस बरस तक हज़रत इमाम अबु हनीफा की खिदमत में रहा। मैंने कभी इस अर्से में आपको तनहाई में और ना जमात में देखा के आप नंगे सर बैठे हों या पाँव फैलाए हों।

हज़रत दाऊद ताई ने एक रोजज़ हज़रत इमाम से पूछा के ऐ इमाम दीन अगर आप तनहाई की हालत में सर नंगा कर लें या पाँव फैला लें। तो इसमें

क्या बुराई है? हज़रत इमाम आज़म ने फ़रमाया के तनहाई की हालत में खुदा तआला के साथ अदब रखना और उसकी ज़ाते पाक का लिहाज़ रखना बहुत अच्छी बात है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 250)

सबक़:- हमारे इमाम आज़म अलेह अर्रहमा हदीस व फिक़ह के भी और वरअे व तक़वा के भी इमाम थे। और अहनाफ इक्राम को इस बात पर बजा नाज़ है के वो एक जलील-उल-शान और खुदा के मक़्बूल इमाम के मुक़ल्लिद हैं। और ये भी मालूम हुआ के आज कल जो दिन रात घर में भी और बाज़ारों में नंगे सर रहने और फिरने के आदी हैं वो अगर हमारे इमाम पाक पर कोई तान करें तो ये उनकी उरयानी ही का सबूत होगा।

हिकायत नम्बर(877) रिहाई

हज़रत मोहम्मद बिन असलम तूसा रहमत-उल्लाह अलेह बीमार हुए आप के हमसाया ने एक रात ख़्वाब में देखा के आप फ़रमा रहे हैं के अलहम्दू लिल्लाह! मैंने इस रंज से रिहाई पाई। ये शख़्स जागा तो उठा ताके आपकी ख़बर ले आए। तो पता चला के आपका विसाल हो गया है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 191)

सबक़:- ये दुनिया एक क़ैदखाना है और अल्लाह वाले यहाँ से इन्तिक़ाल को गोया क़ैद से रिहाई समझते हैं और दुनिया दार इसी दुनिया के सब कुछ समझते हैं। इसीलिए मरना उनके लिए मुश्किल है मगर अल्लाह वाले इस दुनिया से जाते हुए खुश हो जाते हैं के क़ैद से रिहाई पाई और साअत विसाल आई।

हिकायत नम्बर(878) तासीर कलाम

बग़दाद शरीफ में एक बदमाश ने एक शरीफ औरत को घेर लिया और उस पर दस्त दराज़ी करने लगा। औरत चीखी और लोगों को इम्दाद के लिए बुलाया। लोग उसे छुड़ाने के लिए आए तो इस बदमाश ने छुरी निकाल ली। चुनाँचे डर के मारे कोई आगे ना जा सका। इतने में हज़रत बशर बिन हरस रहमत-उल्लाह अलेह का वहाँ से गुज़र हुआ। आप आगे बढ़े और इस बदमाश के कंधे को अपने कंधे से ठोकर लगाई और वो बदमाश ज़मीन पर गिर गया और कांपने लगा इतने में वो औरत भाग गई और हज़रत बशर भी तशरीफ़ ले गए। लोग इस बदमाश के क़रीब गए और उठाया और कहा तुम्हारे साथ ये क्या मामला हुआ। तो वो बोला मैं और कुछ नहीं जानता सिर्फ इतनी ख़बर है के हज़रत बशर ने मेरे कंधे को ठोकर लगाते वक़्त इतना

फ़रमाया था के ख़बरदार! तेरे इस बुरे फैल को खुदा देख रहा है। ये सुनते ही मेरे बदन पर लर्ज़ा तारी हो गया और मैं गिर गया। और अब सच्चे दिल से तायब हो चुका हूँ (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 171)

सबक़:- अल्लाह वालों की ज़बान में इंक़िलाब आमेज़ तासीर होती है और उनका एक जुमला भी किसी तवील वअज़ से ज़्यादा मौस्सर होता है। और ये पाक लोग अपनी निगाहों ही से काया पलट देते हैं।

हिकायत नम्बर(879) इस्मे आज़म

एक बुज़ुर्ग इस्मे आज़म जानते थे। एक शख़्स उनके पास इस्मे आज़म सीखने के लिए आया और अर्ज़ करने लगा के मुझे इस्मे आज़म सिखाईये। उन्होंने फ़रमाया। तुम में इसकी अहलियत भी है। उसने कहा। हाँ है। फ़रमाया अच्छा शहर के फ़लाँ दरवाज़े पर जाकर बैठो। और वहाँ जो कोई हादसा गुज़रे मुझे आकर उसकी इत्तिला दे देना। चुनाँचे वो शख़्स हस्बे हिदायत उस दरवाज़े पर जा बैठा। थोड़ी देर के बाद उसने देखा के एक बूढ़ा शख़्स अपने गधे पर लकड़ियाँ लाद कर शहर ला रहा है और जग वो दरवाज़े पर पहुँचा तो एक सिपाही ने उसे पकड़ लिया। लकड़ियाँ छीन लीं और उस बूढ़े को मारा भी। ये शख़्स ये सारा वाक़ेया देखकर वापस आया और उस बुज़ुर्ग को सुनाया। वो फ़रमाने लगे। अच्छा ये बताओ अगर तुम्हें इस्मे आज़म का इल्म होता तो तुम उस सिपाही के साथ क्या सलूक करते वो बोला। मैं उस ज़ालिम के हलाक हो जाने की दुआ करता। उन्होंने फ़रमाया सुनो! वो लकड़ियों वाला बूढ़ा ही मेरा मुर्शिद है और मैंने उसी से इस्मे आज़म सीखा है अब खुद ही सोचो के जब खुद ही उसने सिपाही की हलाकत नहीं चाही तो तुम कौन थे। जो उसकी हलाकत चाहते। जाओ इस्मे आज़म की अहलियत तुम में नहीं है। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 174)

सबक़:- अल्लाह वालों का ज़र्फ़ बड़ा आली व वसी होता है और वो सब्र, हिलम और मख़लूक़ के लिए रहमत का मख़्ज़न होते हैं। अल्लाह के ख़ास ईनामात के अहल वही लोग हैं रहमत-उल्लाह अलेहिम अजमईन।

हिकायत नम्बर(880) अब्दाल

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं के मैं एक कश्ती में सवार हुआ तो असना सफ़र में हवा बन्द हो गई। हम ने कश्ती को एक किनारे लगा कर खड़ा कर दिया। हमारी कश्ती में एक नूरानी शक्ल का नोजवान भी सवार था। वो साहिल पर

उतर गया और साहिल के दरख़्तों में दाखिल हुआ। फिर वापस आया और जब सूरज ग़रूब हुआ। तो हम से कहने लगा के मेरा थोड़ी देर क बाद इन्तिक़ाल हो जाऐगा। जब मेरा इन्तिक़ाल हो जाए तो मेरी इस गठरी को खोल कर उसमें से जो निकले उसका मुझे कफ़न पहनाना। और ये मेरे बदन के कपड़े उतार कर अपने पास रखना। फिर जब तुम शहर सबूर में दाखिल होगे। तो सबसे पहले जो शख़्स पहले मिलेगा। वो तुम से कहेगा के लाओ मेरी अमानत, तो ये मेरे बदन के कपड़े उसे दे देना चुनाँचे हम ने नमाज़ मग़रिब की और नमाज़ पढ़ लेने के बाद हम ने उस नोजवान को देखा, तो वाक़ई उसका इन्तिक़ाल हो चुका था। हमने साहिल के किनारे उसे ग़ुस्ल दिया और फिर उस गठरी को खोला तो उसमें से दो सब्ज़ चादरें निकलीं और एक सफेद कपड़ा जिसमें एक थेली बंधी हुई थी। थेली खोली तो उसमें से एक काफ़ूर की सी चीज़ निकली। जिससे कस्तूरी की खुश्बू आ रही थी हम ने उसे ये कफ़न पहनाया और वही खुश्बू लगाई। और नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और दफ़्न कर दिया। फिर जब हम शहर सबूर पहुँचे। तो हमें एक निहायत वजीहा नोजवान मिला। जो अपने सर पर रूमाल बांधे हुए था। उसने हमें अस्सलाम अलेकुम कहा और फिर कहा: लाओ मेरी अमानत। हम ने कहा। हाँ आपकी अमानत हमारे पास ही है। मगर ज़रा इस मस्जिद में चलिए। हमें आपसे कुछ पूछना है। चुनाँचे वो हमारे साथ मस्जिद में दाखिल हुआ तो हम ने पूछा अज़राहे करम ये तो फ़रमाईये के वो कश्ती वाला नोजवान कौन था। और आप कौन हैं। और वो सब्ज़ कफ़न कहाँ से आया था। उसने फ़रमाया वो कश्ती का आपका रफ़ीक़ सफर चालीस अब्दालों में से एक अब्दाल था और अब उसकी जगह में मुक़र्रर हुआ हूं। और वो कफ़न हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम लेकर उसके पास पहुँचे थे। और वो ही उसे बता गए थे के मग़रिब के बाद उसका इन्तिक़ाल होने वाला है। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 183)

सबक़:- औलिया इक्राम की बहुत बड़ी शान है अैर उन्हें इन बातों का भी इल्म होता है। जिनका दूसरों को कोई इल्म नहीं होता। हत्ता के वो अपने इन्तिक़ाल की ख़बर भी रखते हैं। के कब होगा और कहाँ होगा फिर खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जिनके सद्क़े में औलिया व अब्दाल को ऐसे इलूम हासिल हुए। *मा काना वमा यकून* के आलम और दानाऐ ग़यूब क्यों ना होंगे। और जो शख़्स औलिया इक्राम के भी आक़ा व मौला सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इल्मे पाक का मुनकिर हो। उससे बढ़कर जाहिल और कौन होगा।

फसल-लल्लाहो अलेह व सल्लम व
रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन

हिकायत नम्बर (891) हज़रत सईद बिन जबीर रज़ी अल्लाहो अन्ह व हज्जाज बिन युसूफ का मकालमा

गुलामाने मोहम्मद में किसी से कम ना था कोई
नहीफ व भूके प्यासे थे मगर बेदम ना था कोई
समा सकती है क्यों कर जब दुनिया की हवा दिल में
बसा हो जब के नक़्श जब मेहबूबे खुदा दिल में

हज्जाज बिन युसूफ सक़्फी जो रूस्तम का पुतला जिदाल व क़िताल का दिलदादा तशद्दुद व शिकावत का मुजस्समा कूफा व बसरा और बाबलिस्तान जिसकी खून रेज़ी से लरज़ाँ है। तक़रीबन सत्तर हज़ार नाहक़ व बे क़सूर मक़्तूलों के खून का मुरतकिब हो चुका है। आलिम उसकी बेदाद गिरी से हरासाँ मुल्क का हर खुर्द व कलाँ उसके ज़ुल्म से गुरेज़ाँ है एक रोज़ पाया तख़्त इराक़ में हमराह चन्द रूफक़ा हमनवा किसी कलाम ख़ास में मशगूल है। 95हि॰ उसकी ज़ीस्त का आख़री साल है। लेकिन सितमगर गिरफ़्त खुदा से बेख़बर मह्‌ क़ताल है दफअतन उसके दरबार खूनबार में हज़रत सय्यदना सईद बिन जबीर-उल-असदी अलकूफ़ी (ताबई) पेकर रज़ा मुल्क फिक्र के शहनशाह को लाया गया। सय्यद बिन जबीर दरख़्शंदा रूफरखंदा खू पर ना हज्जाज का रौब ना हैबते दरबार कारगर थीं। और ना ख़तरा जान ना ख़ौफ नुक़्सान ये कामिल ईमान बे गुमान *वलम यख़श इलल्लाह* का निशान बन कर पेश हज्जाज हुआ। सय्यदना सईद को देखते ही चश्मे सुर्ख़ की निगाह तुंद चहरा ज़र्द गर्दन फलाई और कड़क कर कहा।

हज्जाजः- सईद क़त्ल के लिए तैयार हो जाओ।

इब्ने जबीरः- *वमंय यक़्तुल मोमिनन मुताअम्मिदन फजज़ाहू जहन्नमः-* हज्जा! जिस तरह तू आज मुझे क़त्ल करेगा उसी तरह आखिरत में मैं तुझे क़त्ल करूंगा। *कमा तुदीना तुदाना* मैं तैयार हूँ तू भी तैयार...

कब मौत से डरते हें गुलामाने मोहम्मद
ये अपने गुलामों पे है एहसान मोहम्मद
हो जाए अगर सर मेरा दो टुकड़े ऐ हज्जाज
पर हाथ से छूटेगा ना दामाने मोहम्मद

हज्जाजः- अगर तू चाहे तो तुझे माफ कर दूं वरना क़त्ल कर दूं।

इब्ने जबीरः- मेरी माफी और क़त्ल तेरे हाथ में नहीं अगर क़त्ल हो गया तो मनशा रहमान, अगर बच गया तो अल्लाह का एहसान होगा *नअेम मा क़ील....*

होंटों में वही इश्क़ का पैग़ाम रहेगा
जो काम था वो काम है वो काम रहेगा
अल्लाह की क़सम मर के भी हम ज़िन्दा रहेंगे
क़ातिल तेरे सर पे मगर इलज़ाम रहेगा

हज्जाजः- (आग बगूला होकर) इसे ले जाओ क़त्ल करो......(जल्लादों से)

जल्लाद सय्यदना इब्ने जबीर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को तख़्त हज्जाज से क़त्ल गाह की तरफ़ ले जा रहे हैं। और हज़रत सय्यदना सईद बिन जबीर दरवाज़ा-ए-दरबार उबूर करते वक़्त तबस्सुम कनाँ हैं। हज्जाज ने ये हालत फ़रहत हुक्म क़त्ल के बाद देखकर ताज्जुब किया। और मस्ती अशकबार में मुसतग़रिक़ होते हुए वापस लाने का हुक्म दिया। वापस लाए गए।

हज्जाजः- (दबदबा दिखाते हुए) सईद! इस बे मौक़े का क्या मतलब?

इब्ने जबीरः-...

हमे ख़ंदम अज़ लुत्फ यज़दान पाक
के मज़लूम रफ़तम ना ज़ालिम बख़ाक

अल्लाह तआला की इनायत व एहसान पर हंस रहा हूँ के दुनिया से मैं मज़लूम होकर जा रहा हूँ। ज़ालिम होकर नहीं।

हज्जाजः- आख़िर कौन सी चीज़ है के तुझे हंसा रही है।

इब्ने जबीरः- तुझ जैसे मुतकब्बिर की जुर्रात और फिर अल्लाह तआला का हिलम इस ताज्जुब और तहिय्यर ने मुझे हंसाया है।

हज्जाजः- (जल्लादों से) उसे यहाँ मेरे सामने लिटा कर क़त्ल करो। चन्द बे रहम जल्लादों ने निहायत बेरहमी से हज़रत इब्ने जबीर को लिटाया।

इब्ने जबीरः- (ज़मीन पर गिरते ही मुंह क़िबला रू करते हुए *वज्जहतू वजहिया लिल्लज़ी फतरस्समावाती वलअर्ज़ा हनीफंव व मा अना मिनल मुशरिकीना।*

हज्जाजः- उसको जकड़ लो ताके मुंह बसुऐ क़िबला ना कर सके। आप जकड़े गए। और क़िबला से मुंह फिरा कर गिराए गए।

इब्ने जबीरः- (नीचे आते ही)

हज्जाजः- उसे ओंधा करके खंजर चलाना। मुंह के बल किए गए।

इब्ने जबीरः- (मुंह के बल होते हुए)

मिनहा ख़लक़नाकुम व फ़ीहा नुईदूकुम व मिनहा नुख़रिजुकुम तारातन उखरा

हज्जाजः- (निहायत बे दर्दी के साथ) क़त्ल कर दो।

इब्ने जबीरः- *इन्नी अशहदूअन्न लाइलाहा इल-लल्लाहू वहदाहू ला शरीका लहू वअन्ना मोहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू*

हज्जाजः- मेरी ...त का गवाह रह बरोज़ क़यामत इंशा अल्लाह तुझे मिलूंगा। गर्दन पर खंजर रखा गया।

इब्ने जबीरः- (दुआ कुनाँ हुए) *अल्लाहुम्मा ला तुसल्लित अला अहादिन यक़्तुलुहू बअदी* ऐ अल्लाह इस ज़ालिम हज्जाज को मेरे क़त्ल करने के बाद और किसी पर क़त्ल करने की ताक़त ना देना। ये दुआ ज़ेरे लब थी के खंजर चलाया गया और रूह क़सर अनसरी से परवाज़ कर गई।

कशतगान खंजर तसलीम रा!
हर ज़मान अज़ ग़ैब जाए दीगर अस्त

इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन

बाद क़त्ल सय्यदना इब्ने जबीर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हज्जाज अपने बाक़ी मांदा दिन हमेशा यही पुकारता रहता *माली वलसईद बिन जबीर*

इब्ने जबीर ने 29 शअबान 95 हि॰ में विसाल फ़रमाया। उनकी शहादत के 15 यौम बाद ऐन उसी दिन हज्जाज को दर्द पेट ने दीवाना किया। मख़्तूत-उल-हवास होकर चिल्लाने लगा। तबीब बुलाया गया। उसने हज्जाज के जिस्म खूब टटोला। मगर मर्ज़ का पता ना लगा आख़िर उसने एक ग़लीज़ बदबूदार गोश्त का टुकड़ा बज़रिया धागा उस ज़ालिम के पेट में लटकाया ताके मर्ज़ की तफ़्तीश करे। चन्द मिनट बाद उसे पेट से बाहर निकाला। तो वो खून आलूदा था। तबीब ने कहा ये दुनियावी मर्ज़ों का मरीज़ नहीं। आसमानी बलाओं का मुब्तला है। शिफा ना मुमकिन है। फी अलजुमला इस मर्ज़ दर्दे शिकम में हज्जाज बिन युसूफ निहायत बुरी मौत के घाट उतरा। (माह तय्यबा अक्तूबर 1961 ई॰)

सबक़:- अल्लाह वालों ने हमेशा हक़ पर इसतक़लाल का मुज़ाहेरा फ़रमाया। और कभी किसी तागौती ताक़त से नहीं डरे और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों की दुश्मनी मौजिब हलाकत है।

हिकायत नम्बर (882) मोतियों का हार

क़ाज़ी अबु बक्र बिन अब्दुल बाक़ी अनसारी पाँचवीं सदी हिजरी के

औलिया-ए-उम्मत में से हैं। उन्होंने अपना ये अजीबो ग़रीब वाक़ेया खुद ही बयान फ़रमाया है। जिसको युसूफ बिन खलील हाफिज़ ने अपने मौज्जम में सनद के साथ नक़्ल किया है और इन्हीं के हवाले से इब्ने रजब ने तबक़ात हनाबला में भी उसको मज़कूर किया है।

बयान फ़रमाते हैं के मैं एक ज़माने में मक्का मौअज़्ज़मा में मुक़ीम था। और फिक्रो तही दस्ती की वजह से फाक़ों पर फाक़े आते थे। एक दिन जब मैं भूक से बहुत ही बे ताब था और भूक की तकलीफ से निजात हासिल करने के लिए मेरे पास कुछ नहीं था। मुझे एक रेशम की थेली पड़ी हुई मिली। जो रेशमी धागे ही से बंधे हुई थी। मैंने उसको उठा लिया और अपने घर ले आया। खोल के देखा तो उसमें ऐसे नफीस और बैश क़ीमत मोतियों का हार था। जो मेरी चश्म तसव्वुर ने भी कभी नहीं देखे थे मैं उसको घर में रख के बाहर निकला तो देखा के एक साहब वजाहत बुजुर्ग अपने गुमशुदा हार के बारे में ऐलान कर रहे हैं। उनके हाथ में रूमाल में बंधी पाँच सौ अशर्फियाँ हैं और वो पुकार के कह रहे हैं के ये अशर्फियाँ मैं अल्लाह के उस बंदे की खिदमत में पेश करूंगा जो मेरा हार कहीं से पा के मुझ तक पहुँचा दे। मुझे बड़ी खुशी हुई और मैंने सोचा के ग़ालिबन वो हार इन्हीं बुजुर्ग का है। मैं उनको दे दूं और चूंके मैं उस वक़्त बहुत भूका और सख़्त हाजतमंद हूँ। इसलिए ये रक़म उनसे ले लूं। और अपनी ज़रूरतें उससे पूरी करूं। चुनाँचे मैंने उनसे कहा। आप ज़रा मेरे साथ आईये! वो मेरे साथ मेरे घर आए फिर मेरे दरयाफ़्त करने पर उन्होंने अपनी गुमशुदा थेली और उसके तसमे की ख़ास अलामत बताईं। और बतलाया के हार में कितने मोती हैं और उन मोतियों में क्या खास निशानात हैं? और धागे की क्या ख़ास पहचान है? उन्होंने जो कुछ बताया। उससे मुझे यक़ीन हो गया के ये थेली उन्हीं की है तो मैंने निकाल कर उनकी खिदमत में पेश कर दी। उन्होंने अपने ऐलान के मुताबिक़ पाँच सौ अशर्फियाँ मुझे देनी चाहीं लेकिन अब मेरे दिन ने कहा के इनका लेना ठीक नहीं। चुनाँचे मैंने उनसे अर्ज़ किया के ये आपकी चीज़ और आपकी अमानत थी। मेरा फर्ज़ था के मैं आपको पहुँचाऊँ। अल्लाह तआला ने मेरे लिए इस फर्ज़ की अदायगी आसान फ़रमा दी। मैं उसका कोई मुआवज़ा और बदला नहीं ले सकता। उन्होंने इसरार किया और सख़्त इसरार किया लेकिन मेरा ज़मीर क़बूल करने पर आमादा नहीं हुआ। और अपनी सख़्त भूक और हाजतमंदी के बावजूद मैंने उसको क़बूल ना किया आगे अल्लाह की कुद्रत का तमाशा देखिये!

एक मुद्दत के बाद मक्का मौअज़्ज़मा से चला और एक कश्ती पर सवार

हुआ जिस पर और भी बहुत से मुसाफिर सवार थे। अल्लाह की शान कश्ती बीच समुंद्र में टूट गई और उसके सारे मुसाफिर एक एक करके समुंद्र में डूब गए मुझ अल्लाह तआला ने बचा लिया और कश्ती के एक टुकड़े पर किसी तरह बैठा रहा। समुंद्र की मौजें कश्ती के टुकड़े या तख़्ते को चलाती और बढ़ाती रहीं एक मुद्दत तक मैं समुंद्र में इस तख़्ते पर रहा और मुझे कुछ ख़बर नहीं थी के मैं कहाँ जा रहा हूँ यहाँ तक के कश्ती के इस तख़्ते ने मुझे एक जज़ीरे में पहुँचा दिया। इस जज़ीरे में मुसलमानों की आबादी थी और मस्जिदें थीं मैं एक मस्जिद में जाकर बैठ गया और क़ुरआन मजीद की तिलावत करने लगा। वहाँ के लोगों ने जब मुझे क़ुरआन मजीद पढ़ते हुए सुना तो उसका चर्चा हुआ तो जज़ीरे के बाशिन्दे एक एक करके मेरे पास आए और सब ने मुझ से इसतदआ की के हम को भी क़ुरआने पाक सिखाओ। मैं उनको क़ुरआन मजीद पढ़ाने और सिखाने लगा। अहले जज़ीरे ने मेरा बड़ा इक्राम किया और तरह तरह की हिदाया और अताया मुझे दिए।

एक दिन इसी मस्जिद में मुझे निहायत खुश खत लिखे हुए क़ुरआन मजीद के कुछ अवराक़ मिले वहाँ के लोगों ने मेरे पास जब अवराक़ देखे तो उन्होंने कहा के मालूम होता है के आप लिखना भी बहुत अच्छा जानते हैं। मैंने कहा के हाँ अल्लाह तआला ने मुझे ये चीज़ भी नसीब फ़रमाई है और मैं ख़त्तात भी हूँ। उन लोगों ने कहा के आप हम को लिखना भी सिखा दीजिए। चुनाँचे जवान और नो उम्र बच्चे खत्ताती सिखने के लिए मेरे पास आने लगे और मेरा और ज़्यादा इक्राम होने लगा और हिदाया और तहायफ से उन्होंने मुझे माला माल कर दिया। कुछ दिनों के बाद वहाँ के लोगों ने मुझ से कहा के हमारे हाँ एक बड़े मौअज़्ज़िज़ और बा सरवत घराने की एक यतीम लड़की है। हम चाहते हैं के उसका निकाह आपसे हो जाए। मैंने इब्तिदा उज़्र किया लेकिन उन्होंने अज़राहे इक्रामो मोहब्बत इसरार किया। यहाँ तक के मैं आमादा हो गया। और बिलआख़िर निकाह हो गया। जब निकाह के बाद लड़की मेरे पास पहुँचाई गई तो मेरी निगाह उसके गले की तरफ़ गई। मैंने देखा के उसके गले में निहायत बैश क़ीमत मोतियों का गोया बऐनही वही हार है जो मक्का मोअज़्ज़मा में मुझे पड़ा हुआ मिला था। और मैंने वो उसके मालिक के हवाले कर दिया था। मैं हैरत और ताज्जुब और ग़ौर के साथ उस हार को देखने लगा, मेरी ये हरकत बड़ी ना मुनासिब समझी गई। के नई बीवी को देखने और उसकी तरफ़ मुतवज्जह होने की बजाए उसके गले में पड़े हुए हार को देख रहा हूँ आखिर मैंने बताया के मैं हार को इसलिए देख

रहा हूँ के बिलकुल ऐसा ही बल्के गोया यही हार मैंने मक्का मौअज़्ज़मा में पाया था। और फिर उसके मालिक को वापस दे दिया था। फिर मैंने मक्का मौअज़्ज़मा का वो पूरा क़िस्सा बयान किया। लोगों ने जब वो क़िस्सा मुझ से सुना तो सुबहान अल्लाह और लाइलाहा इल-लल्लाह और अल्लाहू अक्बर उनकी ज़बानों पर जारी हो गया और एक शौर मच गया और फिर उन लोगों ने बताया के बेशक ये वही हार है जो मक्का मौअज़्ज़मा में गुम हो गया था। और तुम ने पाया था और वो साहब वजाहत बुज़ुर्ग जिनको तुम ने वो हार वापस किया था। इस लड़की के वालिद थे। जो हमारे जज़ीरे के बड़े सालेह बुज़ुर्ग थे। उनका अब से कुछ अर्से पहले ही इन्तिक़ाल हुआ है, वो कहा करते थे के मैंने दुनिया में बस एक ही सच्चा मुसलमान मर्द देखा है। जिसने मक्का मौअज़्ज़मा में मेरा हार पाकर मुझे वापस किया था और मैं इसरार से उसको पाँच सौ अशर्फियाँ देना चाहता था। मगर वो क़बूल करने पर आमादा नहीं हुआ। लोगों ने बताया के वो बुज़ुर्ग बराबर ये दुआ किया करते थे के ऐ अल्लाह! किसी तरह अपने उस बन्दे को मेरे पास पहुँचा दे और ऐसी सूरत पैदा फ़रमा दे के मैं अपनी बेटी की उससे शादी करूं और आज हम देख रहे हैं के अल्लाह तआला ने अपने उस सालेह बन्दे की दुआ किस तरह क़बूल फ़रमाई। (माह तय्यबा अगस्त 1965 ई०)

सबक़:- इस वाक़ेये में दो मोमिनाना किरदार उभर कर सामने आते हैं। और उनकी खसूसियत ऐसी हैं के हमें उन्हें ज़्यादा से ज़्यादा अपने अन्दर पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए। पहला किरदार उस मर्द मोमिन का है। जिसने हार पाया और उसे बिला किसी मुआवज़े के वापस कर दिया। अगर मोमिन अपनी नेकी अमानत अैर दयानत का कोई बदला किसी बन्दे से लेने पर राज़ी ना हो। तो अल्लाह तआला उसके लिए ग़ैब से आसानियाँ फ़राहम करता है। अल्लाह तआला की ना फ़रमानी से बचते हुए महेज़ उसकी खुशनूदी के लिए बन्दा जब अपने को किसी सख़्ती में मुब्तला कर देता है। और उस पर भरोसा करते हुए परेशानियाँ झेलने के लिए हंसी खुशी तैयार हो जाता हे। तो अल्ला तआला उसके लिए ऐसी ऐसी सूरतों से आसानियाँ फ़राहम करता है के जिन्हें वो कभी सोच भी नहीं सकता। अल्लाह तआला का इर्शाद है के *वमंय यत्ताक़िलल्लाहा यजअल्-लहू मख़रजन। व यरज़ुक़हू मिन हैसु ला यहतसीबु वमंय यतावक्कलु अलल्लाही फहुवा हस्बुहू* (सूरह-ए-तलाक़) और जो कोई अल्लाह का तक़वा इख़्तियार करेगा। तो अल्लाह उसके लिए (मुसीबतों से बच निकलने की सूरत पैदा कर देगा। और उसे ऐसी जगह से रोज़ी देगा। जहाँ

से उसे कोई गुमान तक ना होगा। और जो कोई अल्लाह पर भरोसा रखेगा। तो अल्लाह के लिए काफी है।"

दूसरा किरदार उस मोमिन का है। जिसका हार गुम हुआ। अगरचै एक खुशहाल और दौलतमंद शख़्स था। लेकिन अपनी लड़की के रिश्ते के लिए उसने आरज़ू की तो एक खुदा से डरने वाले नेक और मुत्तक़ी शख़्स के लिए आरज़ू की। जिस शख़्स के दिल में जितना ईमान होता है उतना ही उसके दिल में उन लोगों की क़द्र व मंज़िलत होती है। जो सच्चे मोमिन हों। मोमिन की नज़र में इज़्ज़त और बड़ाई का मैयार सिर्फ ईमान और अल्लाह से ताल्लुक़ ही हो सकता है माल व दौलत और नस्ल और खानदान सब उसके बाद की चीज़ें हैं। अगर आपको ये अंदाज़ा करना हो के किसी शख़्स के दिल में असल इज़्ज़त और क़द्र किस चीज़ की है, तो आप ये देखें के वो किस क़िस्म के लोगों को पसंद करता है। और खुद किन की इज़्ज़त और एहत्राम करता है। दौलत का पुजारी हमेशा दौलतमंद को बड़ा समझेगा। और उन ही की इज़्ज़त करेगा। और उनकी क़द्र करेगा। खेलों के शौक़ीन की नज़र में मशहूर खिलाड़ियों क मुक़ाम बुलंद होगा। और वो उनकी क़द्र करेगा। किसी के दिल में गाने और शैरो शायरी की क़द्र होगी। तो आप हमेशा उसे गवय्यों और शायरों का तज़करह और उनकी तारीफ करता पायेंगे। इसी तरह जिस शख़्स के दिल में ईमान और अमल सालेह की क़द्रो मंज़िलत होगी। वो हमेशा सच्चे अहले ईमान और अल्लाह के नेक बन्दों का एहत्राम करेगा और उनसे ही उसे दिल लग. .ो और मोहब्बत होगी।

हिकायत नम्बर (883) अद्लो इंसाफ

एक दिन सुलतान मेहमूद ग़ज़नवी हस्बे मामूल दरबार में बैठे हुए थे। वुज़रा और अमरा दस्त बस्ता हाज़िर थे। आम लोग अपनी अपनी अर्ज़ियाँ पेश कर रहे थे। और सुलतान उन पर मुनासिब एहकाम सादिर कर रहे थे के एक शख़्स ने आकर अर्ज़ की मेरी शिकायत निहायत संगीन है। और कुछ इस क़िस्म की है के मैं उसे बरसर दरबार अर्ज़ नहीं कर सकता।

सुलतान मेहमूद ये सुनकर फौरन उठ खड़े हुए और सायल को अपने हमराह खलवत में ले जाकर पूछा के तुम्हें क्या शिकायत है।

सायल ने अर्ज़ किया के एक अर्से से बन्दगान आली के भांजे ने ये तरीक़ा इख़्तियार कर रखा है के वो मुसल्लह होकर मेरे मकान पर आता है और मुझे मार पीट कर बाहर निकाल देता है और खुद जबरन मेरे घर में शब भर दादे ऐश देता है। ग़ज़नी की कोई अदालत ऐसी नहीं। जिसमें मैंने इस ज़ुल्मो तअदी की फ़रयाद ना की हो। लेकिन किसी को इंसाफ करने

की जुर्रात नहीं हुई। जब मैं हर तरफ़ से मायूस हो गया। तो आज मजबूरन जहाँ पनाह की बारगाह आलिया में इंसाफ के लिए हाज़िर हुआ हूँ। और शहनशाह आली के बेलाग इंसाफ। परवरी व फ़रयाद रसी और रिआया से बे पनाह शफ़्क़त पर भरोसा करके मैंने अपना हाल अर्ज़ कर दिया है, ख़ालिके हक़ीक़ी ने आपको अपनी मख़लूक़ का मुहाफिज़ और निगहबान बनाया है। क़यामत में रिआया और कमज़ोरों पर मुज़ालिम के आप खुदाऐ क़हार के रूबरू जवाबदह होंगे अगर आपने मेरे हाल पर रहम फ़रमा कर इंसाफ किया तो बेहतर है वरना मैं इस मामले को मुनतक़िम हक़ीक़ी के सपुर्द करके उसके बे रू व रिवायत फ़ैसला तक इन्तिज़ार करूंगा।

सुलतान पर इस वाक़ेये का इतना असर हुआ के वो बे इख़्तियार आबदीदा हो गए और सायल से कहा। तुम अब से पहले मेरे पास क्यों ना आए? तुम ने ना हक़ अब तक ये ज़ुल्म बर्दाश्त किया।"

सायल ने अर्ज़ किया। मैं अर्से से इस कोशिश में लगा हुआ था के किसी तरह बारगाहे सुलतानी तक पहुँच जाऊँ। मगर दरबानों और चौबदारों की क़दग़न ने कामयाब ना होने दिया। खुदा ही जानता है के आज भी मैं किस तदबीर से यहाँ तक पहुँचा हूँ। मुझ से ग़रीबों और मज़लूमों को ये बात कहाँ नसीब है के जब चाहें बेधड़क दरबार सुलतानी में हाज़िर हो जायें और सुलतान को अपने दर्दे दिल की दास्तान सुना सकें।

सुलतान ने सायल को इतमिनान और दिलासा देकर ताकीद की के मुलाक़ात और गुफ़्तगू का किसी से ज़िक्र ना करना और जिस वक़्त भी वो शख़्स तुम्हारे घर आए उसी वक़्त मुझे उसकी इत्तिला कर देना। मैं उसको ऐसी इब्रतनाक सज़ा दूंगा के आईंदा दूसरों को ऐसे मज़ालिम की जुर्रात ना हो सकेगी।

सायल ने अर्ज़ किया के मुझे ऐसे बेकस और बेयारो मददगार के लिए ये क्यों कर मुमकिन हो सकेगा के जब चाहूं बिला किसी मज़ाहेमत के ख़िदमते सुलतानी में हाज़िर हो जाऊँ और आपको मतलअ करूं।"

सुलतान ने ये सुनकर दरबानों को तलब किया और सायल को उनसे रोशनास कराकर हुक्म दिया। के ये शख़्स जिस वक़्त भी आए हमारे पास पहुँचा दिया जाए और किसी तरह की मुज़ाहेमत ना करें।

दो रातें गुज़र गईं। मगर सायल ना आया। सुलतान को तशवीश हुई के ना मालूम ग़रीब मज़लूम को क्या हादसा पेश आया वो इसी फ़िक्र में ग़लतान था के तीसरी रात को सायल दौड़ता हुआ आस्ताना शाहही पर पहुँचा।

इत्तिला मिलते ही सुलतान फीअलफोर बाहर निकला और सायल के हमरा उसके घर पहुँच कर अपनी आँखों से वो सब कुछ देख लिया। जो सायल ने उसे बतलाया था। पलंग के सिरहाने शमा जल रही थी। सुलतान ने शमा गुल करा दी और खुद खंजर निकाल कर उसका सर उड़ा दिया। उसके बाद शमा रोशन कराई। मक़्तूल का चहरा देखकर बेसाख़्ता सुलतान की ज़बान से अलहम्दू लिल्लाह निकला। और फिर बेताबी के साथ उसने सायल से पीने के लिए पानी माँगा। पानी पी कर सुलतान ने सायल से कहा के तुम इतमिनान के साथ अपने घर में आराम करो। अब इंशा अल्लाह तुम्हें कोई तकलीफ़ ना पहुँचेगी। मेरी वजह से अब तक तुम पर जो मज़ालिम हुए खुदा के लिए उन्हें माफ कर दो। ये कह कर सुलतान रूख़्सत होना चाहता था के सायल ने दामन पकड़ कर अर्ज़ किया के "बंदगान आली ने जिस तरह मज़लूम के साथ इंसाफ फ़रमाया। हत्ता के अपनी क़राबत और खून का भी मत्‌लक़न ख़याल ना किया। अल्लाह तआला आपको इसकी जज़ाऐ ख़ैर और अज्रे अज़ीम अता फ़रमाए। अगर इजाज़त मरहेमत फ़रमाई जाए तो एक बात मालूम करना चाहता हूँ। वो ये के आपने पहले शमा गुल कराई और फिर रोशन करा कर मक़्तूल का सर देखकर अलहम्दू लिल्लाह फ़रमाया और उसके फौरन बाद पानी तलब फ़रमाया। इसका क्या सबब था?"

सुलतान ने हर चन्द टालना चाहा। मगर सायल के इसरार पर उसे बतलाना पड़ा के शमा गुल कराने का मक़्सद ये था के मुबादा रोशनी में उस शख़्स का चहरा देखकर बहन के खून की मोहब्बत मुझे सज़ा देने से बाज़ रखे और अलहम्दू लिल्लाह कहने का सबब ये था के मक़्तूल ने अपने आप को मेरा भांजा बता कर तुम्हें शाही ताल्लक़ से मरऊब कर के अपने ख़्वाहिशाते नफ़्सानी को पूरा करने के लिए रास्ता साफ रखना चाहता था। खुदा का हज़ार हज़ार शुक्र है के मेहमूद के मुतअल्लिक़ीन का सफ़ा शर्मनाक बेहूदगी से कोई ताल्लुक़ नहीं है और पानी माँगने की वजह ये थी के जब से तुम ने अपना वाक़ेया सुनाया था मैंने अहद कर लिया था के जब तक तुम्हारा इंसाफ ना कर लूंगा। आबो दाना मुझ पर हराम है। अब चूंके मैंने अपने फर्ज़ से सुबकदोश हो चुका था। और तशंगी का शदीद ग़ल्बा था। इसलिए मैं पानी माँगने पर मजबूर हो गया। (तारीख फरिश्ता बहवाला तारीख़ अंबाऐ गैती)

सबक़:- इस्लाम अद्‌लो इंसाफ का इल्म बरदार है और जो हाकिम सच्चे मुसलमान होते हैं, वो अपने किसी क़रीबी का भी लिहाज़ नहीं करते और हर हाल में अद्‌लो इंसाफ ही से काम लेते हैं। और ये भी मालूम हुआ के

मुसलमान चाहे कितने बड़े ओहदे पर क्यों ना पहुँच जाए। वो ज़ुल्मो सितम के कभी क़रीब नहीं जाता।

हिकायत नम्बर(884) नसीहत

हज़रत शफीक़ बलख़ी रहमत-उल्लाह अलेह एक मर्तबा हारून रशीद से मिले। तो बादशाह ने अर्ज़ की। हुज़ूर! मुझे कुछ नसीहत फ़रमाईये हज़रत शफीक़ ने फ़रमाया।

(1) खुदा तआला ने तुझे सिद्दीके़ अक्बर के मुक़ाम पर बिठाया है। और वो चाहता है के तुम सिद्क़ विरासती से काम लो और

(2) उसने तुझे फारूके़ आज़म के मुक़ाम पर बिठाया है और वो चाहता है क तुम हक़ व बातिल में फर्क़ करो और

(3) उसने तुझे उस्माने ग़नी के मुक़ाम पर बिठाया है और वो चाहता है के तुम शर्मो हया को अपनाओ और

(4) उसने तुझे अली अलमुर्तज़ा के मुक़ाम पर बिठाया है और वो चाहता है के तुम अद्लो इल्म से काम लो और हारून रशीद ने अर्ज़ की कुछ और भी फ़रमाईये तो। फ़रमाया।

अल्लाह तआला ने एक घर बनाया है जिसका नाम जहन्नुम है और तुझे उसने उसके दरवाज़े पर बिठाया है इसलिए ताके तुम लोगों को जहन्नुम से दूर रखो। और उससे दूर रखने के लिए खुदा ने तुझे तीन चीज़ें दी हैं। माल दुर्रा और तलवार और तुझे हुक्म दिया है के ऐ मेरे बन्दे! लोगों को उस घर से उन तीन चीज़ों से दूर रख जो मोहताज आए। उसे माल दे और जो शरीयत की इत्तिबा ना करे उसे दुर्रे के साथ मतीअ बना, और जो ना हक़ क़त्ल करे उसका तलवार के साथ फैसला कर।

हारून रशीद ने कहा। हुज़ूर! कुछ और भी फ़रमाईये फ़रमायाः ऐ बादशाह! तुम दरया हो। और तुम्हारे अमाल नहरें हैं। तुम अगर साफ रहोगे तो नहरें भी साफ रहेंगी और दरया ही अगर गंदा हो गया तो नहरें भी गंदी हो जायेंगी। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 52, जिल्द:2)

सबक़:- साहबे इक़्तिदार की ज़िम्मेदारियाँ बढ़ जाती हैं और उसे क़दम क़दम पर मोहतात रहना पड़ता है और अपने बुज़ुर्गों के नक़्शे क़दम पर चलना पड़ता है और ये भी मालूम हुआ के बड़ों के अख़लाक़ व अतवार का छोटों पर असर पड़ता है। इसलिए बड़ों को अच्छा और नेक बनना चाहिए।

हिकायत नम्बर(885) रहम दिली

हज़रत फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने एक शख़्स को एक इलाके का हाकिम मुक़र्रर फ़रमाने के लिए कातिब से फ़रमाया के उसकी इमारत के लिए कागज़ लिखो। कातिब लिख ही रहा था के एक छोटा बच्चा आया। और हज़रत फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो तआला की गोद में आ बैठा और हज़रत फारूक़ उससे प्यार करने लगे। वही नामज़द शख़्स जिसकी इमारत के लिए कागज़ लिखा जा रहा था। कहने लगा। उसे अमीर-उल-मोमिनीन! मेरे दस बच्चे हैं। मगर मैंने आज तक किसी बच्चे को क़रीब नहीं फटकने दिया और आपने उस बच्चे को गोद में बिठा लिया है। हज़रत फारूक़ ने ये सुनते ही हुक्म दिया के कागज़ फाड़ दिया जाए और उसके तक़र्रुर को मनसूख समझा जाए। वो हाकिम बनने का अहल नहीं। उसने पूछा के मेरा क़सूर? तो फ़रमाया: जो शख़्स अपनी औलाद पर रहम नहीं करता। वो रूईय्यत पर कब रहम करेगा। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 58, जिल्द:2)

सबक़:- हाकिम के दिल में रूईय्यत के लिए रहम व शफ्क़त का होना ज़रूरी है, और संग दिल इस क़ाबिल नहीं के वो हाकिम बने और ये भी मालूम हुआ के हज़रत फारूक़ बड़े रहम दिल थे और रिआया का उन्हें बड़ा ख़याल था। और रिआया का खयाल वही रखता है जिसके दिल में खुदा का ख़ौफ हो। फिर ऐसी मुबारक हस्ती का दुश्मन वही हो सकता है जिसके दिल में खुदा का ख़ौफ ना हो।

हिकायत नम्बर(886) नमाज़ और बालों की आराईश

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के वालिद अब्दुल अज़ीज़ मिस्र के गवरनर थे। उन्होंने अपने लड़के उमर को आला तलीम दिलाने के लिए मदीना में हज़रत सालेह तबिन कीसान की निगरानी में दे दिया। ये सालेह बिन कीसान का फैज़ाने तरबीयत था के बनी उमय्या के खानवादे में वो "फारूके सानी" पैदा हुए। जिसने खिलाफत राशिदा को अज़सरे नो ज़िन्दा कर दिया। सालेह बिन कीसन ने किस एहतिमाम से उनकी तरबीयत की। उसका अंदाज़ा इससे हो सकता है के एक मर्तबा उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने नमाज़ में देर कर दी।

"तुमने आज नमाज़ में देर क्यों कर दी?" खुदा परस्त उस्ताद ने बाज़ पुर्स करते हुए पूछा।

"बाल संवार रहा था। इसलिए ज़रा देर हो गई।" शार्गिद ने अदब से जवाब दिया।

"अच्छा, अब बालों की आराईश में इतना शग़फ़ हो गया के उसको नमाज़ पर तरजीह दी जाती है" शफीक उस्ताद ने डांटते हुए कहा।

उसके बाद उनके वालिद को उस्ताद ने ये वाक़ेया लिख भेजा अब्दुल अज़ीज़ को ये मालूम हुआ। तो उसी वक़्त एक आदमी को मिस्र से मदीना रवाना किया। जिसने आकर सबसे पहले उनके सर के बाल मुंडे, उसके बाद किसी से बात चीज की। उम्र के वालिद का यही हुक्म था।

हुस्ने तरबीयत का यही एहतिमाम था जिसने अम्वी खानदान के एक नाज़ परवर्दा शहज़ादे को "हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्हु, बना दिया। जिनके मुतअल्लिक़ इमाम अहमद बिन हंबल की राय है के वो पहली सदी के मुजद्दिद थे। (यादें माज़ी, सफ़ा 25)"

सबक़:- शफीक़ उस्ताद वही है, जो शार्गिद का दीन भी संवारे सिर्फ दुनिया ही ना बनाए।

हिकायत नम्बर (887) मच्छर का खून

यज़ीद बिन अबी हबीब, जो मिस्र के एक मुमताज़ हाफिज़ हदीस थे। एक मर्तबा बीमार पड़े। अयादत के लिए अमीरे मिस्र होसरह बिन सुहैल हाज़िरे ख़िदमत हुआ और कहने लगा। हज़रत एक मसला तो बताईये जिस कपड़े में मच्छर का खून लगा हो। उसमें नमाज़ अदा हो जाती है या नहीं?" हज़रत यज़ीद बिन अबी हबीब ने ये सुनकर मुंह फैर लिया और गुफ़्तगू बन्द कर दी। उनकी नागवारी-ए-ख़ातिर को महसूस करके होसरह उठ गया। उसको उठते देखकर यज़ीद ने फ़रमाया "रोज़ाना ख़ल्के ख़ुदा का खून करते हो और मुझ से मच्छर के खून के मुतअल्लिक़ मसला पूछते हो।" (यादे माज़ी, सफ़ा 25)

सबक़:- अल्लाह वाले हक़ बात जाबित बादशाह के सामने भी कह देते हैं।

हिकायत नम्बर (888) मसावात

हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्हु अपने मामूल के मुताबिक़ अय्यामे खिलाफत में छोटी आस्तीन और ऊँचे दामन का कुर्ता पहने और मामूली कपड़े का तहबन्द बांधे बाज़ार में जा रहे थे। अमीर-उल-मोमिनीन को देखकर एक शख़्स रूक गया और फिर ताज़ीम के तौर पर उनके पीछे पीछे हो लिया। हज़रत अली ने उससे कहा।

"मेरे बराबर बराबर चलो।"

"अमीर-उल-मोमिनीन, मैं एहत्राम व ताज़ीम के तौर पर आपके पीछे

चल रहा हूँ।" उस शख़्स ने उज़्र करते हुए अर्ज़ किया।

"एहत्राम व ताज़ीम का ये तरीक़ा दुरूस्त नहीं। इसमें हुकमुरान के लिए फितना और मोमिन के लिए ज़िल्लत है।" अमीर-उल-मोमिनीन ने फ़रमाया और उस शख़्स को अपने बराबर चलने पर मजबूर कर दिया। (यादे माज़ी, 26)

सबक़:- जिन्हें अल्लाह बड़ाई देता है। वो तवाज़ौ इख़्तियार करते हैं।

हिकायत नम्बर(889) माज़रत

यज़ीद बिन मोहलिब वाली-ए-खरासान को एक जामअे अलसिफात शख़्श की ज़रूरत थी। उसने लोगों से ऐसे आदमी को दरयाफ़्त किया। लोगों ने अबु बर्दा का नाम लिया। जो हज़रत अबु मूसा अशअरी के बेटे। और बड़े साहबे कमाल बुज़ुर्ग थे। यज़ीद ने उनको बुलाया। बातें की। और फी अलवाकै ख़सायले हस्ना का मजमुआ पाया और कहा। "मैं आपको चन्द ओहदों पर मामूर करना चाहता हूँ।" और इन ओहदों की तफसील बताई।

"मैं इस खिदमत से माज़रत चाहता हूँ" अबु हुरैरा ने जवाब दिया।

"नहीं" आपको वो खिदमत क़बूल करने होगी। यज़ीद ने इसरार से कहा।

"मेरे वालिद अबु मूसा अशअरी ने मुझ से बयान किया था के रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम फ़रमाते थे के जिस शख़्स रे कोई ऐसा अहद क़बूल किया जिसके मुतअल्लिक़ वो खुद जानता है के वो इसका अहल नहीं तो उसको चाहिए के वो दोज़ख़ को अपना ठिकाना बना ले।" ये सुन कर यज़ीद मजबूर हो गया और उनकी माज़रत क़बूल कर ली। (यादे माज़ी, सफ़ा 26)

सबक़:- अल्लाह वाले दुनयवी ओहदों के पीछे नहीं पड़ते।

हिकायत नम्बर(890) ज़हरीला फौड़ा

हज़रत उरवा बिन ज़ुबैर, अब्दुल मलिक के पास गए हुए थे। एक रोज़ वो अपने लड़के को हमराह लेकर शाही असतबल देखने गए। ये लड़का एक घोड़े पर सवार हुआ। जिसने उसे पटख दिया। और उसके सदमे से वो जाँ बहक़ हो गया। उसके बाद ही उरवा के पाँव में एक निहायत ज़ेहरीला फोड़ा हो गया। अत्तिबा ने कहा "पाँव काट देना चाहिए। वरना ज़हर सारे जिस्म में फैल कर हलाकत का बाइस होगा।"

हज़रत उरवा ने अपना पाँव कटवाने के लिए बढ़ा दिया। तबीब ने कहा "थोड़ी सी शराब पी लीजिए ताके तकलीफ का अहसास कम हो।"

"जिस मर्ज़ में मुझ को सेहत की उम्मीद भी हो। मैं उसमें भी हराम शै से मदद नहीं लूंगा।" हज़रत उरवा ने जवाब दिया।

तबीब ने औज़ारों से पाँव काट दिया। हज़रत उरवा निहायत इसतक़लाल से बैठे रहे और ज़बान तस्बीह व तहलील में मशगूल रही। जब खून बन्द करने के लिए ज़ख़्म को दागा गया तो दर्द की शिद्दत से बेहोश हो गए। जब होश में आए तो कटा हुआ पाँव मंगा कर देखा और उलट पलट कर उससे फ़रमाया।

"इस ज़ात की क़सम जिसने तुझ से मेरा बोझ उठवाया। उसको खूब मालूम है के मैं तेरे साथ किसी हराम रास्ते पर गामज़न नहीं हुआ।" बेटे के इन्तिक़ाल और पाँव कटने की मुसीबत पर भी अल्लाह का शुक्र करते और कहते।

"अल्लाह तेरा शुक्र है के मेरे चार हाथ पाँव में से तूने एक ही लिया और तीन बाक़ी रखे अगर तूने कुछ लिया है तो बहुत कुछ बाक़ी रखा है। अगर कुछ मुसीबत में मुब्तला किया है। तो बहुत दिनों आफियत में भी रख चुका है।"(यादे माज़ी, सफ़ा 27)

सबक़:- अल्लाह वाले हर हाल में खुश और राज़ी बरज़ाऐ हक़ रहते हैं। और हराम चीज़ से हर हाल में बचते हैं।

हिकायत नम्बर (891) बुराई का बदला

सुलतान-उल-मशायख़ मेहबूबे इलाही हज़रत निज़ाम-उद्दीद औलिया रहमत-उल्लाह अलेह ने एक रोज़ अपने एक मुरीद से इर्शाद फ़रमाया के अगर किसी ने तेरी ईज़ा के लिए रास्ते में कांटे रखे हों। तो तू उसे रास्ते से हटा दे और अगर तूने भी उसके जवाब में उसके रास्ते कांटे बिछाये तो फिर तमाम दुनिया कांटे ही कांटे हो जायेंगे....

हर के मारा यार ना शदायज़्द औरा यार बाद
हर के मारा रंज बदहद राहतश बसयार बाद
हर के ओखारे नहद दरराहे मा अज़दुश्मनी
या इलाही गुलशन ओ दायमा। बे खार बाद

(मुग़नी-उल-वअज़ैन, सफ़ा 21)

सबक़:- बुराई का बदला हत्ता-उल-इमकान अफ़्वो करम और नेकी से दुनिया चाहिए।

हिकायत नम्बर (892) दुनिया की हैसियत

एक बादशाह ने किसी अल्लाह वाले को अपने महल के साये में बैठा

देखा। जिसने सूखा टुकड़ा पानी में डाल कर खाया। और फिर सो गया। जब उठा तो बादशाह ने उसे बुलवाया और पूछा। जब तूने पानी के साथ सूखा टुकड़ा खाया। और फिर सो गया था। क्या तू अपने परवरदिगार से खुश था। उसने कहा। हाँ! लेकिन मैं तुझे वो शख़्स बतलाता हूँ, जो उससे भी कम पर खुश हो गया! बादशाह ने कहा, वो कौन है? उसने कहा जो आख़िरत के बदले दुनिया पर खुश हो गया। ये अलफाज़ बादशाह पर कारगर हो गए। और रोने लगा। (मुग़नी-उल-वअज़ैन, सफ़ा 20)

सबक़:- ये दुनिया आख़िरत के मुक़ाबले में रोटी के एक सूखे टुकड़े से भी कम हैसियत रखती है। फिर जो लोग आखिरत को भूल कर इस दुनिया के पीछे पड़े हुए हैं। किस क़द्र बेख़बर और नादान हैं।

हिकायत नम्बर(893) ग़ाफ़िल इंसान की हक़ीक़त

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से किसी ने पूछा। ये क्या बात है के जब हम बैत-उल-खला जाते हैं। तो पाखाने की तरफ़ से आँखों को रोक नहीं सकते और उसको देखते हैं। गोया ये बताया जाता है के देखा जिस चीज़ में तू बुख़्ल करता था। अब क्या हो गई? और तेरी असलीयत ये ग़लाज़त व नजासत है। जिस पर तो नाज़ाँ है। इस मामले में हैवानात तुझ से बदर्जहा अफ़्ज़ल हैं। जिनका गोबर भी कार आमद व कम नजिस है। (मुग़नी-उल-वअज़ैन, सफ़ा 20)

सबक़:- मालो मताअ दुनिया की हक़ीक़त ग़लाज़त ही है के फिर इस ग़लाज़त से दिल लगा लेना और हक़ूक़ उल्लाह व हक़ूक़-उल-इबाद अदा ना करना क्यों ना आक़्बत अंदेशी और नादानी ना हो।

हिकायत नम्बर(894) सहाबा इक्राम

हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से किसी ने पूछा। हज़रत अलक़मा सहाबी अफ़्ज़ल हैं। या हज़रत असवद रज़ी अल्लाहो अन्हुमा। हज़रत इमाम आज़म ने फ़रमाया। खुदा की क़सम हम तो इस लायक़ नहीं के उनका ज़िक्र भी करें। फिर उनमें मवाज़ना कैसे कर सकते हैं? (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 20)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान सभी हमारे लिए वाजिब-उल-ताज़ीम हैं। और हम जैसों का मुंह इस क़ाबिल नहीं के उनका नामे पाक भी लें। फिर अगर उन पाक लोगों

की बज़अम खवैश बुराईयाँ बयान की जाने लगीं तो किस क़द्र ज़ुल्म है।

हिकायत नम्बर(895) नेक काम में खर्च

हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाह तआला का लंगर खाना हर आप व खास के लिए खुला रहता था। जिसमें बड़े बड़े नफीस व लज़ीज़ खाने पकाए जाते थे। जिसकी वजह से लंगर का खर्च बहुत बढ़ गया था। इन इखराजात कसीर को देखकर किसी ने आपसे कहा

ला ख़ैरा फिल इसराफ

यानी फिज़ूल खर्ची में कोई नेकी नहीं है।

आपने फिल बदीहा जवाब दिया।

ला इसराफा फिल ख़ैर

यानी नेकी में कोई फिज़ूल खर्ची नहीं है। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 21)

सबक़:- नेक कामों मसलन महफिल मीलाद, जलूस मीलाद वग़ैरा में जिस क़द्र भी खर्च किया जाए, ये फिज़ूल खर्ची हर गिज़ नहीं है।

हिकायत नम्बर(896) दुनिया का घर

मिर्ज़ा मज़हर जान जानाँ देहलवी रहमत-उल्लाह अलेह तमाम उम्र किराया के मकान में रहे। एक दफा किसी ने कहा। आप अपना घर क्यों नहीं बना लेते। फ़रमाया। छोड़ जाने को अपना और ग़ैर का घर दोनों बराबर हैं। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 21)

सबक़:- दुनिया फानी में कितना मज़बूत और बुलंद मकान भी बनवा लो आख़िर एक दिन उसे खाली करना ही पड़ेगा।

हिकायत नम्बर(897) बुज़ुर्गों की नज़र

हज़रत जुनैद रहमत-उल्लाह अलेह के पास एक रोज़ एक शख़्स आया। और कहा। हज़रत आपका वअज़ शहर ही काम करता है। या जंगल में भी कुछ तासीर बख़्शता है? आपने हाल पूछा, तो उसने बताया के चन्द अश्खास फलाँ मुक़ाम पर जंगल के अन्दर मसरूफे रक़्स व सरवर हैं और शराब के नशे में भी मख़मूर हैं। आपने उसी वक़्त मुंह लपेट कर जंगल की राह ली। जब वो क़रीब पहुँचे। तो वो लोग भागने लगे। फ़रमाया भोगो नहीं। मैं भी तुम्हारा हम मुशरिब हूँ। हमारे लिए भी लाओ। वो बोले अब तो ख़त्म हो गई है। फ़रमाया। तो आओ मैं तैयार करके दिखा दूं। एक काम तुम्हें सिखा जाता

हूँ। उससे शराब खुद ब खुद आ जाया करगी और वो होगी भी बहुत अच्छी। वो लोग शायक़ हुए और आपने फ़रमाया। पहले तुम सब अपने कपड़े बदलो। सबने ग़ुस्ल किया और कपड़े धोऐ और पाक व साफ़ होकर आ गए। तब फ़रमाया के सब दो दो रकअत नमाज़ पढ़ो वो नमाज़ में मशग़ूल हुए। तो आपने दुआ माँगी के बारे खुदाया मेरा तो इतना ही काम था के तेरे हुज़ूर उनको खड़ा कर दिया। अब तू चाहे उनको गुमराह रख, चाहे हिदायत बख़्श। चुनाँचे आपकी दुआ क़बूल हुई। और वो सब हिदायत कामिल से बेहरावर हो गए। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 21)

सबक़:-

ना किताबों से ना कालिज के है दर से पैदा
दीन होता है बुज़ुर्गों की नज़र से पैदा

हिकायत नम्बर(898) क़ब्रिस्तान

हज़रत बहलूल रहमत-उल्लाह अलेह क़बिस्तान में रहते थे एक दिन हज़रत सरी सक़्ता अलेह अर्रहमा ने उनसे कहा। आप शहर में क्यों क़याम नहीं करते? जवाब दिया के मैं ऐसे लोगों के पास रहता हूँ के अगर उनके पास बैठता हूँ तो मुझे तकलीफ नहीं पहुँचाते। और अगर उनसे ग़ायब होता हूँ तो ग़ीबत नहीं करते। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 21)

सबक़:- किसी को दुख देने और किसी की ग़ीबत करने से बेहतर है के आदमी मर जाये।

हिकायत नम्बर(899) माहान अरमनी

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह सौ आदमियों को अपने साथ लेकर माहान अरमनी के दरबान में तशरीफ़ ले गए। माहान अरमनी के पास दस लाख फौज थी उसने दरबार में रेशम का फर्श बिछाया हुआ था। हज़रत ख़ालिद वहाँ पहुँचे। तो आपने उसके फर्श को उठा दिया। माहान ने पूछा। ऐ ख़ालिद! मैंने तो तुम्हारी इज़्ज़त के लिए ये फर्श बिछाया था। मगर तुम ने उठा दिया? हज़रत ख़ालिद ने जवाब दिया। खुदा तआला का बिछाया हुआ फर्श तेरे फर्श से बहुत अच्छा है। माहान ने कहा। ऐ ख़ालिद! मैं चाहता हूँ के तुझे अपना भाई बना लूं। हज़रत ख़ालिद ने फ़रमाया बड़ी खुशी की बात है *ला इलाहा इल-लल्लाह मोहम्मदुर रसूल अल्लाह* पढ़ लो। ताके मेरे भाई बन जाओ। माहान ने कहा। ये बात नहीं हो सकती। हज़रत खालिद ने फ़रमाया। यही

कलमा ना पढ़ने की वजह से तो हम ने अपनी हक़ीक़ी भाईयों को भी छोड़ दिया है। फिर तुम्हें कैसे भाई बना लूं।

फिर हज़रत ख़ालिद ने फ़रमाया: माहान! तू मुसलमान हो जा। वरना वो दिल क़रीब है के तू अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत उमर के सामने इस तरह हाज़िर किया जाएगा के तेरे गले में रस्सी होगी। और तुझ को एक शख़्स घसीटता होगा। माहान ने ये बात सुनी। तो गुस्से से आग बगूला हो गया। और हुक्म दिया के पकड़ लो इन लोगों को। हज़र ख़ालिद फौरन खड़े हो गए और अपने साथियों से फ़रमाने लगें ख़बरदार! अब एक दूसरे को मत देखना। अब इंशा अल्लाह होज़े कोसर पर मुलाक़ात होगी और फौरन तलवारें खींच लीं। ये सूरत देखकर माहान डर गया और कहने लगा के ख़ालिद! मैं तो मज़ाक़ कर रहा था। हज़रत ख़ालिद वहीं बैठ गए (तारीख़े इस्लाम, सफ़ा 77)

सबक़:- मुसलमान अपने अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरता और कुफ़्फ़ार की कसरत उसकी नज़र में कोई चीज़ नहीं और अल्लाह की राह में कट मरने को ये हर वक़्त तैयार रहता है। और ये भी मालूम हुआ के दुनयवी शानो शौकत और दुनयवी ऐशो इशरत से मुसलमान बे नियाज़ रहता है और हर हाल में उसकी नज़र अपने अल्लाह पर रहती है।

हिकायत नम्बर (900) गवाही

हज़रत युसूफ़ अलेहिस्सलाम मिस्र के बादशाह बने। तो उस वक़्त आपको अपने लिए एक वज़ीर की ज़रूरत पड़ी। जिब्राईले अमीन ने हाज़िर होकर अर्ज़ किया के ख़ुदा तआला फ़रमाता है के कल सुबह शहर से बाहर आप तशरीफ़ ले जायें जिस शख़्स को सबसे पहले शहर में दाखिल होता देखें उसे अपना वज़ीर बना लें। चुनाँचे हज़रत युसूफ़ अलेहिस्सलाम दूसरे रोज़ सुबह बाहर तशरीफ़ ले गए। तो देखा के एक ख़ूबसूरत नोजवान सर पर लकड़ियों का गठ्ठा उठाए शहर में दाखिल हो रहा है। सब से पहले वही नोजवान नज़र आया। जो शहर में दाखिल हो रहा था। हज़रत युसूफ़ अलेहिस्सलाम बड़े हैरान हुए और सोचने लगे के क्या यही शख़्स मेरा वज़ीर बनेगा? इतने में जिब्राईले अमीन हाज़िर हुए और अर्ज़ किया।

हुज़ूर! ये वही बच्चा है जिसने पंघूड़े में आपकी असमत की गवाही दी थी। अल्लाह तआला ने उसकी इसी खिदमत के सिले में उसे आपकी विज़ारत के लिए मुंतख़िब फ़रमाया है। चुनाँचे हज़रत युसूफ़ अलेहिस्सलाम ने उस नोजवान को अपना वज़ीर बना लिया। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 138)

सबक़:- जिस बच्चे ने हज़रत युसूफ अलेहिस्सलाम की असमत की गवाही दी, वो इतनी इज़्ज़त व शराफत से नवाज़ा गया। तो जो शख़्स अल्लाह तआला की तौहीद और उसके मेहबूब की रिसालत की गवाही देगा। वो क्यों ना कल क़यामत के रोज़ उससे भी ज़्यादा इज़्ज़त व शराफत का मुसतहिक़ होगा।

हिकायत नम्बर (901) मसमरीज़म

एक बादशाह अफ़लातून के पास आया। और कहने लगा के आप इस तरह सबसे अलग रहते हैं। आप हमारे हाँ तशरीफ़ ले चलिए। हम आपकी खलवत के लिए उम्दा इन्तिज़ाम कर देंगे। अफलातून ने इंकार कर दिया। बादशाह ने इसरार किया। अफलातून ने कहा। अच्छा पहले आपकी दावत है, बादशाह ने अपने जी में कहा के उसके दिमाग़ में खलल है। ये दावत करेंगे? खै़र क़बूल किया। उसके बाद अफलातून ने कहा के दावत मअे आपके लश्कर के है बादशाह को बड़ा ही ताज्जुब हुआ। और अब तो क़रीब यक़ीन हो गया के ये मजनूँ है खै़र ये भी मंज़ूर किया। पूछा किस दिन है। कहा फलाँ दिन! जब वो दिन हुआ, बादशाह मअे अपने लश्कर के उस पहाड़ की तरफ़ चला। देखा कई मील से बड़े सामान हैं। नक़ीब और चौबदार भी कुछ हैं। खै़र यहाँ पहुँचा। तो ऐसा सामान देखा जो कभी उससे पहले ना देखा था। खुद्दाम निहायत इक्राम से बादशाह को मअे लश्कर के ले गए। खाना खिलाया गया। उसके बाद हर शख़्स को एक एक कमरा उसके मर्तबे के मुताबिक़ आरास्ता और एक एक औरत शब बाशी के लिए दी गई। बादशाह को ये सब देखकर ताज्जुब बढ़ता गया...

ऐं चै मे बेनम बैदारी अस्त या रब या बख़्वाब

सुबह को आँख खुली तो ना वो कमरे है ना वो औरत कपड़े गंदे, घास का पोला बग़ल में दबा हुआ। भूक के मारे उठा नहीं जाता। तो क्या था? अफलातून ने फक़्त खयाल किया था के उनके दिमाग़ में ये सूरतें समा गईं। मसमरीज़म की क़ुव्वत थी। लाखों आदमियों के दिमाग़ में एक दम से इतना बड़ा तसर्रूफ कर दिया।

(मोलवी अशरफ़ अली साहब की किताब रूह-उल-जवार, सफ़ा 21)

सबक़:- मोलवी अशरफ़ अली साहब की लिखी हुई इस हिकायत से मालूम हुआ के इंसान में बड़ी बड़ी ताक़तें पौशीदा हैं। अहले फन अफ़राद जब अपनी ताक़तों को बरवऐ कार लाते हैं, तो देखने वाले दंग रह जाते हैं। ये तो अफलातून का तसर्रूफ था। जो उसे मसमरीज़म की बदौलत हासिल था। फिर वो पाक जिनका ताल्लुक़ खुदाऐ ज़ुलजलाल से है और जिनके पास दौलत

इर्फान है। उनके तसर्रूफात का इंकार क्यों गुमराही ना होगी? और उन अल्लाह वालों के आक़ा मौला हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जिनकी ज़ाते ग्रामी मुनब्बै जुमला कमालात है। अगर कोई शख़्स उनके मुतअल्लिक़ यूं कहने लगे के "नबी के चाहने से कुछ नहीं होता।" तो अंदाज़ा कर लीजिए के ऐसा शख़्स कितना बड़ा जाहिल व गुमराह है। और ये भी मालूम हुआ के इस दुनिया के जुमला मनाज़िर ऐश व इशरत महेज एक वाहिमा और फानी मनाज़िर हैं। कल क़यामत के रोज़ जब आँख खुलेगी तो इस दुनिया की कोई चीज़ साथ ना होगी। ना ये मकान होंगे ना ये सामान बल्के आयत *लक़द जिऐतुमुना फुरादी कमा खलक़नाकुम अव्वल मर्रातीं* के मुताबिक़ कुछ भी साथ ना रहेगा। इसलिए शायर ने लिखा है के...

कितना ऊँचा क़स्र दुनिया को बना ले जाओगे
कितनी गहरी उसकी बुनियादें खुदा ले जाओगे
कितना अर्ज़ व तूल में उसको बढ़ा ले जाओगे
खींच कर उसका कहाँ तक सिलसिला ले जाओगे
उसको क्या चलती दफा सर पर उठाते ले जाओगे
आए थे क्या लाए थे जाओगे क्या ले जाओगे

हिकायत नम्बर (902) एक बुज़ुर्ग

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं के हम चन्द अफ़राद क़ाहिरा जा रहे थे। रास्ते में हमारे एक बुज़ुर्ग साथी जिनका नाम शेख अमीन-उद्दीन था। उनका विसाल हो गया। क़ाहिरा नज़दीक ही था के हम ने उनकी मईयत को उठाया और शहर में दाखिल होने के लिए एक दरवाज़े के पास पहुँचे तो पेहरेदारों ने रोका। और कहा मईयत अन्दर नहीं जा सकती।

फरफ़अश्शेखू इसबआहू वयदाहू क़ददा खलना

हज़रत शेख अमीन-उद्दीन ने अपनी उंगली और हाथ उठा दिया तो हम शहर में दाखिल हो गए। (शरह अलसदूर-उल-इमाम सयूती रहमत-उल्लाह अलेह, सफ़ा 86)

सबक़:- अल्लाह वाले विसाल के बाद भी ज़िन्दा रहते हैं। और ये भी मालूम हुआ के जो बातें हम करें, वो इन बातों को भी सुनते हैं।

हिकायत नम्बर (903) एक शहीद

हज़रत ज़ैन-उद्दीद बोशी रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के मनसूरह की लड़ाई में इसाईयों ने कुछ मुसलमान पकड़ लिए और उन्हें कैदी बना लिया। इन कैदियों में हज़रत अब्दुर्रहमान फक़ीह भी थे। वो क़ुरआन की

तिलावत कर रहे थे, और आपने ये आयत भी पढ़ी।

वला तहसाबन्नल्लज़ीना कुतीलू फी सबीलिल्लाही अमवातन बल अहयाउन इंदा रब्बीहिम युरज़कूना

यानी जो अल्लाह की राह में कत्ल कर दिए जायें उन्हें मुर्दा मत समझो, बल्के वो अपने अल्लाह के नज़दीक ज़िन्दा हैं और रिज़्क़ दिए जाते हैं।

उसके बाद इसाईयों ने जब हज़रत अब्दुर्रहमान फकीह को भी कत्ल कर दिया तो एक इसाई सरदार उनकी नअश के पास आकर कहने लगा। "ऐ मुसलमानों के बुजुर्ग! तुम कहा करते थे।"

वला तहसाबन्नल्लज़ीना कुतीलु फी सबीलिल्लाही अमवातन बल अहयाउन इंदा रब्बीहिम अल्लाह की राह में कत्ल होने वाले ज़िन्दा हैं बताओ ज़िन्दगी कहाँ गई?

फरफ़ाअल फकीहू राअसाहू काला हय्यू व रब्बिल काबती हज़रत फकीह ने अपना सर उठाया और फ़रमायाः ज़िन्दा हूँ रब्बे कअबा की क़सम!

इसाई ये सुनकर हैरान रह गया और घोड़े से उतर कर आपका मुंह चूमने लगा और अपने सिपाहियों से उठवा कर आपको अपने शहर में ले गया। (शरह-अल-सदूर, सफ़ा 86)

सबक़:- शौहदा इक्राम ज़िन्दा होते हैं। उन्हें मुर्दा समझना भी ममनू है और मुसलमानों का उनके ज़िन्दा होने पर ईमान है और ये भी मालूम हुआ के इन्तिक़ाल फ़रमाने के बाद भी ये अल्लाह वाले सुनते हैं। और बअज़ अवक़ात जवाब भी दे देते हैं।

हिकायत नम्बर(904) ज़िन्दा ज़िन्दा ही हैं

हज़रत अबु सईद ख़राज़ा रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के मैं मक्का मोअज़्ज़मा में था। एक रोज़ बाब बनी शीबा में मैंने एक नोजवान की मईयत को देखा, मैंने जब उसकी तरफ़ नज़र की तो नोजवान मईयत ने तबस्सुम फ़रमा कर मुझ से खिताब फ़रमाया। और कहाः

या अबा सईदिन अमा सलीमुत इन्ना इल्ला हया अहयाउन व इन मातू व इन्नामा यनकुलुना मिन वादिन इला वादिन

ऐ अबु सईद! क्या आप नहीं जानते के ज़िन्दा ज़िन्दा ही हैं। अगरचै मर जायें वो तो सिर्फ एक घर से दूसरे घर में मुंतक़िल होते हैं। (शरह-अल-सदूर, सफ़ा 86)

सबक़:- मालूम हुआ के अल्लाह वाले मरने के बाद भी ज़िन्दा ही हैं इसलिए वो ज़िन्दा ज़िन्दा ही हैं, और जो मुर्दा हैं वो जीते ही भी मुर्दा ही हैं। इसलिए के मुर्दा ही हैं पस उन अल्लाह वालों का मरना सिर्फ इसी क़द्र है के एक घर से दूसरे घर चले गए...

कौन कहता है के मोमिन मर गए
क़ैद से छूटे वो अपने घर गए

हिकायत नम्बर(905) दायाँ हाथ

हज़रत इब्राहीम बिन शीबान फ़रमाते हैं। मेरे पास एक बड़ा मुखलिस नोजवान रहता था। जो बड़ा खुदा याद और नेक नीयत इंसान था। उसका इन्तिक़ाल हो गया। तो मैंने कहा मैं उसे ग़ुस्ल आप दूंगा चुनाँचे जब उसे ग़ुस्ल देने लगा। तो परेशानी के बाइस ग़लती से उसका बायाँ हाथ पकड़ के बायें तरफ़ से ग़ुस्ल शुरू करने लगा। अचानक उस नोजवान ने अपना बायाँ हाथ खींच लिया। और दायाँ हाथ आगे कर दिया। मैंने कहा बेशक! ऐ बेटा! तू सच्चा है। और ग़लती मेरी है। (शर-उल-सदूर, सफ़ा 86)

सबक़:- मालूम हुआ के अल्लाह के मक़्बूल बन्दे मरने के बाद भी ज़िन्दा रहते हैं। और जो उन्हें मुर्दा समझते हैं ये उनकी ग़लती है। ऐसे लोग खुद ही मुर्दा होते हैं।

हिकायत नम्बर(906) कल की बात

हज़रत अबु याक़ूब सूसी अलेह अर्रहमा फ़रमाते हैं के मेरा एक मुरीद मक्का मोअज़्ज़मा में मेरे पास आया और कहने लगा: ऐ मेरे उस्ताद! मैं कल ज़ौहर की वक़्त मर जाऊँगा। ये एक दीनार लीजिए, आधे दीनार से मेरे कफन का इन्तिज़ाम करना और आधे से क़ब्र खुदवाने का। दूसरा दिन हुआ तो ज़ौहर के वक़्त मेरे उस मुरीद ने कअबा का तवाफ किया और फिर दूर जाकर लेट गया और फौत हो गया। फिर मैं जब उसे लहद में उतारने लगा। तो मैंने देखा के उसने आँखें खोल दी हैं। मैंने कहा मरने के बाद ज़िन्दगी? तो उसने जवाब दिया।

अना मुहिब्बुन व कुल्लु मुहिब्बुल्लाही हय्युन

मैं मुहिब्ब हूँ और अल्लाह का हर मुहिब्ब ज़िन्दा है। (शरह-अल-सदूर, सफ़ा 86)

सबक़:- मालूम हुआ के अल्लाह की मोहब्बत रखने वाले मरते नहीं। मरते वो हैं जो अल्लाह वालों के बुग्ज़ व अनाद में जीते हैं और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के ग़ुलामों के ग़ुलामों को भी ये इल्म हो जाता है के कल क्या होना है। फिर खुद आक़ा मौला हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के लिए यूं कहना के उन्हें कल की ख़बर ना थी। कितनी बड़ी बे इल्मी और जहालत की दलील है।

हिकायत नम्बर (907) हज़रत उमैर की कहानी

हज़रत उमैर अपने चन्द साथियों समेत इसाईयों की गिरफ़्त में आ गए और शाहे रोम के दरबार में पेश किए गए। शाहे रोम ने हुक्म दिया के सब को क़त्ल कर दिया जाए। चुनाँचे एक एक करके मुसलमानों को क़त्ल कर दिया गया हज़रत उमैर की बारी आई। तो एक पादरी उठा और उसने शाहे रोम के हाथ चूम कर अर्ज़ की के इसे क़त्ल ना कीजिए। बल्के मेरे हवाले कर दीजिए। मैं इसे अपने दीन में ले आऊँगा। चुनाँचे शाहे रोम के हुक्म से उमैर इस पादरी के हवाले कर दिए गए। पादरी हज़रत उमैर को घर लाया और अपनी जवान लड़की को उनके सामने बिठा कर कहने लगा:

"ममलिकत में मेरी बहुत बड़ी इज़्ज़त है मैं तुझे बहुत सा माल भी दूंगा और अपनी ये लड़की भी तुम्हारे निकाह में दे दूंगा। तुम इसाई हो जाओ।"

हज़रत उमैर ने फ़रमाया। मैं दुनिया की ख़ातिर दीन हर गिज़ ना छोड़ूंगा। कुछ रोज़ वो पादरी यही लालच दे देकर हज़रत उमैर को बहकाता रहा। और कोशिश करता रहा के उमैर अपना दीन छोड़ दें मगर हज़रत उमैर का यही जवाब था के....

ये वो नशा नहीं जिसे तुर्शी उतार दे

एक रात पादरी की लड़की ने हज़रत उमैर को एक बाग़ में बुलाया। और कहने लगी। तुम इसाई क्यों नहीं हो जाते हज़रत उमैर बोले। मैं माले दुनिया और औरत की ख़ातिर अपनी आक़बत को हर गिज़ बर्बाद नहीं करना चाहता। लड़की ने कहा। तो अपना दो टोक फ़ैसला सुना दो। क्या हमारे पास रहना चाहते हो। या अपने वतन वापस जाना चाहते हो। उमैर बोले! मैं अपने वतन जाना चाहता हूँ। लड़की बोली तो अच्छा मैं तुम्हें आज़ाद करती हूँ। ऊपर देखो वो सितारा जो सामने नज़र आ रहा है, उसकी सीध में निकल जाओ। रात भर सफर करो। और दिन भर कहीं छुपे रहना, बस वतन पहुँच जाओगे। चुनाँचे उसने कुछ ज़ादे राह भी दिया और हज़रत उमैर को आज़ाद कर दिया। हज़रत उमैर ने तीन रात अपना सफर जारी रखा और चौथे रोज़ आपने देखा के चन्द घोड़े सवार उन्ही की तरफ़ आ रहे हैं। जब वो क़रीब पहुँचे तो देखा के ये वही उनके साथी हैं जो कुछ रोज़ पहले शाहे रोम के हुक्म से शहीद कर दिए गए थे। वो कहने लगे। तुम उमैर हो? ये बोले हाँ उमैर हूँ। उमैर ने पूछा क्या तुम्हें क़त्ल नहीं कर दिया गया था। वो बोले हाँ हमें क़त्ल कर दिया गया था। और हम शहीदों के गिरोह में दाखिल हो गए थे। आज अल्लाह तआला ने शौहदा को इजाज़त दी है के वो हज़रत उमर इब्ने अब्दुल अज़ीज़ के जनाज़े में शिरकत करें। चुनाँचे हम वहाँ जा रहे हैं। फिर एक सवार ने उमैर का हाथ पकड़ कर उठाया और अपने घोड़े पर बिठा लिया। और पल भर में उन्हें उनकी मंज़िल पर पहुँचा दिया।

(शरह-अल-सदूर, सफ़ा 89)

सबक़:- अल्लाह की राह में मरने वाले ज़िन्दा होते हैं और ये भी मालूम हुआ के सच्चे मुसलमान किसी दुनयवी लालच या किसी औरत की ख़ातिर अपना दीन हाथ से नहीं छोड़ देते। और हज़ार लालच के बादजूद वो अपने मसलक पर डटे रहते हैं। और ये भी मालूम हुआ के हज़रत उमर बिन अल अज़ीज़ की बहुत बड़ी शान है के उनके जनाज़े में शौहदा भी शामिल हुए।

हिकायत नम्बर(908) नसीहत

हज़रत हसन बसरी अलेह अर्रहमा अपने शार्गिदों के साथ कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे रास्ते में आपने एक रईस को देखा। जो बड़े करूफर और शानो शौकत के साथ अपने गुलामों के जलू में घोड़े पर बैठा हुआ जा रहा था। हज़रत हसन बसरी अलेह अर्रहमा ने उससे पूछा। कहाँ जा रहे हो। रईस बोला। दरबार बादशाह में जा रहा हूँ। हज़रत ने फ़रमाया। तुमने लिबास फाखरा पहना और लिबास को इत्रियात से मौअत्तर किया है ताके तू दरबारे शाही में शर्मिंदा ना हो। हालाँके दरबारे शाही वाले भी तेरी ही मानिंद बशर हैं। अब तू सोच के कल क़यामत के रोज़ खुदा तआला के दरबारे शाही में जहाँ बड़े बड़े अंबिया औलिया मौजूद होंगे। अपने गुनाहों के मैल से क्या तू शर्मिंदा ना होगा?

रईस के दिल पर इस बात का असर हुआ। फिर आपने पूछा, तूने अपने घोड़े पर कभी उसकी हिम्मत से ज़्यादा बोझ लादा है? रईस ने कहा नहीं। आपने फ़रमाया के घोड़े पर तो तुम रहम करते हो। मगर अपने नफ़्स पर रहम नहीं करते। जिस पर गुनाहों का बोझ लाद रहे हो। सोचो तो सही इसका अंजाम क्या होगा? रईस ये नसीहत सुनकर घोड़े से उतर आया। और हज़रत हसन के हाथ पर बैत करके खुदा वाला बन गया। (दुर्रत-उन-नासिहीन, सफ़ा 234)

सबक़:- अल्लाह वाले अपनी निगाह और अपने इर्शादात से इंसान की काया पलट देते हैं। और ये भी मालूम हुआ के इंसान को गुनाहों से बचना चाहिए। और कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिए। जिससे कल क़यामत को शर्मिंदा होना पड़े।

हिकायत नम्बर(909) बे नमाज़

एक शख़्स जंगल में गुज़र रहा था के उसके साथ शैतान हो लिया। उस शख़्स ने ना तो नमाज़ फज्र पढ़ी, ना ज़ोहर ना अस्र की और ना ही मग़रिब व ईशा की। रात को जब सोने का वक़्त हुआ। तो शैतान ने उससे कहा के मैं तुम से दूर रहना चाहता हूँ। उसने कहा क्यों? तो शैतान बोला। इसलिए के मैंने

सिर्फ एक सज्दा ना किया था। और वो भी आदम(अलेहिस्सलाम) को और तूने तो दिन भर में कई सज्दे खुदा ही को नहीं किए। तो मुझे डर लगता है के जब एक सज्दे के ना करने से मुझ पर लानत का अज़ाब भेज दिया गया है। तो तुझ पर इतने सज्दे छोड़ने से खुदा जाने क्या दर्दनाक अज़ाब नाज़िल हो। जिसमें कहीं मैं भी मारा ना जाऊँ। (दुर्रत-उन-नासिहीन, सफ़ा 289)

सबक़:- नमाज़ का छोड़ना बहुत बड़ा गुनाह है और बेनियाज़ी को शैतान अपने आपसे भी ज़्यादा बुरा समझता है।

हिकायत नम्बर(910) गुदड़ी में लअल

एक दफा मक्का मोअज़्ज़मा में सख़्त क़हेत पड़ा। लोग नमाज़ इसतसक़ा के लिए तीन रोज़ तक निकलते रहे मगर मीना ना बरसा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के मैंने जी में सोचा के मैं इन लोगों से अलेहदा होकर खुदा तआला की जनाब में दुआ माँगूं। शायद खुदा तआला मेरी ही सुन ले। और रहम फ़रमा कर मीना बरसा दे। चुनाँचे मैं शहर से बाहर निकला। और एक ग़ार में चला गया। थोड़ी देर हुई। तो देखा के वहाँ एक हबशी ग़ुलाम आया और उसने दो रकअत नमाज़ पढ़ी और ज़मीन पर सर रखकर अल्लाह तआला से दुआ माँगने लगा के ऐ खुदा! तेरे इन नातवाँ बन्दों ने तीन रोज़ तक नमाज़ पढ़ी और दुआ माँगी। लेकिन पानी ना बरसा। पस मुझे क़सम है तेरी इज़्ज़त की के मैं अपना सर ना उठाऊँगा। जब तक तू हम लोगों को बाराने रहमत से सैराब ना करेगा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक फ़रमाते हैं के इस ग़ुलाम ने अभी सर ना उठाया था के बारिश होने लगे। और खूब मीना बरसा। फिर उसने अपना सर ज़मीन से उठाया और चला गया। मैं भी उसके पीछे पीछे चला गया। यहाँ तक के वो ग़ुलाम शहर में पहुँचा और एक मकान के अन्दर चला गया। मैं इस मकान के दरवाज़े पर ठहर गया। थोड़ी देर के बाद एक शख़्स मकान से बाहर निकला। तो मैंने उससे पूछा के ये मकान किस का है? उसने बताया के फलाँ आदमी का। फिर मैं मकान के अन्दर गया और साहिबे मकान से कहा के मैं एक ग़ुलाम मोल लेना चाहता हूँ। मालिक मकान ने एक ग़ुलाम मुझे दिखाया। मैंने कहा अगर कोई और हो तो दिखाईये। उसने कहा। हाँ एक और ग़ुलाम भी है मगर वो तुम्हारे काम का नहीं। मैंने कहा के क्यों? तो वो बोला के वो काहिल और सुस्त है। मैंने कहा ख़ैर आप ले आईये। चुनाँचे वो इस ग़ुलाम को ले आए। जिसके पीछे पीछे मैं यहाँ पहुँचा था मैंने कहा के हाँ मैं उसी को खरीदना चाहता हूँ। आप कितने दामों पर बेचेंगे वो बोला के मैंने तो उसे बीस दीनार को खरीदा है मगर तुम दस दीनार दे दो। मैंने

कहा मैं उसके बीस दीनार ही देता हूँ चुनाँचे मैंने बीस दीनार निकाल कर दे दिए और ग़ुलाम को साथ ले आया। ग़ुलाम ने मुझ से कहा: ऐ अब्दुल्लाह बिन मुबारक! तुम ने मुझे क्यों खरीदा? मैं तुम्हारी खिदमत ना कर सकूंगा। मैंने कहा तुम ने मेरा नाम कैसे जान लिया। तो वो बोला के दोस्त दोस्त को पहचानता है। फिर मैं उसे घर ले आया। तो उसने कहा मैं वज़ू करना चाहता हूँ। मैंने लौटा पानी का दिया। उसने वज़ू किया और नमाज़ पढ़ी और सज्दा किया मैंने क़रीब होकर सुना तो वो सज्दे में कह रहा था.....

या साहिबस सिर्रानस सिर्रा क़द ज़हरा
वला उरीदू हयाती बअदा माश्तहर

खुदाया तिरी ज़ात है राज़ दार
मिरा राज़ जब हो चुका आशकार
मुझे ज़िन्दगी से नहीं और काम
तू जल्दी से मेरा कर अब इखतिताम

फिर वो चुपका हो गया। मैंने जो उसे हिलाया। तो देखा के वो विसाल पा चुका है। पस मैंने उसकी तजहीज़ व तकफीन की और दफ़्न कर दिया। रात को ख़्वाब में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को देखा। आपने फ़रमाया जज़ा कल्लाह! तुम ने मेरे चाहने वाले के हक़ में एहसान किया। (रोनक़-उल-मजालिस, सफ़ा 370)

सबक़:- बहुत से अल्लाह के मक़्बूल बन्दे इस हाल में रहते हैं के लोग उन्हें अपनी कम फहमी के बाइस पहचान नहीं सकते। और उन्हें क़ाबिले एतना नहीं जानते। हालाँके वो खुदा के मक़्बूल और ऐसे मुसतहाब-उद्दुआ होते हैं के सज्दे में सर डाल कर जो चाहें। अपने अल्लाह से मनवा लें और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह तआला अपने मक़्बूल बन्दों के तुफैल अवाम को अपनी रहमत से नवाज़ता है और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों से कोई बात छुपी नहीं रहती। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों की ख़िदमत करने से रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम खुश होते हैं।

हिकायत नम्बर(911) बूढ़ा यहूदी

हज़रत अब्दुल्लाह तसतरस रहमत-उल्लाह अलेह का विसाल हो गया। तो लोग बड़ी कसरत के साथ उनके जनाज़े में शरीक हुए। शहर में एक बुढ्ढा यहूदी था। उसने शौरो ग़ुल सुना तो बाहर निकला ताके देखे के ये शौर कैसा

है। जब बाहर निकला तो उसने एक अजीब मंज़र देखा और फिर लोगों से पुकार कर कहने लगा। ऐ हाज़रीन! ज़रा ऊपर भी देखो के क्या नज़्ज़ारा है। लोगों ने कहा के ऊपर क्या है। वो बोला के मैं देख रहा हूँ के आसमान पर से भी एक क़ौम उतर रही है। और इस जनाज़े से बर्कत हासिल कर रही है। फिर बोला। लोगो! गवाह रहो। मैं मुसलमान होता हूँ। फिर वो कलमा पढ़कर मुसलमान हो गया। (दुर्रत-उन-नासिहीन, सफ़ा 494)

सबक़:- अल्लाह वालों की मौत भी लोगों के लिए रहमत होती है और एक ऐसे भी होते हैं जिनकी ज़िन्दगी भी लोगों के लिए मुसीबत होती है। फिर उन अल्लाह वालों की मिस्ल कोई कैसे हो सकता है?

हिकायत नम्बर(912) दुआ क़बूल क्यों नहीं होती

हज़रत शफीक़ बलखी रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के एक रोज़ हज़रत इब्राहीम बिन अदहम बसरे के बाज़ार से गुज़र रहे थे। तो लोगों ने आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ की के हुज़ूर! क़ुरआन में खुदा तआला ने फ़रमाया है के "तुम मुझ से दुआ माँगो मैं क़बूल करूँगा।" और हम एक मुद्दत तक दुआ माँगते रहे हैं। मगर क़बूल नहीं होती। इसकी क्या वजह है? हज़रत इब्राहीम बिन अदहम ने जवा दिया के ऐ लोगो! तुम्हारे दिल दस चीज़ों से मुर्दा हो गए हैं। फिर तुम्हारी दुआ कैसे क़बूल हो। तफसील सुनो!

(1) तुम ने खुदा को पहचाना मगर उसकी मारफ़त का हक़ अदा ना किया।
(2) तुम ने क़ुरआन पढ़ा मगर उस पर अमल ना किया।
(3) तुम ने मोहब्बत रसूल का दावा किया। मगर उनकी सुन्नत पर अमल ना किया।
(4) तुम ने अदावते शैतान का दावा किया। मगर की मुखालफत ना की।
(5) तुम ने जन्नत को चाहा मगर उसमें दखूल के लिए अमल ना किया।
(6) तुम ने जहन्नुम से पनाह माँगी मगर खुद ही अपने नफ़्स को उसमें डाल दिया।
(7) तुम ने मौत को हक़ जाना मगर उसके लिए तैयार ना की।
(8) तुम ने भाईयों की ऐब जोई की। मगर अपने ऐब ना देखे।
(9) तुम ने अल्लाह की नअेमतें खायीं। मगर उसका शुक्र अदा ना किया।
(10) तुम ने मुर्दों को दफ़्न किया मगर इब्रत हासिल ना की।
(दुर्रत-उन-नासिहीन, सफ़ा 5133)

सबक़:- अपने ज़ाहिर व बातिन को पाक और साफ सुथरा करके और ज़बान को अल्लाह की याद से मौत्तर करके जो दुआ भी माँगी जाए। क़बूल होती है और अगर कोई हमारी दुआ क़बूल ना हो तो ये हमारा क़सूर है।

हिकायत नम्बर(913) अबु अल्फा

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं के मैं मक्का मौअज़्ज़मा में मुक़ीम था के एक यमनी हाजी अपने एक रफ़ीक़ के साथ मेरे पास आया और कुछ हदया पेश करके कहने लगा के मेरे इस रफ़ीक़ से एक अजीब क़िस्सा सुनिये। फिर उसने अपने साथी से कहा के "पूरा वाक़ेया सुनाओ, तो उसने बताया के मैं सनआ से एक क़ाफ़ले के साथ हज के लिए निकला तो एक शख़्स ने मुझ से कहा के जब तुम मदीना मुनव्वरह पहुँचो। और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को बारगाह आलिया में हाज़री दो। तो हुज़ूर की बारगाह में मेरा भी सलाम अर्ज़ करना और हुज़ूर के साथियों अबुबक्र सिद्दीक़ व उमर फारूक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा की ख़िदमत में भी मेरा सलाम अर्ज़ करना। फिर जब मैं मदीना मुनव्वरह पहुँचा और बारगाहे रिसालत मआब की हाज़री से मुशर्रफ हुआ तो उस शख़्स का सलाम अर्ज़ करना भूल गया। हत्ता के हमारा क़ाफ़ला मक्का मौअज़्ज़मा के इरादे से रवाना हुआ। और हम ज़ुलहलीफा पहुँच गए। ताके एहराम बाँध लें। उस वक़्त मुझे याद आया के उस शख़्स का सलाम तो मैंने अर्ज़ किया ही नहीं। चुनाँचे मैंने अपने साथियों से कहा। मैं वापस मदीना मुनव्वरह जा रहा हूँ। मेरी वापसी तक मेरे सामान का खयाल रखना। साथियों ने कहा के क़ाफ़ला तो चलने वाला है। हमें डर है के तुम वक़्त पर वापस ना आ सकोगे, मैंने कहा तो अच्छा मेरा सामान तुम लेते जाना। मैं आ जाऊँगा। ये कह कर मैं वापस मदीना मुनव्वरह आया और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की बारगाहे आलिया में हाज़िर होकर हुज़ूर अलेह अर्रहमा और हज़रत सिद्दीक़ व हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्हुमा की बारगाह में उस शख़्स का सलाम अर्ज़ किया। इतने में रात हो गई। और मैंने अपने साथियों के मुतअल्लिक़ दरयाफ़्त किया। तो पता चला के वो चले गए हैं। मैं वापस मस्जिदे नबव्वी शरीफ में आ गया और दिल में कहा के किसी दूसरे क़ाफ़ले के साथ चला जाऊँगा शब को सोया। तो आख़िर शब को ख़्वाब में देखा के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम, सिद्दीक़े अक्बर और फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा की मईयत में तशरीफ़ लाए हैं। सिद्दीक़ व फारूक़ दोनों ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से कहा। या रसूल अल्लाह! ये है वो शख़्स, हुज़ूर मेरी तरफ़ मुतवज्जह हुए और मुझ से फ़रमाया "अबु अलवफा" मैंने अर्ज़ किया। हुज़ूर! मेरी कनीयत अबु अलवफा नहीं। अबु अलअब्बास है। फ़रमाया नहीं तुम अबु अलवफा हो। और फिर मेरा हाथ पकड़कर मुझे उठा के मक्का

मौअज़्ज़मा की मस्जिद हराम मैं बिठा दिया। मैं जागा तो मक्का मौअज़्ज़मा की मस्जिद में था। फिर मैं आठ दिन ठहरा रहा। तो आठ दिन के बाद मेरे क़ाफले वाले मक्का मौअज़्ज़मा पहुँचे।" (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 181)

सबक़:- एक मुसलमान के लिए सब से बड़ी सआदत ये है के उसे सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की बारगाहे आलिया में हाज़री का शरफ़ हासिल हो। और अगर खुद हाज़िर ना हो सके तो किसी खुश नसीब हाज़िर होने वाले के ज़रिये से अपना सलाम ही पहुँच जाए और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उम्मत के आमाल और अफआल से आज भी बाख़बर और जो मुसलमान अपने मुसलमान भाई से किया हो वादा पूरा करता है। हुज़ूर उस पर बहुत खुश होते हैं। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर जिसकी दस्तगीरी फ़रमायें उसे एक पल में मंज़िले मक़्सूद तक पहुँचा देते हैं और ये भी मालूम हुआ के जो ज़ात ग्रामी सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपने एक ग़ुलाम का हाथ पकड़कर पल भर में उसे मदीना मुनव्वरह से मक्का मौअज़्ज़मा पहुँचा सकती है। वो ज़ात पाक खुद क्यों पल भर में फर्श से अर्श तक नहीं जा सकती? और ये भी मालूम हुआ के सिद्दीक़ व फारूक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा दरबारे रिसालत के दो बड़े वज़ीर हैं, जो हर वक़्त सुलतान दो आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के साथ रहते हैं।

हिकायत नम्बर (914) तीन दुआएँ

हज़रत अब्बास रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से मरवी है के बनी इस्राईल में एक शख़्स था जिसका नाम सनवस था। उसे हुक्म हुआ के तीन दुआएँ तेरी क़बूल होंगी जो माँगना हो माँग लो। उसने अपनी औरत के लिए दुआ की के वो खूबसूरत हो जाए। दुआ क़बूल हो गई और उसकी औरत तमाम बनी इस्राईल की औरत से खूबसूरत हो गई। औरत ने अपना हुस्नो जमाल देखा तो ग़ुरूर में आ गई और शौहर को सताने लगी, शौहर ने तंग आकर एक दिन खफा होकर उसे कहा। खुदा तुझे कुतिया बना दे। औरत उसी वक़्त कुतिया बन गई। बेटों ने माँ का कुतिया बन जाना देखा तो उन्होंने अपने बाप से सिफारिश की तो उसने तीसरी दुआ की के इलाही! उसे अपनी अस़ल सूरत पर कर दे। चुनाँचे औरत फिर अपनी असली सूरत पर जो के उसकी थी। हो गई और शौहर की तीनों दुआएँ मुफ़्त ज़ाए हो गईं। (अहसन-उल-दुआ-उल-अला हज़रत, सफ़ा 45)

सबक़:- खुदा तआला जिस हाल में रखे , उस पर साबिर व शाकिर रहना चाहिए और ये भी मालूम हुआ के इस दुनिया का हुस्नो जमाल इंसान के लिए वजह वबाल भी बन जाता है इसलिए ज़्यादा तर फ़िक्र अपनी आक़्बत की करनी चाहिए।

हिकायत नम्बर(915) खुश्बू वाला

बसरा में एक बुज़ुर्ग थे। जो मस्की के नाम से मशहूर थे मस्क खुश्बू को कहते हैं और मस्की का मानी है, "खुश्बू वाला" ये बुज़ुर्ग इस क़द्र खुश्बू रखते थे के रास्ते से गुज़र जाते। रास्ते मेहक उठते और जब मस्जिद में तशरीफ़ लाते तो उनकी खुश्बू से सब को पता चल जाता के हज़रत मस्की तशरीफ़ ले आए हैं। रावी फ़रमाते हैं के मैं उनकी खुश्बू का राज़ मालूम करने के लिए एक रात उनके हाँ ठहरा और उनसे कहा के आपके बदन से जो इस क़द्र खुश्बू आती है। मालूम होता है के आप रोज़ाना काफी खर्च करके खुश्बू खरीदते हैं और अपने बदन और कपड़ों पर मल लेते हैं। उन्होंने जवाब दिया। नहीं ये बात नहीं। मैंने आज तक ना कभी खुश्बू खरीदी है और ना ही बदन या कपड़ों पर मली है। मैंने कहा तो फिर इस खुश्बू का राज़ क्या है? तो बोले: लो मैं बता देता हूँ। मुमकिन है मेरे मरने के बाद तुम मुझे दुआऐ खैर से याद करो।

बात ये है के मैं बग़दाद का रहने वाला हूँ मेरे वालिद ने मेरी बड़ी अच्छी तरबीयत फ़रमाई। मैं बड़ा खूबसूरत था। और साहिबे शर्मो हया भी मेरे वालिद ने मुझे एक बज़ाज़ की दुकान पर बिठा दिया। उस दुकान पर मैं दिन भर बैठा रहता। और दुकान का काम करता था एक रोज़ एक बुढ़िया दुकान पर आई। और कुछ क़ीमती कपड़े निकलवाये और फिर साहिबे दुकान से कहने लगी के इन कपड़ों को मैं अपने साथ घर ले जाती हूँ। उस लड़के को मेरे साथ भेज दीजिए जो कपड़े पसंद आ गए। रख लिए जायेंगे और उनकी क़ीमत इस लड़के के हाथ भेज दीजिए चुनाँचे मालिके दुकान के कहने से मैं इस बुढ़िया के साथ चल दिया। बुढ़िया मुझे एक अज़ीम-उश्शान मकान में ले गई। जिसमें बहुत से मर्द और औरतें मुलाज़िम थीं। फिर उसने मकान के अन्दर एक खूबसूरत कमरे में मुझे बिठा दिया। ये कमरा बड़ा मुज़य्यन और आरास्ता था। थोड़ी देर के बाद एक नोजवान औरत इस कमरे में आ गई जो मेरे पास बैठ गई और मुझ से लिपट गई मैं डर गया। और पीछे हट कर उससे कहा के खुदा से डरो, उसने कहा देखो मेरी बात मानो और जो चाहो मुझ से लो। मैं तुम्हें हर गिज़ जाने ना दूंगी। मैंने कहा: मुझे बैत-उल-ख़ला जाने की हाजत है। पहले वहाँ से हो आऊँ। उसने अपनी बांदी को बुलाया। और कहा: इन्हें बैत-उल-खला ले जाओ। चुनाँचे मुझे वहाँ ले जाया गया। मैंने अपनी रिहाई के लिए ये सूरत इख़्तियार

की के जितनी निजासत थी अपने मुंह, हाथ और सारे बदन और कपड़ों पर मल ली। और जब बाहर निकला तो इस बांदी ने मुझे इस हाल में देखा। तो पागल पागल कह कर वहाँ से भागी और फिर जब इस मेरी आशिक ने मुझे देखा तो वो भी भागी और मैं उसी हाल में वहाँ से निकला और एक बाग़ में पहुँच कर अपना बदन और कपड़े साफ किए और घर वापस आ गया। और जब रात को सोया तो ख़्वाब में देखा के कोई आया है जिसने अपना हाथ मेरे चेहरे और बदन पर फैरा और कहा। जानते हो मैं कौन हूँ? मैं जिब्राईल हूँ। मेरी आँख खुली तो मेरे सारे बदन और कपड़ों से खुश्बू आ रही थी। जो आज तक क़ायम है और ये सब हज़रत जिब्राईल अलेहिस्सलाम के हाथ की बर्कत है। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 189)

सबक़:- अल्लाह तआला से डर कर गुनाहों से बचना बहुत बड़ी हिम्मत का काम है और इस दुनिया की ज़िल्लत अच्छा नतीजा निकलता है। और जो अल्लाह वाले हैं वो अखरवी ज़िल्लत व रूसवाई से बचने के लिए इस दुनिया की ज़िल्लत व रूसवाई की कुछ परवाह नहीं करते और ये भी मालूम हुआ के गुनाहों की मैल व निजासत से बचने वाले की रूह भी पाक व साफ हो जाती है। और उसका जिस्म व लिबास भी पाकीज़ा व साफ रहता है। और ये भी मालूम हुआ के जिस तरह गुनाह से बचने के लिए अपने जिस्म को थोड़ी देर के लिए ग़लाज़त में मुलव्विस करके उम्र भर के लिए खुश्बू हासिल कर ली गई। इसी तरह इस दुनियाऐ फानी में थोड़ी देर की लज़्ज़त पाने के लिए अपने आपको ऐशो इशरत में डाल कर क़यामत की लम्बी मुसीबत मोल ले ली जाती है। जो बहुत बड़ी हिमाक़त है। और ये भी मालूम हुआ के जिब्राईल जो हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का ख़ादिम है। उसके हाथ ख़्वाब में भी लग जाने से खुश्बू पैदा हो गई, तो खुद हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के बदन अनवर और लिबास अतहर की लताफत व नज़ाफत और मेहक का क्या आलम होगा? और क्यों ना आला हज़रत के इस शैर के मुताबिक़ ये समाँ बंधता होगा....

उनकी मेहक ने दिल के गुंचे खिला दिए हैं
जिस राह चल दिए हैं कूचे बसा दिए हैं

हिकायत नम्बर(916) मक़बूल लकड़हारा

हज़रत अब्दुल वाहिद इब्ने ज़ैद रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं, मैं और हज़रत अय्युब सख़्तियानी दोनों कहीं जा रहे थे के शाम के रास्ते में एक लकड़हारा देखा। जो लकड़ियों का गठ्ठा उठाए आ रहा था। मैंने इस लकड़हारे से कहा। मियाँ लकड़हारे! *मन रब्बुका* तुम्हारा रब कौन है? हम

ने उसे एक आम आदमी समझा था। मगर मेरे इस सवाल पर वो बोला। आप मुझ से ये बात पूछ रहे हैं? लो मैं बताता हूँ। मेरा रब कौन है? उसने अपना सर आसमान की तरफ़ उठा कर कहा:

इलाही! होला हाज़ल हत्बा ज़हाबन

इलाही! इन लकड़ियों के गठ्ठे को सोना बना दे

हमने देखा के उसकी तमाम लकड़ियाँ सोना बन चुकी हैं। फिर उसने हमारी तरफ़ देखकर कहा। तुम ने ये बात देख ली? हम ने कहा हाँ देख ली। उसने फिर कहा:

अल्लाहुम्मा रद्दिद हत्बन

इलाही! इन्हें लकड़ियाँ बना दे

हम ने देखा। वो फिर लकड़ियाँ बन गईं

उसने कहा। मेरा रब वो है जिसने ये काम कर दिखाया। (रोज़-उल-रियाहीन, 194)

सबक़:- अल्लाह वाले बड़ी शान के मालिक हैं वो अल्लाह की मानते हैं अल्लाहह उनकी मानता है और ये भी मालूम हुआ के कई अल्लाह वाले "गूदड़ी में लअल" के मुताबिक़ मसाकीन के लिबास में भी होते हैं। इसलिए किसी को हिक़ारत से नहीं देखना चाहिए...

तूचै दानी के दरीं गर्द सवारे बाशिद

हिकायत नम्बर(917) कमाल तक़्वा

हज़रत शिबली रहमत-उल्लाह अलेह एक आलिम नहू के पास इल्मे नहू सिखने के लिए गए। उस्ताद ने कहा कहिये: "*ज़रब ज़ैदु उमरोवन* ज़ैद ने उमर को मारा"। हज़रत शिबली बोले क्या दर हक़ीक़त ज़ैद ने उमर को मारा है? उस्ताद ने कहा। दरअसल ऐसा तो नहीं है। हाँ एक मिसाल के तौर पर जुमला बयान किया जाता है शिबली फ़रमाने लगे के जिस इल्म की बिस्मिल्लाह झूट पर मुबनी हो। मैं उस इल्म को सिखना नहीं चाहता। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 268)

सबक़:- अल्लाह वाले बड़े मुत्तक़ी और मोहतात होते हैं और कोई ऐसी बात नहीं करते जो झूट के मुशाबह भी हो। और ये उनका कमाल तक़्वा होता है।

हिकायत नम्बर(918) बड़ा दरवाज़ा

एक सायल ने किसी अमीर आदमी के दरवाज़े पर सवाल किया। दरवाज़ा बहुत बड़ा था मगर अमीर आदमी ने थोड़ी सी भीक देकर सायल को रूख़सत कर दिया। अगले रोज़ सायल एक कुलहाड़ी लेकर वारिद हुआ। और दरवाज़े के गिराने का इरादा करने लगा। लोगों ने उसका सबब पूछा तो

बोला के या दरवाज़ा अतिये के मवाफिक़ होना चाहिए या अतिया दरवाज़े के मवाफिक़। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 390)

सबक़:- अल्लाह तआला का दरवाज़ा रहमत सब दरवाज़ों से बड़ा दरवाज़ा है इसलिए हम गुनाहगारों को इस अम्र की उम्मीद है के खुदा तआला अपने इस दरवाज़ा-ए-रहमत से हम गुनाहगारों को मायूस ना लौटाएगा। और अपनी रहमत के मवाफिक़ हमें भीक देगा।

हिकायत नम्बर(919) दिल और ज़बान

हज़रत लुक़मान से एक रोज़ उनके आक़ा ने कहा। के आज एक बकरी ज़िबह करो। और जो चीज़ उसकी सबसे ज़्यादा बुरी हो। वो मेरे पास लाओ। हज़रत लुक़मान ने बकरी ज़िबह की। और उसके दिल और ज़बान को आक़ा के सामने पेश कर दिया।

दूसरी रोज़ उनके आक़ा ने फिर कहा। के आ भी एक बकरी ज़िबह करो और जो चीज़ उसकी सबसे ज़्यादा अच्छी हो। वो ले आओ। हज़रत लुक़मान ने एक बकरी ज़िबह की। और आक़ा के सामने फिर भी दिल और ज़बान ही पेश को पेश कर दिया। आक़ा ने वजह दरयाफ़्त की। तो बोले।

“ये दोनों चीज़ें बदतरीन भी हैं और बेहतरीन भी अगर ये बिगड़ जायें। तो उनसे ज़्यादा बुरी चीज़ और कोई नहीं और गअर ये संवर जायें। तो उनसे ज़्यादा अच्छी चीज़ और कोई नहीं।” (मुग़नी-उल-वाज़ेन सफ़ा 118)

सबक़:- दिल और ज़बान। इन दोनों को अपने क़ाबू में रखना चाहिए। क्योंके बुराई के मुनब्बे यही हैं। अगर ये बिगड़ गए तो हलाकत है। और अगर ये संवर गए तो बर्कत ही बर्कत है। हज़रत सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का दिल के मुतअल्लिक़ इर्शाद ह के बदन का ये टुकड़ा बड़ी अहमियत रखता है। अगर ये बिगड़ जाए तो सारा बदन ही बिगड़ जाता है और अगर ये संवर जाए तो सारा बदन ही संवर जाता है और ज़बान के मुतअल्लिक़ इर्शाद फ़रमाया। के जो उसकी मुझे ज़मानत दे यानी उसे क़ाबू में रखने की और ग़ैर शरई गुफ़्तगू से उसे बाज़ रखने की मुझे ज़मानत दे तो मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूँ।” पस हमें दिल और ज़बान की तरफ़ निगाह रखनी चाहिए। और इन्हें अच्छा बनाना चाहिए।

हिकायत नम्बर(920) फैसला

एक सौदागर की थेली जिसमें चार सौ दीनार थे। गुम हो गई। उसने ढोल पिटवा कर एलान किया के इस तरह की थेली गुम हो गई है जिस शख़्स को मिल जाए वो ले आए तो उसे दो सौ दीनार ईनाम दिया जाएगा। इत्तिफाक़न ये थेली

एक ग़रीब शख़्स को मिल गई और उसे लेकर मालिक के पास ईनाम की उम्मीद में पहुँच गया। लेकिन सौदागर अपनी थेली को देखकर बद नीयत हो गया और उस ग़रीब आदमी से कहने लगा। "इस थेली में निहायत क़ीमती मोती भी थे। क्या वो भी इसके अन्दर हैं?" वो आदमी बड़ा घबराया और समझ गया। अब धोका कर रहा है। और ईनाम ने देने के लिए झूट बोलने लगा है। अब उन दोनों में झगड़ा शुरू हो गया। आख़िर ये दोनों लड़ते हुए फैसले के लिए क़ाज़ी के पास पहुँचे।

क़ाज़ी ने उस ग़रीब से मोतियों के बारे पूछा। तो वो क़सम खाकर कहने लगा। के थेली में मुझे दीनारों के सिवा और कोई चीज़ नहीं मिली।

अब क़ाज़ी ने सौदागर से पूछा। के बताओ मोती कैसे थे? तो सौदागर ने उल्टी सीधी बातें कीं कुछ सही ना बता सका। क़ाज़ी ने समझ लिया। के ये झूट बोल रहा है। और झूट से मक़्सद उसका ये है के अपने एलान के मुताबिक़ उसे ईनाम ना देना पड़े।

क़ाज़ी ने कहा। के मेरा फैसला सुनो!

"ऐ सौदागर! तुम्हारा दावा है के मेरी थेली गुम हो गई। जिसमें दीनार थे और मोती भी थे और वो मोती ऐसे थे और ये आदमी जो थेली लाया है उसमें कोई मोती नहीं है लिहाज़ा मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ के ये थेली तुम्हारी ही नहीं। लिहाज़ा तुम अपनी गुमशुदा थेली के लिए फिर से एलान कराओ मुमकिन है। तुम्हारी गुमशुदा थेली तुम्हें फिर मिल जाए। और तुम कामरान व बामुराद बन जाओ। बहरहाल ये थेली तुम्हारी नहीं है फिर क़ाज़ी ने उस ग़रीब आदमी से मुख़ातिब होकर कहा।"

"ये थेली चालीस रोज़ तक एहतियात से रखो। अगर उसका कोई दूसरा सच्चा दावेदार ना पैदा हो तो ये तुम्हारी है।" (रिवायात व हिकायत सफ़ा 121)

सबक़:- जो शख़्स दुनिया के लालच में बद अहदी व बेईमानी और बदनीयती पर आमादा हो जाए वो कभी कामयाब नहीं होता। और ये भी मालूम हुआ। के आदिल और इंसाफ परवर हाकिम अपनी फिरासत ही से मामला की तेह तक पहुँच जाते हैं और उनका फैसला सही मअनून में फैसला होता है।

हिकायत नम्बर (921) सबसे ज़्यादा मौअज़्ज़िज़

हज़रत हारून रशीद के बेटे अमीन और मामून दोनों हज़रत इमाम कसाई से पढ़ते थे एक रोज़ इमाम कसाई उन दोनों शहज़ादों को पढ़ा कर उठने लगे। तो दोनों भाई लपके के जल्दी से जूता उठा कर उस्ताद के सामने रख दें। इस पर दोनों में झगड़ा शुरू हो गया के कौन उस्ताद के समाने उसका जूता रखे इमाम कसाई ने ये देखकर यूं सुलह कराई.......यूं करो के तुम में से हर एक.....एक एक जूता उठा कर लाए" चुनाँचे ऐसा ही हुआ। ये ख़बर खलीफा हारून रशीद को पहुँची

तो इमाम कसाई को बुलाया। जब वो आ गए तो पूछा।

सबसे ज़्यादा मौअज़्ज़िज़ कौन शख़्स है?

कसाई ने जवाब दिया के

अमीर-उल-मोमिनीन से ज़्यादा मौअज़्ज़िज़ कौन शख़्स है?

कसाई ने जवाब दिया के

अमीर-उल-मोमिनीन से ज़्यादा मौअज़्ज़िज़ कौन हो सकता है?

खलीफा ने कहा

नहीं सबसे ज़्यादा मौअज़्ज़िज़ है जिसके लिए वली अहद सलतनत और उसका भाई इस पर झगड़ें के कौन जूता पहले उठाए।

इमाम कसाई घबरा गए। समझे के शायद खलीफा इसी बात पर बिरहम है। हारून रशीद समझ गया और कहने लगा।

"अगर आप मेरे लड़कों को उससे मना करते तो मैं ख़फा होता। मगर अब मैं खुश हूँ के इस फैल से मेरे लड़कों की इज़्ज़त और शरफ़ में कमी नहीं हुई। बल्के उनका जोहर और नुमायाँ हो गया और उनके किरदार का शरफ़ ज़ाहिर हो गया। फिर खलीफा ने इस हुस्न तादीब पर कसाई को दस हज़ार दरहम ईनाम के अता किए।" (रिवायात व हिकायात, सफ़ा 155)

सबक़:- इल्म की दौलत सबसे बड़ी दौलत है, जो इज़्ज़त व अज़मत इल्म से हासिल होती है, वो माले दुनिया या किसी दुनियवी ओहदे से नहीं मिलती। और ये भी मालूम हुआ के पहले ज़माने के मुसलमान हाकिम बड़े इल्म नवाज़ और उल्मा के क़द्रदान थे और उनके बच्चों के दिलों में भी अहले इल्म की क़द्रो मंज़िलत और उनका अदबो एहतराम मौजूद था।

हिकायत नम्बर(922) फक़ीर

एक फक़ीर मिस्र की जामअे मस्जिद के दरवाज़े पर बैठा भीक माँग रहा था कुछ दौलतमंद लोग इधर से गुज़रे उसने सवाल किया। मगर कुछ ना मिला।

उन लोगों में से एक की जैब से एक थेली गिर पड़ी। जिसमें पाँच सौ दीनार थे, उनके जाने के बाद फक़ीर की नज़र पड़ी। उसने उठाकर रख ली। इतने में थेली का मालिक आया और फक़ीर से पूछने लगा "यहाँ मेरी एक थेली रह गई है, उसमें पाँच सौ दीनार थे, तुझे तो नहीं मिली?"

"फक़ीर ने कहा मिली है" और फिर उसने वो पेश कर दी।

वो शख़्स बहुत खुश हुआ और कहने लगा "मैं पंद्रह दीनार तुझे ईनाम देता हूँ।"

फक़ीर ने कहा "मैं हर गिज़ ना लूंगा क्योंके मैंने आपसे एक चीज़ बतौर एहसान के माँगी थी। लेकिन अब अगर कुछ क़बूल कर लूं। तो उसके ये

मानी हुए के दीन दे के दुनिया ले लूं।" (रिवायात व हिकायात, सफ़ा 328)

सबक़:- पहले ज़माने के मुसलमान फ़क़ीर भी दियानतदार थे। और दीन को दुनिया पर हर हाल में मुक़द्दम रखते थे। और आज कल के अक्सर अमीर भी इस वस्फ़ से खाली हैं।

हिकायत नम्बर (923) शराब

एक बादशाह बैठा हुआ शराब पी रहा था। उसी दौरान में एक ज़ाहिद व मुत्तक़ी शख़्स भी आ गया। जो बड़ा खुदा तरस और परहैज़गार आदमी था। बादशाह ने शराब का एक जाम उस ज़ाहिद के सामने भी रखा। और कहा तुम भी पियो। उस शख़्स ने जाम शराब क़बूल करने से इंकार कर दिया। बादशाह ने कहा क्या मेरी नाफरमानी करके तुम मेरे ग़ुस्से को उभारना चाहते हो?

उस शख़्स ने जवाब दिया।

और ऐ बादशाह! क्या तुम चाहते हो के मैं खुदा की नाफरमानी करके उसके ग़ुस्से को दावत दूं? खुदा की क़सम! ऐसा कभी नहीं हो सकता। अगरचै बादशहा की तलवार मेरी गर्दन उड़ा दे क्या बादशाह के कानों में ये आवाज़ नहीं गई *इन्नामल ख़मरू वलमैसिरू वलअनज़ाबु वलअज़लामु रिजसुंम मिन अमालिश शैतानी फजतनीबुहू* बादशाह पर इस जवाब का गहरा असर हुआ। और खुश होकर उसको बहुत सा ईनाम देकर रूख़सत किया। (रिवायात, सफ़ा 374)

सबक़:- अल्लाह वाले अपने अल्लाह ही से डरते हैं और ज़ालिम व जाबिर बादशाह के सामने भी हक़ बात कहने से नहीं डरते और उनकी बात बड़ी मौस्सर होती है।

हिकायत नम्बर (924) आटे में मिलावट करने वाले का अंजाम

बैहक़ी ने इब्ने मेहमूद से रिवायत की के मैं इब्ने अब्बास रज़ी अल्लाहो तआला अन्हु के पास बैठा था के एक शख़्स आया और कहा के हम हज के लिए आए हैं और रास्ते में हमारा एक साथी मर गया हम ने उसके लिए क़ब्र खोदी तो लहद में एक मुहीब काला सांप बैठा नज़र आया। हम ने वो जगह छोड़ दी। और दूसरी जगह दूसरी क़ब्र खोदी। क्या देखा के इस क़ब्र में भी वही सांप बैठा है। फिर हम ने तीसरी क़ब्र खोदी। तो उसमें भी वही सांप नज़र आया। हम हैरान रह गए और अब आपके पास आए हैं के क्या करें। इब्ने अब्बास ने फ़रमाया तुम सांप के पास ही उसे दफ़्न कर दो। खुदा की क़सम अगर तुम सारी ज़मीन भी उसके लिए खोदोगे तो ये सांप तुम्हें ज़रूर नज़र आएगा। चुनाँचे हम ने उसके लिए एक क़ब्र खोदकर सांप के पास ही उसे

दफ़्न कर दिया। और फिर वापसी पर उसकी बीवी से उसके हालात दरयाफ़्त किए तो पता चला के वो आटे का सौदागर था और आटे में लकड़ी का बुरादा डाल कर बेचा करता था। (हयात-उल-हैवान, सफ़ा 22, जिल्द:1)

सबक़:- हमारे मुल्क में भी सफ़ा क़िस्म के सौदागर पाए जाते हैं उन्हें अपने अंजाम की फ़िक्र करनी चाहिए।

हिकायत नम्बर(925) ज़हीन लड़का

एक ज़ाहिद एक बादशह का मेहमान हुआ। जब खाने का वक़्त आया तो उसने ज़रूरत से बहुत कम खाया और नमाज़ पढ़ने में जल्दी की ताके लोग उसके मुतअल्लिक़ बहुत ज़्यादा हुस्ने ज़न में मुब्तला हो जायें। लेकिन जब घर लौटा तो दोबारा खाने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की। ज़ाहिद के ज़हीन लड़के ने बाप से पूछा के आपने बादशाह के हाँ पेट भर कर खाना नहीं खाया? बाप ने जवाब दिया।

"दर नज़रे ईशाँ चीज़े नख़ूरदम के बकार आयद"

मैंने उनके सामने कुछ नहीं खाया ताके ये बात काम आए

लडके ने कहा: अब्बा जान!

नमाज़ रा हम क़ज़ा किन के चीज़े ना कर दी के बकार आयद

नमाज़ भी फिर पढ़िये के आपने कुछ नहीं किया ताके ये बात काम आए। (गुलिस्ताँ सअदी)

सबक़:- इबादत में खलूस ज़रूरी है वरना दिखावे की इबादत किसी काम की नहीं।

हिकायत नम्बर(926) खुशहाल मस्त

सअदी अलेह अर्रहमा फ़रमाते हैं के कूफ़े जाते हुए एक सरोपा बिरहना शख़्स हमारे क़ाफ़ले में हमसे आ मिला। दौराने सफर में वो बड़ा खुश रहता और मस्ती के आलम में ज़िन्दा दिल के साथ यूं गोया रहता...

ना बा अश्तर सवारम ना चवाश्तर ज़ेर बारम
ना खुदावंद रूईय्यत ना ग़ुलाम शहर यारम
ग़म ज़मौजूद व परेशानी मअदूम ना दारम
नफ़्से मै ज़नम आसूदा-ए-वअमरे मै गुज़ारम

ना मैं ऊँट पर सवार हूँ ना ऊँट की तरह ज़ेर बार हूँ। ना किसी रूईय्यत का हाकिम हूँ। और ना किसी हाकिम का ग़ुलाम हूँ। ना मुझे किसी मौजूद का ग़म है। ना किसी मअदूम की परेशानी आराम और इतमिनान के साथ

अपनी ज़िन्दगी गुज़ार रहा हूँ।

एक शुत्र सवार ने उससे कहा, भाई! क्यों अपनी जान हलाक करने पर तुले हो। रास्ते पुर कठिन है, वापस चले जाओ। लेकिन उसने एक ना मानी और लक़ोदिक़ सहरा में सफर करता रहा। जब क़ाफला नखलिस्तान मेहमूद पहुँचा। तो क़ाफले के अमीर को पियामे अजल आ गया। और वो मर गया। दुरवैश पा पियादे ने जब सुना तो मरहूम के सिरहाने आकर कहने लगा।

मा बा सख़्ती मर दयम व तू ब बख़्ती बमरदी

हम सख़्ती में भी ना मरे और तुम खुश बख़्ती में भी मर गए। (गुलिस्ताँ सअदी)

सबक़:- खुदा जिस हाल में रखे उसी हाल में खुश रहना सबसे बड़ी दौलत है पा पियादा आदमी अगर किसी को ऊँट पर सवार देखे तो खुदा का शुक्र करे के अगर वो सवार नहीं है तो उस सवार को पीठ पर उठा कर चलने वाला ऊँट भी तो नहीं है।

हिकायत नम्बर(927) हिम्मत व मेहनत

एक सौदागर बग़र्ज़ तिजारत घर से निकला। रास्ते में एक जंगल पड़ा। उसने देखा के एक अपाहज लोमड़ी है। जिसके हाथ पैर बिलकुल नहीं हैं। और वैसे ही अच्छी खासी मोटी ताज़ी, सौदागर ने खयाल किया के ये तो चलने फिरने से मअज़ूर है। फिर ये खाती कहाँ से है। इतने में उसने देखा के एक शेर एक जंगली गाय को शिकार करके उसी तरफ़ आ रहा है ये डर के मारे एक दरख़्त पर चढ़ गया। शेर लोमड़ी के क़रीब ही बैठ कर वो गाय खाने लगा और खा पी कर बाक़ी मांदा गाय वहीं छोड़ कर चला गया लोमड़ी ने अपनी जगह से खिसकना शुरू किया और आहिस्ता आहिस्ता उस गाय की तरफ़ बढ़ी और शेर की पस खूर्दा गाय से अपना पेट भर लिया। सौदागर ने ये माजरा देखकर सोचा के खुदा तआला जब इस क़िस्म की अपाहज लोमड़ी को भी बैठे बिठाए रिज़्क देता है तो फिर मुझ घर से निकल कर दूरदराज़ इस रिज़्क़ के लिए भटकने की क्या हाजत है। मैं भी घर बैठता हूँ। ये सोच कर फिर वापस घर चला आया और बेकार घर बैठ गया। कई दिन गुज़र गए मगर आमदनी की कोई सूरत नज़र ना आई एक दिन घबरा कर बोला। इलाही! अपाहज लोमड़ी को तो रिज़्क़ दे और मुझ कुछ ना दे। ये क्या बात? उसे एक ग़ैबी आवाज़ आई के नादान! तुझे हम ने दो चीज़ें दिखाई थीं। एक मोहताज लोमड़ी जो दूसरों के पस खूर्दा पर नज़र रखती है। और एक शेर जो शिकार करता है। और खुद भी खाता है और दूसरे मोहताजों को भी खिलाता है। ऐ बेवक़ूफ! तूने मोहताज लोमड़ी बनने की तो कोशिश की मगर बहादुर शेर

बनने की कोशिश ना की तुम अपाहज लोमड़ी बन कर घर में आ बैठे हो, शेर क्यों नहीं बनते। ताके खुद भी कमा कर खाओ। और मोहताजों को भी खिलाओ ये सुनकर सौदागर फिर सौदागरी को चल पड़ा। (मसनवी शरीफ)

सबक़:- इंसान को कभी बेकार ना बैठना चाहिए। बल्के उसे चाहिए के जायज़ तौर पर कमा कर अपना गुज़ारा भी करे और मोहताज़ों पर भी खर्च करे।

हिकायत नम्बर (928) इत्तिफाक़

एक बाग़ में तीन आदमी घुसकर फल तोड़ कर खाने लगे। बाग़बान को पता चला तो वो आया। उसने इन तीनों को गौर से देखा तो एक हाकिम शहर का लड़का था। एक क़ाज़ी शहर का लड़का और तीसरा एक कारीगर मिस्त्री का लड़का था बाग़बान ने सोचा के मैं अकेला हूँ और ये तीन हैं। उनसे मुक़ाबला किसी हिकमत से चाहिए चुनाँचे पहले तो मिस्त्री के लड़के से कहा। मरहबा! मरहबा! मेरे नसीब जाग उठे जो आप मेरे बाग़ में तशरीफ़ लाए। जाईये इस कमरे से कुर्सी ले आईये और आराम से बैठ कर फल खाईये मिस्त्री का लड़का कुर्सी लेने के लिए गया तो बाग़बान ने उन दोनों से कहा, जनाब आप दोनों का तो हक़ है के मेरे बाग़ का फल खायें। एक हाकिम दूसरा क़ाज़ी, मगर ये दुनियादार मिस्त्री ये कौन होता है जो आपसे बराबरी करे आप शौक़ से महीना भर यहीं रहिये मगर उसकी तो मैं मरम्मत करके रहूंगा। इस तरह उन दोनों की तारीफ करके मिस्त्री साहब के पीछे गया और कमरे में जाकर उसे खूब मारा और बेहोश कर दिया फिर बाग़ में आया। और क़ाज़ी साहब से कहने लगा। बेवक़ूफ़ ये तो भला हाकिम शहर का दिल बन्द है। हमारा सब कुछ उन्हीं का है मगर तू कौन! जो उनसे बराबरी का दम भरे। फिर उसे मारा और गिरा लिया। अब हाकिम साहब अकेले रह गए। फिर उनकी तरफ़ हुआ और बोला क्यों जनाब जब आप ही यूं डाके मारने लगे तो फिर हमारा अल्लाह ही हाफिज़ है। ये कहकर उसे भी खूब मारा और इस तरह एक एक करके सबसे अपना इन्तिक़ाम ले लिया। (मसनवी शरीफ)

सबक़:- दुश्मन हमेशा तुम्हारे अन्दर फूट डालने की कोशिश करता है, उसकी चाल से ख़बरदार रहो और इत्तिफाक़ को हाथ से ना जाने दो।

हिकायत नम्बर (929) भैंगा

किसी उस्ताद ने अपने एक भैंगे शार्गिर्द से कहा के यहाँ आ। जब वो शार्गिद सामने आया। तो उस्ताद ने कहा के घर से वो आईना उठा ला। भैंगा उसे कहते हैं जिसकी नज़र टेढ़ी हो और जिस एक चीज़ दो नज़र आती हों।

चूं दरून खाना अहवल रफ़त ज़ोद
शीशा पेश चश्म ओ दोमी नमूद

जब भैंगा घर के अन्दर जल्दी से गया तो उसे एक आईना की बजाए दो आईना मालूम हुए।

गुफ़्त अहववल ज़ाँ दो शीशा बीन कदाम पेश तो आरम बगोशर हश तमाम

तब भैंगे ने उस्ताद से कहा साफ साफ बताईये के उन दोनों में से कौन सा आईना मैं आपके पास लाऊँ?

गुफ़्त उस्ताद आँ दो शीशा रू
अहवली बगज़ारो अफ्ज़ूँ बीं मशू

उस्ताद ने कहा के वो दो आईने नहीं हैं। भैंगा पन छोड़ दे और एक को दो मत देखो।

गुफ़्त ऐ उस्ताद मिरा तअना मज़न
गुफ़्त उस्ताज़ आँ दो यक राबिर शिकन

भैंगे शार्गिद ने कहा ऐ उस्ताज़! आप मुझे ताना ना दीजिए। आईना हक़ीक़त में दो ही हैं। मेरे भैंगे पर का क़सूर नहीं है। तो उस्ताद ने का दोनों में से एक को तोड़ डाल। चुनाँचे उसने जाकर तोड़ दिया।

चूं यके ब शिकस्त हर दो शद ज़चश्म
मर्द व अहवल गर्दो अज़ मीलान व चश्म

जब उसने एक आईने को तोड़ दिया तो दोनों उसकी नज़रों से ग़ायब हो गए। उसी तरह आदमी अगरचै बज़ाहिर भैंगा ना हो। लेकिन ख़्वाहिश नफ़्स और गुस्सा उसे भैंगा बना देता है। यहाँ तक के उसे हक़ नज़र नहीं आता।

शीशा यक बोद ब चशमश दो नमूद
चूं शिकस्त आँ शीशा रा दीगर नबूद

आईना एक था मगर उसकी आँख में दो दिखाई दिए जब उसने एक को तो तोड़ दिया, तो दूसरा भी टूट गया। अब भैंगा बहुत डरा और उस्ताद से आकर कहा मैंने आपके फ़रमाने के मुताबिक़ आईना तो एक ही तोड़ा था। मगर दूसरा खुद बखुद टूट गया। उस्ताद ने कहा। कमबख़्त भैंगे! आईने दो नहीं थे लेकिन तेरे भैंगे पन की बदौलत तुझे दो नज़र आए। (मसनवी शरीफ)

सबक़:- जिनकी बातिनी आँख में फतूर और ईमान की आँख में क़सूर और भैंगा पन है। वो हुक्मे खुदा से हुक्मे रसूल को जुदा समझते हैं और जिनको इताअते खुदा और इताअते मुसतफा में अपने भैंगे पन की वजह से तफरीक़ नज़र आती है। उनके हाथ से ना सिर्फ दामने रिसालत ही छूट जाता है बल्के तौहीद भी रूख़सत हो जाती है। चुनाँचे हक़ तआला ने फ़रमाया है *मंय युतीअर्रसूला फक़द अताअल्लाहा* और ये भी मालूम यूं होता है। जैसे वो हमें देख रहा है। हालाँके वो किसी दूसरी तरफ़ देख रहा होता है। इसी

तरह ईमान के भैंगे बज़ाहिर रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को देखते हैं हालाँके उनकी नज़र किसी और ही तरफ़ होती है। खुदा फ़रमाता है: *तराहुम युनज़ुरूना इलेका वहुम ला युबसिरूना।*

हिकायत नम्बर(930) अगर मगर

एक शख़्स को एक अच्छे से मकान की तलाश थी मकान की तलाश में फिर रहा था के एक उसका दोस्त मिल गया। दोस्त ने पूछा क्यों हैरान फिर रहे हो? वो बोला यार एक अच्छे से हवादार मकान की ज़रूरत है वो दोस्त बोला....

के मिरे हमसाये में है इक मकाँ
वस्फ जिसका कर नहीं सकती ज़बाँ!
गरचै वीरान हो गया है और खराब
शहर में उसका नहीं अब भी जवाब
अर्ज़ में और तूल में है बे बदल
और हवादारी में भी है बे मिस्ल!
छत अगर होती बड़े दालान पर
मतबख व दहलीज़ भी होते अगर
होता साबित उसका मर्दाना अगर
गिर ना पड़ता उसका तहखाना अगर
पुश्त की दीवार गिर पड़ती ना गर
गुस्ल खाना शिक़ ना हो जाता अगर
लहलहाते उसमें गुल और यासमीन
खुश्क हो जाता ना गर उसका चमन
उससे बेहतर मेरी राय में मकाँ
कोई हर गिज़ दे ना सकता फिर निशाँ
सुन के सब ये गुफ़्तगू बोला वो यूं
आपकी तकलीफ का ममनून हूँ!
मुशफ़्फिक़ मन चाहिए मुझ को मकाँ
अगर मगर से काम चलता हैं कहाँ

(दरे मंज़ूम तर्जुमा मसनवी)

सबक़:- *अगर मगर कहना नहीं मर्दों का काम!*
काम हैं शर्तों से रहते ना तमाम!
है ये क़ौल ख़ातिम पैग़म्बराँ
लफ़्ज़ ये कम हिम्मत के हैं निशाँ

हिकायत नम्बर(931) सुलतान मेहमूद और अयाज़

एक दिन मेहमूद शाह ग़ज़नवी
कर रहे थे दोस्तों से दिल लगी
पा के मौक़ा इक मसाहिब ने कहा
ग़र्ज़ है इक गर इजाज़त हो श्हा
शह ने फ़रमाया के हाँ बेशक कहो
बेहतरी-ए-ममलिकत गर उसमें हो
ग़र्ज़ है मेरी मसाहिब ने कहा
क्या सबब है ये के शाहे बासफा
हैं अयाज़ खुश लक़ा पर इस क़द्र
मेहरबाँ हैं कौन से उसमें हुनर
बादशाह ने ये कहा उसका जवाब
बरसरे दरबार दूंगा बासवाब
ये कहा इक दिन भरे दरबार में
इम्तिहाँ दो ख़ैर ख़्वाही का हमें
एक मोती बे बहा था शहे के पास
होते हैराँ देख जिसको दूर शनास
लाके डिबिया सामने शहे ने रखी
इक हथोड़ा भी मंगाया आहिनी
सदर-ए-आज़म को बुला के सामने
ये कहा सुलतान फर्रूख नाम ने
इस दर यक्ता की तू क़ीमत लगा!
है ज्यादा लाख से उसने कहा!
फिर कहा शहे ने ना कर कुछ भी खयाल
इक हथोड़ा मार उसको तोड़ डाल!
सुन के ये फ़रमाने सुलतान जहाँ
रह गया साकित वज़ीर नुक्ता दाँ
गिर पड़ा क़दमों पे फौरन शाह के
और लगा कहने निहायत अज्ज़ से
दिल मेरा देता इजाज़त ये नहीं!
तोड़ डालूं मैं जो ये दुर्रे समीं
ख़ैर ख़्वाही और नमक ख़्वारी कहाँ!
माल को शहे के जो पहुँचाऊँ ज़ियाँ

शाह ने उसकी बहुत तारीफ की
एक खुलअत बैश क़ीमत उसको दी
सामने आता गया इक इक अमीर
सबने की बे खोज़ तक़लीद वज़ीर
फिर कहा सुलतान खुश अंजाम ने
ऐ अयाज़ आ तू हमारे सामने!
दस्त बस्ता आके वो हाज़िर हुआ!
दुर्रे यक्ता हाथ में उसके दिया
और पूछा तेरी राय में बता
क़ीमत इस मोती की क्या होगी भला
बोला ये मोती बहुत अनमोल है
ढूंढने से भी नहीं मिलती ये शै
गर कहूं दस लाख वो भी है क़लील
इसके आगे गंज क़ारों है ज़लील
बोला शहे इस पर हथोड़ा इक लगा!
तोड़ कर तू रेज़ा रेज़ा दे बना
हुक्म पाते ही अयाज़ नेक ने!
चूरा मोती का किया इक ज़र्ब से
एक सन्नाटा हुआ दरबार में!
खलबली सी पड़ गई हज़्ज़ारन में!
हर कोई कहने लगा ये क्या क्या!
हक़ किया शहे के नमक का खूब अदा
ये जवाब उसने दिया तुम सब के सब
मुसतहिक़ हो तुम पे हो शहे का ग़ज़ब
शाह को शायाँ है क्या? फ़रमानदही
है हमारा काम क्या? फ़रमाँ बरी
एक मोती के लिए ज़ैबा ना था
मैं ना हुक्म आक़ा का अपने मानता
हीफ तुम ने एक गोहर के लिए
सब वफादारी के जोहर खो दिए
इक मोती क्या अगर हूँ दस हज़ार
शाह के सर पर करूं सब को निसार
हो गए क़ायल जवाब आया ना बन!
यूं लगे कहने है शाहे ज़मन

लुत्फ शहे इस पर जो है बेजा नहीं
ख़ैरख़्वाह उस सा कोई इसला नहीं

सबक़:-

दोस्त होते हैं जहाँ में ऐ अज़ीज़
दो तरह के उनमें दायम कर तमीज़!
एक तो होते हैं दौलत के लिए
गिर्द हैं तेरे वो सरवर के लिए
मक्खियाँ हैं चाहे जितना तू हटा!
पीछा वा हर गिज़ ना छोड़ेंगे तिरा!
माल है जब तक ना जायेंगे कभी
जब गई दौलत ना आयेंगे कभी
दूसरे हैं दोस्त तेरी जान के
प्यार करते हैं तुझे तेरे लिए!
जोहर उनमें हैं मोहब्बत के भरे
खूं पसीना पर गिरायें वो तिरे!

हिकायत नम्बर(932) तवक्कल

थे मदीने में यमन के चन्द मर्द
था तवक्कल में हर एक उनमें से फर्द
सब गए फारूक़ को करने सलाम
आपने पूछा के क्या करते हो काम
बोले वो करते नहीं हम कोई कार
है तवक्कल पर हमारा तो मदार!
सुन के ये फारूक़ ने उनसे कहा
ये भी कोई काम है तारीफ का!
मुफ़्त खोरे क्यों नहीं कहते के हो
बोझ अपना डालते ओरों पे हो
जाँ खपाता है कोई खाते हो तुम
और तवक्कल उसको बतलाते हो तुम!
मैं बताता हूँ तवक्कल क्या है चीज़
कौन करता है तवक्कल ऐ अज़ीज़
है तवक्कल असल में दहक़ान का

है तवक्कल पेशा वो मर्दे खुदा
डाल कर दाना फक़्त उम्मीद पर!
रब पे रखता है नज़र जो साल भर
या तवक्कल है तो उस ताजिर का है!
जो खुदा को सोंप कर लाखों की शै
मोज दरिया पे है कश्ती छोड़ता
बीम तूफाँ से नहीं मुंह मोड़ता!

सबक़:- कार कर मत कर भरोसा कार पर!
कर भरोसा क़िस्मत जब्बार पर! (दरमंज़ूम)

हिकायत नम्बर(933) आदमी की तलाश

हाथ में लकर दिया इक बा सफा
देखता फिरता था मुंह हर एक का
काम था उसका यही बस रारत दिन
दीन व दुनिया की तरफ़ से मुतमईन
कोई भी छोड़ा ना बाज़ार व गली!
जिसमें फिर के जुस्तजू उसने ना की
उसने ये पूछा के ऐ मर्दे खुदा
जुस्तजू करता है किस की तू बता!
बोला मुझ को आदमी की है तलाश!
एक मिल जाए मुझे इंसान काश
ये कहा कायल ने तो आँखें तो मल!
देख है तेरी नज़र में कुछ खलल
पुर है इंसानों से बाज़ार और सरा
गर नहीं इंसान तो फिर हैं ये क्या!
ये कहा उसने के हैं इंसाँ वही
नाम के इंसान तो हैं यूं सभी
खश्मो शहवत बन गए जिसके ग़ुलाम
हाथ में रखता है जो उनकी लगाम
वो जो रखता है उन्हें जूती की मार
उसको समझो तुम बड़ा ही शहशवार!
हर किसी का काम ये हर गिज़ नहीं!

शेर नर की पुश्त पर रखे जो ज़ीन

सबक़:- जिंस इंसाँ की अजब है ख़ासियत
है बहुत भी और कम भी है बहुत
है नबी आदम से पुर सारी ज़मीन
आदमी ढूंडो तो कोई भी नहीं!
यूं तो कहलाते हैं इंसाँ ये सभी
पर नहीं इंसान उनमें एक भी!
यूं तो सब इंसान हैं थोड़े बहुत
वाक़ई इंसान हैं थोड़े बहुत

(दरमंज़ूम)

हिकायत नम्बर(934) गुमराह राहबर

सुबह का था वक़्त और फ़स्ल बहार
तोड़ ली इक ऊँट ने अपनी मुहार
हल्के हल्के एक जानिब को चला!
बाग को अपनी ज़मीन पर खींचता!
एक चूहा देखकर उसका ये हाल
दिल में यूं करने लगा अपने मक़ाल
तुझ को जाने देता हूँ अब मैं कहाँ
थाम लेता हूँ अभी तेरी अनाँ
और लपक कर बाग मुंह में ले शरीर
ऊँट को जब ले चला करके असीर
ऊँट ने भी ये मज़ाक़ उससे किया
बे तकल्लुफ़ उसके पीछे हो लिया!
चलते चलते राह में वो नागहाँ!
देखते क्या हैं के पानी है रवाँ
देखकर पानी गंया चूहा ठिठक
ऊँट का तकता रहा मुंह देर तक
ऊँट ने पूछा बता ऐ राहबर
क्या हुआ क्यों डर गया तू इस क़द्र
ऊँट बोला तू ना डर जाता हूँ मैं
किस क़द्र पानी है बतलाता हूँ मैं

अलग़र्ज़ वो ऊँट पानी में घुसा!
और कहा थोड़ा है पानी आ भी जा!
देख ज़ानो तक मिरे डूबे नहीं
ग़र्क़ हो तो ऐसा मुमकिन है कहीं
बोला चूहा फ़रमाया जनाब
चाहते हो मुझ को करना ग़र्क़ आब
ताबज़ानो आपके पानी जो हो!
मुझ से लाखों को ना देगा क्यों डुबो
ऊँट ये कहने लगा फिर तंज़ से
बस इसी बिरते पे थे रहबर बने!
सबक़:- खुद तो गुमराह हों करें फिर रहबरी
हैं डुबोते ऐसे ही नावें भरी

हिकायत नम्बर(935) फारूके आज़म(र०अ०) और एक चोर

चोरी करते एक दज़्दे बे हया!
अहद में फारूक़ के पकड़ा गया
लाए जब उसको हुज़ूर दीं पनाह
और साबित हो गया उसका गुनाह
इस मुजस्सिम अदल ने फतवा दिया!
हाथ काटो है यही इसकी सज़ा
सुन के ये चिल्ला उठा वो बे शऊर
रहम कीजिए है मिरा पहला क़सूर!
पास वालों ने सिफारिश की बहुत
अफ़्व व रहमत की सताईश की बहुत!
इक ना मानी और कहा फारूक़ ने
हद करो जारी हमारे सामने!
झूट बकता है ये मुझ को है यक़ीं
उसकी ये पहली खता हर गिज़ नहीं
है मिरे रब की ये सत्तारी से दूर
इस ग़नी की है ये ग़फ़्फारी से दूर!
यूं फज़ीहत अपने बन्दे को करे
और तौबा की ना दे मोहलत उसे
सबक़:- देखता है बन्दा टल जाएगा अब

चश्म पोशी बारहा करता है रब!
बाज़ आता ही नहीं जब बे हया!
रूसवा करता है उसे फिर बरमला!

(दरमंज़ूम)

हिकायत नम्बर(936) सांप का चोर

इक सपेरा चौक में बैठा हुआ!
था तमाशा सांप का दिखला रहा!
सांप का बच्चा बहुत था खूबरू
शोख चिकना नर्म नाज़ुक फितना खू!
इक सपेरा दूसरा जो चोर था
फिक्र में उसके उड़ाने की लगा!
चोर बन कर रात को वो आ गया
ले गया झोली वो जिसमें सांप था
सुबह को देखा सपेरे ने जो घर
सांप की झोली ना दाल आई नज़र!
रिज़्क़ का अपने ज़रिये पा के गुम!
ढूंड डाले उसने बंदूक़ और खम
जब ना पाया कुछ पता ज़ंबील का!
अज्ज़ से करने लगा रब से दुआ!
या इलाही कुछ नहीं मुश्किल तुझे!
मेरी जो शै है वो मिल जाए मुझे
इत्तिफाक़न सांप वो खूंख़्वार था
आदमी की शक्ल से बे ज़ार था
मस्त हर हफ़्ते में होता था ज़रूर
काटने में फिर ना करता था क़सूर!
हाथ डाला चोर ने जब सांप पर
ताके देखे अपनी चोर का समर!
इत्तिफाक़न ज़ोर वो मस्ती का था
हाथ काले ने चटक उसका लिया!
काटते ही गिर पड़ा वो मुंह के बल
और तन से जाँ गई फौरन निकल!
जब सपेरे ने सुना दुश्मन का हाल!
ये कहा उसने खुशी से होनिहाल
किस तरह हो शुक्र हक़ मुझ से अदा

नीश मूज़ी से लिया मुझ को बचा!
सबक़:- क्यों नहीं होती दुआ मेरी क़बूल
है तिरा ये ऐत्राज़ अज़ बस फ़िज़ूल!
तुझ को अपनी अक़्ल पर बे जा है नाज़
वो हकीम मतलक़ व दानाऐ राज़!
बख़्शता है शै वही जो हो मुफ़ीद!
चाहे कुछ ही क्यों ना हो अपनी उम्मीद
फ़र्ज़ है अपना उसी से माँगना!
चाहे दे चाहे ना दे उसकी रज़ा

(दरमंज़ूर)

हिकायत नम्बर (937) चार जाहिल

चार जाहिल एक मस्जिद में गए!
अस्र का था वक़्त दी बांग एक ने
बन गया उन चार में से एक इमाम!
हो गए क़ायम जमात पर तमाम!
इतने में मस्जिद का मुल्ला आ गया!
वक़्त की तंगी से घबराया हुआ!
आके फ़ौरन वो लगा देने अज़ाँ
मुक़्तदी इक बोल उठा ओ भाई जाँ
बाँग हो ली अब ना तू तकलीफ़ कर!
आ जमात में हो शामिल बे खत्र
दूसरे ने सुन के ये उससे कहा
क्या नहीं मालूम तुझ को मसला!
बोलने से जाती रहती है नमाज़
चाहिए इसमें ना कुछ ग़ैर अज़ नमाज़!
तीसरे ने सुन के उनकी गुफ़्तगू
यूं कहा ऐ यार क्या जाहिल है तू
तू अजब नादाँ है ऐ खुद पसंद
खुद फ़ज़ीहत और को करता है पंद
उन बुज़ुर्गों के जो थे पेश नमाज़
वो लगे कहने बस्द अज्ज़ो नियाज़
शुक्र हक़ के मैं नहीं बोला ज़रा!
ऐ खुदा! तूने मुझे साबित रखा

सबक़:- और को करनी नसीहत ला कलाम!

उससे आसाँ तर नहीं दुनिया में काम
ऐब अपना देखना आसाँ नहीं
देखते हैं अपने ऐब अहले यक़ीन

(दरमंज़ूम)

हिकायत नम्बर (938) जानवरों की बोलियाँ

इक जवाँ था नेक बख़्त और नेक काम
खिदमत मूसा में रहता था मदाम
देखकर हज़रत को इक दिन खुश बहुत
अर्ज़ की यूं ऐ शफीअ आख़िरत
एक अर्सा से तमन्ना है कमाल!
मैं भी हैवानों की सीखूं बोल चाल
हज़रत मूसा ने टाला बारहा
और क़ायल भी दलाल से किया!
जिस क़द्र इंकार होता था यहाँ
इस क़द्र इसरार बढ़ता था वहाँ
रब से मूसा ने जो पूछा तो कहा!
रद्द नहीं करते किसी की हम दुआ
अक़्ल उसको हम ने दी और इख़्तियार
अपने फ़ैलों का ये खुद है ज़िम्मेदार
आख़िर मूसा ने ले अल्लाह का नाम
उसको हैवानों के बताऐ कलाम
दूसरे दिन खा के खाना शाम का
सहन में मैदान के फिरने लगा!
एक कुत्ता और मुर्ग खांगी!
सहन में थे, खादिमा भी आ गई
खादिमा ने आके दस्तरख़्वान जब
उस जगह झाड़ा तो मुर्ग़ बे अदब
गोश्त की बोटी उठा कर ले गया!
रह गया मुंह उसका कुत्ता देखता!
बोला कुत्ता, ज़ुल्म तूने क्यों किया!
गोश्त की बोटी मेरा क्या हक़ ना था
दाना दिंके हैं तिरा हक़ ला कलाम
हड्डी और बोटी से क्या है तुझ को काम
सब्र कर तू मुर्ग बोला एक रात
मरना कल बैल के लाश पर हात

कल मरेगा बैल आक़ा का ज़रूर
था मैं भूका हो गया मुझ से क़सूर
मुर्ग़ से सुनकर खर अय्यार ने
बैल उसी दम बेच के पैसे लिए
दूसरे दिन फिर ये कुत्ते ने कहा
यार है कुछ झूट में भी फायदा
मुर्ग़ बोला झूट की आदत मुझे
है नहीं यू खूब रोशन है तुझे
दी बला आक़ा ने सर से अपने टाल
ग़ैर पे डाला जो था अपना वबाल!
याद रखना ये मगर कल बिलयक़ीं
ख़ैर बिलकुल उसके घोड़े की नहीं
खोला घोड़े को सुनी जब ये ख़बर
वापस आया फ़ौरन उसको बेच कर!
कुत्ता बोला अब ना दीजिए दम हमें
शक नहीं बिलकुल तुम्हारे झूट में
मुर्ग़ बोला, अहमक़ी आक़ा ने की!
आई अपनी ग़ैर के सर डाल दी!
जाके घोड़ा मुश्तरी के घर मरा
ये मगर उसने ना कुछ अच्छा किया!
बैल और घोड़ा अगर मरते यहाँ
फिदया होते उसकी जाँ के बे गुमाँ
जान का अब है ज़ियाँ ऐ पुर हुनर
कर यक़ीं कल आक़ा खुद जाएगा मर
नान व हलवा जाएगा मईयत के साथ
मेरे और तेरे लगे गा खूब हाथ
अक़्ल ये सुन के जवाँ की उड़ गई!
गिड़गिड़ा के अर्ज़ यूं मूसा से की!
आप फ़रमाने लगे ऐ रम्ज़ बीं
याद रख आई क़ज़ा टलती नहीं
अब तुझे जो सूझता है सामने
देखता था मैं पस दीवार से!
दूसरे दिन मर गया खुद वो जवाँ
मौत ने पीछा ना छोड़ा बे गुमाँ
सबक़:- हो मुसीबत तुझ पर नाज़िल कोई गर!
माल का नुक़्सान हो कुछ ग़म ना कर!

फिदया उसको जान अपनी जान का!
आप तूने हाथ से गोया दिया
(दरमंज़ूम)

हिकायत नम्बर(939) चालाक औरत

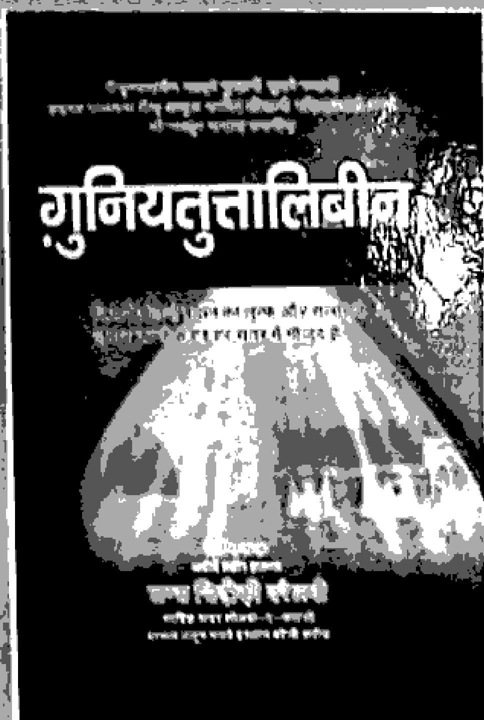
था मजर्रिद और बूढ़ा एक मर्द
आज़मूदा था जहाँ के गर्म सर्द
चैन से रहता था वो सुबह व मसा!
आई कम बख़्ती निकाह इक जा किया!
बीवी जो आई बड़ी चालाक थी
बद रवय्या बे हया बे बाक थी
चाटने खाने से उसको काम था
और यही काम उसका सुबह व शाम था
एक दिन मेहमान आया उनके घर
उसकी ख़ातिर गोश्त आया सैर भर
भूनती जाती थी जब के देगची!
बोटी इक इक चुन के औरत खा गई
देखकर हांडी को खाली ये किया!
लाई बाहर से मियाँ को वो बुला!
और कहा तुम को ना आएगा यक़ीं!
है मगर सच झूट ज़र्रा भर नहीं
इस निगोड़ी बिल्ली को तुम देखना!
बैठी है क्या भोला भाला मुंह बना
भूनती थी मैं मसाला गोश्त का
गोश्त था इक तास में रखा हुआ
मैं लगी चखने मसाले का नमक!
गोश्त सारा कर गई चट बे धड़क
कुछ ना बोला मर्दे साहिबे दिल मगर!
जाके ले आया तराज़ू दोड़ कर!
पलड़ा में बिल्ली को रखा की ना देर
वज़न में वो पूरी निकली एक सैर
मर्द बोला अब बता ऐ बे हया
वज़न है बिल्ली का ये या गोश्त का!
गोश्त है गर ये तो बिल्ली है कहाँ
है जो बिल्ली गोश्त का फिर दे निशाँ

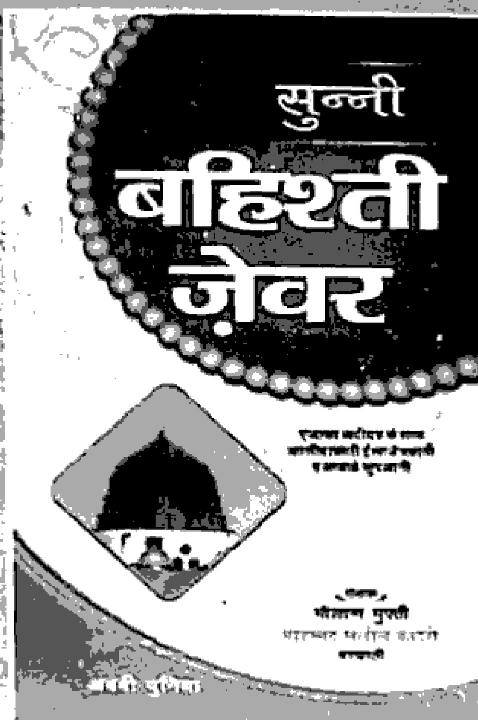
सबक़:- नाव कागज़ की कभी बहती नहीं
काट कर हंडिया सदा रहती नहीं
झूट में नुक़्साँ है सच में फायदा
याद रख है आम ये इक क़ायदा
मसलेहत का क़ौल है बिलकुल ग़लत
अहले दुनिया की बनावट है ग़लत
(दरमंज़ूम)

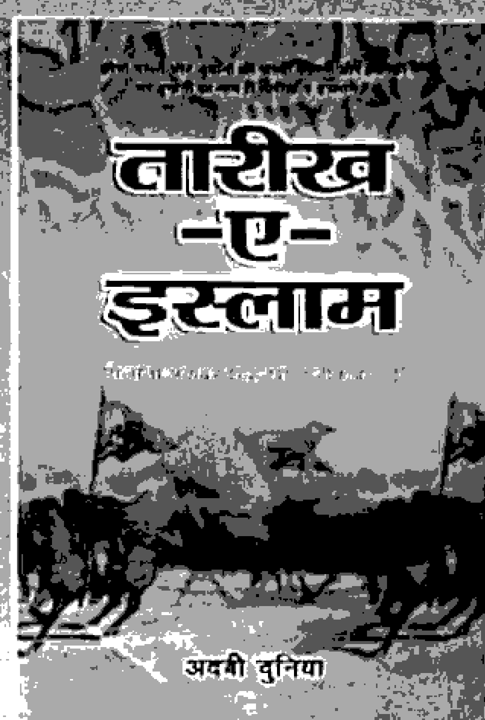
हिकायत नम्बर (940) हसद व रश्क़

एक हासिद ने कहीं मेहमूद पास
जाके चुग़ली की के ये तेरा अयास
बावफा हर गिज़ नहीं मक्कार है
उससे रहना बा ख़बर ग़द्दार है
ज़ाहिरन करता है जाँ तुझ पर फिदा
बातिनन उसको नहीं उल्फत ज़रा!
है उसी धुन में वो हर शाम व सहर
किस तरह हासिल करूं मैं सीम व ज़र
सिम्त शिर्क़ी में जो हुजरा है फलाँ
शब को जाता है बिला नाग़ा वहाँ
हुजरा देखोगे ना इक दम भी खुला
उसको रखता है मुक़फ़्फ़िल ये सदा
हो प्यारा उसका कैसा ही कोई!
उसको ले जाता नहीं अन्दर कभी
दिल को है मेरे यक़ीं ये नासिपास
जमा रखता है ख़ज़ाना बे क़यास
बादशाह ये सुनकर हैराँ रह गया!
हुक्म इक सरदार को फौरन दिया!
जा अभी और क़ुफ़्ल हुजरा तोड़ के
माल उठा ला जो वहाँ तुझ को मिले!
वो गया और हुक्म की तामील की!
शाह के आगे लाके गठरी वो रखी
इतने में दरबार के अरकार सब

आ गए थे मुल्क के अयान सब
बादशाह ने क़िस्सा कुल करके बयाँ
ये कहा खोलो जो है इसमें निहाँ
खोली गठरी देखते हैं उसमें क्या
घास की पापोश कम्बल की क़ुबा!
थीं पुरानी जूतियाँ टूटी हुई
और क़ुबा पर तेह चढ़ी थी मैल की
शाह ने फ़रमया के ऐ महर जहाँ
हैं ये चीज़ें क्या तू कर उनका बयाँ
दस्त बस्ता अर्ज़ की उसने श्हा
थी यही पोशाक जब घर से चला!
देखता हूँ उसको हर रोज़ एक बार
ता ना भूलूं अपना मैं असल व तबार
मेहरबानी शाह की उनको देखकर!
सौ गुनी आती है आँखों में नज़र!
रह गए जितने थे हासिद सुन के सुन!
चुप हुए मुंह से ना निकला कुछ सुख़्न
सबक़:- जा व इज़्ज़त दूसरे की देखकर
दिल में आए कुछ तिरे ग़ैरत अगर
तू भी उसको देखकर कोशिश करे
ताके उस सा साहिबे इज़्ज़त बने
रश्क है ये ये नहीं आदत बुरी
रश्क करने में ना कर हर गिज़ कमी!
गर तू चाहे उसकी नअेमत का ज़वाल
ये हसद है उसको तो दिल से निकाल
ये बुरी आदत है उसको तर्क कर
कर दिए बर्बाद उसने घर के घर!
मर्तबा महसूद का होगा फज़ूं
बेशक अंजाम हसद होगा ज़बूं
कुछ ना उसमें हाथ तेरे आएगा!
नेकियाँ तेरी हसद खा जाएगा

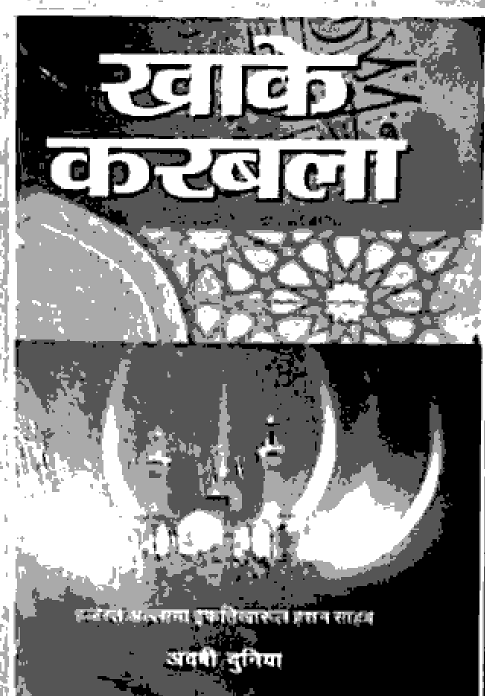

ग़ुनियतुत्तालिबीन

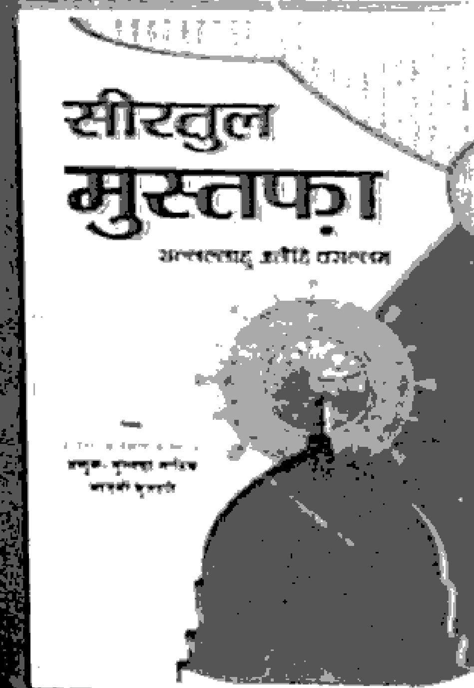

सुन्नी
बहिश्ती
ज़ेवर
अदबी दुनिया


तारीख़
-ए-
इस्लाम
अदबी दुनिया

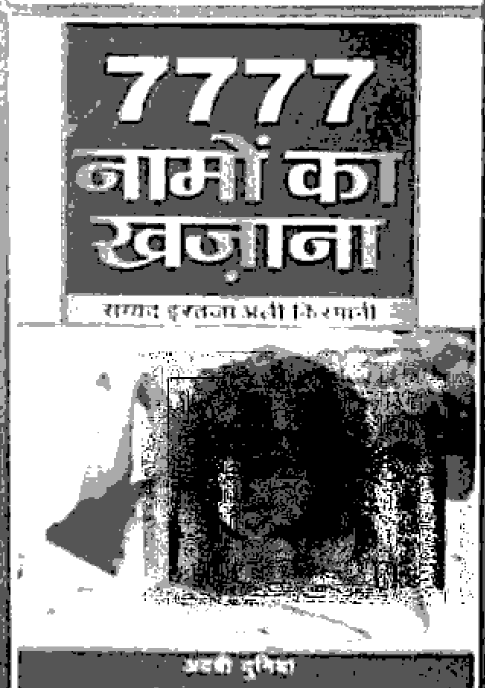

2
अदबी दुनिया




ख़ाके
करबला
अदबी दुनिया


सीरतुल
मुस्तफ़ा


ख़्वाब नामा
अदबी दुनिया


7777
नामों का
ख़ज़ाना
सय्यद इरतज़ा अली किरमानी
अदबी दुनिया